Semester – I: THEORY

Paper Name

Paper-3

ASSESSMENT OF CHILDREN WITH DEVELOPMENTAL DISABILITIES

Unit 1

Concept of assessment

Unit-1.1

Definition and meaning of screening, assessment, evaluation, testing and measurement -स्क्रीनिंग,आकलन, मूल्यांकन, परीक्षण और माप की परिभाषा और अर्थ।

Assessment (आकलन) :– आकलन का आशय है सूचनाओं को एकत्रित करने की प्रक्रिया के द्वारा विद्यार्थियों के संदर्भ में किसी विषय के बारे में निर्णय प्रदान करना (Assessment) कहलाता है । आकलन की प्रक्रिया में प्रदत्त कार्य प्रदर्शन परीक्षण (Assignment Performance Test) का प्रयोग किया जा सकता है । आकलन में छात्रों को बिना अंक अथवा ग्रेडिंग के फीडबैक दिया जाता है ताकि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में अंतिम मूल्यांकन के पूर्व सुधार संभव हो सके ।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

आकलन की परिभाषाएँ :–

हुबा एवं फ्रीड के अनुसार :– " आकलन सूचना संग्रहण तथा उस पर विचार विमर्श की प्रक्रिया है , जिन्हें हम विभिन्न माध्यमों से प्राप्त कर ये समझा सकते हैं कि विद्यार्थी क्या जानता है , समझता है , अपने शैक्षिक अनुभवों से प्राप्त ज्ञान को परिणाम के रूप में व्यक्त कर सकता है जिसके द्वारा छात्र अधिगम में वृद्धि होती है ।"

" **इरविन के अनुसार :–** " आकलन छात्रों के अधिगम एवं विकास का व्यवस्थित आधार का अनुमान है । यह किसी भी वस्तु को परिभाषित कर चयन , रचना , संग्रहण , विश्लेषण , व्याख्या तथा सूचनाओं का उपयुक्त प्रयोग कर छात्र विकास तथा अधिगम को बढ़ाने की प्रक्रिया है । "

मापन का आशय (Meaning of Measurement) : मापन में विभिन्न पक्षों के संबंध में साक्ष्य एकत्रित किये जाते हैं । मापन प्रक्रिया में उपलब्धि को ' संख्यात्मक ' रूप में निरूपित किया जाता है ।

उदाहरण के लिए मोहन की लम्बाई 155 सेमी . है , अनीता का भार 48 किग्रा है , आकाश की बुद्धिलब्धि (I-Q-) 135 हैं , रोहन को गणित में 90 अंक प्राप्त हुए हैं ।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मापन एक औपचारिक प्रक्रिया है , जिसमें वस्तु या विशेषता कितनी मात्रा में है , दर्शाया जा सकता है । जब शिक्षक छात्रों की उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करता है , तो अंक प्रदान करता है यह छात्रों की उपलब्धि को दर्शाता है कि छात्रों को कितने अच्छे अंक प्राप्त हुए हैं।

मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Evaluation) – शिक्षण प्रक्रिया का प्रारम्भिक बिंदु शिक्षण उद्देश्य होता है । जब तक शिक्षण के उद्देश्य निश्चित नहीं हो जाये , तब शिक्षण की दिशा भी अनिश्चित रहती है । शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु ही शिक्षक ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है , जिनसे बालक में वांछित व्यावहारिक परिवर्तन (Desirable Behavioural Change) आ सके । मूल्यांकन (Feed back) पृष्ठ पोषण देने का भी कार्य करता है जिससे शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया , शिक्षण विधि एवं पाठ्य वस्तु के स्तर में सुधार लाने का भी प्रयास करता है ।

दूसरे शब्दों में मूल्यांकन व्यवहार परिवर्तनों को एकत्रित करने की प्रणाली है जिसके द्वारा इन परिवर्तनों की दिशाओं और सीमाओं का निर्णय लिया जाता है । यह शिक्षा जगत में शैक्षिक उपलब्धियों को जानने का अपेक्षाकृत नवीन प्रत्यय है ।

मूल्यांकन की परिभाषाएँ (Definitions of Evaluation) :–

NCERT के अनुसार – " मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त हुए । कक्षा में दिये गये अधिगम अनुभव कहाँ तक प्रभावोत्पादक रहे है , और कहाँ तक शिक्षा के उद्देश्य पूर्ण किये गये है । " According to NCERT – Þ Evaluation is the process of determining the extent to which an objective is being attained the effectiveness of the learning 8 experiences provided in the class room - How will the goals of education have been accomplished .

क्यूलिन तथा हन्ना के अनुसारः– " विद्यालय द्वारा हुए समस्त छात्रों के व्यवहार परिवर्तन के विषय में साक्षियों का संकलन तथा उनकी व्याख्या ही मूल्यांकन है । "

विभेदन और जांच (Screening And Testing) :–जांच के द्वारा उन बच्चों की पहचान की जाती है, जिसमें विकलांगता की संभावना होती है यह वह प्रविधि है जिसमें ऐसे व्यक्तियों की पहचान की जाती है जिनमें विकलांगता के निदान हेतु अतिरिक्त जांच की आवश्यकता होती है, परंतु इसके द्वारा किसी व्यक्ति को विकलांग साबित नहीं किया जा सकता है। यह सिर्फ बड़ी संख्या में से विकलांगता की संभावना वाली छोटी संख्या की पहचान कराती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि "जांच वह प्रक्रिया है जिसमें पूरी आबादी का आकलन कर ऐसे व्यक्तियों की पहचान की जाती है जिनके विकास की प्रक्रिया में थोड़ा हस्तक्षेप करना लाभदायी हो सकता है।"

दूसरे शब्दों में जांच की क्रिया में एक आबादी में ऐसे व्यक्तियों को ढूंढा जाता है। जिनके विकास में कुछ हस्तक्षेप लाभदायक होता है।जांच वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा विकासात्मक अवस्था में देरी या विकलांगता को सही ढंग से वर्गीकरण किया जाता हैं।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

जांच एवं विभेदन वह विधि है जिससे शीघ्र पहचान एक विस्तृत माप के अन्तर्गत किया जा सकता है । इससे शीघ्र हस्तक्षेप के द्वारा बच्चे की आवश्यकता की शीघ्र पहचान प्राथमिक चरण में ही हो जाती है,चाहे वह किसी भी सन्दर्भ में हो, बीमारी , कोई समस्या अथवा विकलांगता ।

स्क्रीनिग प्रक्रिया के द्वारा पूर्ण रूप से यह नहीं कहा जा सकता है, कि यह विकलांग है परंतु यह आकलन के लिए सहायक भूमिका निभाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति में विकलांगता की संभावना को स्क्रीनिंग द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।

परिभाषा :–

विलियम पी. (1991) के अनुसार :– '' स्क्रीनिग एक समग्र जनसंख्या में उन व्यक्तियों की पहचान करता है जिनको विकासात्मक अवस्था में हस्तक्षेप से लाभ प्राप्त हो सकता है।

मापन का आशय (Meaning of Measurement) : मापन में विभिन्न पक्षों के संबंध में साक्ष्य एकत्रित किये जाते हैं । मापन प्रक्रिया में उपलब्धि को ' संख्यात्मक ' रूप में निरूपित किया जाता है ।

उदाहरण के लिए मोहन की लम्बाई 155 सेमी . है , अनीता का भार 48 किग्रा है , आकाश की बुद्धिलब्धि (1.फ.) 135 हैं , रोहन को गणित में 90 अंक प्राप्त हुए हैं । दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मापन एक औपचारिक प्रक्रिया है , जिसमें वस्तु या विशेषता कितनी मात्रा में है , दर्शाया जा सकता है । जब शिक्षक छात्रों की उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करता है , तो अंक प्रदान करता है यह छात्रों की उपलब्धि को दर्शाता है कि छात्रों को कितने अच्छे अंक प्राप्त हुए हैं ?

मापन की परिभाषाएँ (Definitions of Measurement):–

एस . एस . स्टीवेन्स के अनुसार : – '' मापन किन्हीं निश्चित स्वीकृत नियमों के अनुसार वस्तुओं को – अंक प्रदान करने की प्रक्रिया है । ''

ब्रेडफील्ड एवं मोरेडॉक के अनुसारः– '' किसी तथ्य के विभिन्न आयामों को प्रतीक प्रदान करना – ही मापन कहलाता है ।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

Unit :–1.2

Assessment for diagnosis and certification – intellectual assessment, achievement, aptitude and other psychological assessments- निदान और प्रमाणन के लिए मूल्यांकन – बौद्धिक मूल्यांकन, उपलब्धि,योग्यता और अन्य मनोवैज्ञानिक आकलन।

आकलन निर्णय लेने के उद्देश्य से डेटा एकत्र करने की एक प्रक्रिया है। मूल्यांकन हमें हस्तक्षेप के लिए आधारभूत जानकारी प्रदान करता है, जबकि मूल्यांकन एक हस्तक्षेप के परिणाम का आकलन है। नैदानिक अभ्यास में, इसलिए, हमें मूल्यांकन की विधियों की आवश्यकता होती है। मूल्यांकन का उद्देश्य इस प्रकार है:

- विशिष्ट मानदंडों के आधार पर स्थिति की पहचान करने के लिए और यह स्थापित करने के लिए कि यह एक नैदानिक इकाई है जिसे उचित मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं और प्लेसमेंट निर्णयों की आवश्यकता होती है ।
- जोखिम कारकों की पहचान करना और उनका इलाज करना। स्थिति से जुड़ी जरूरतों की पहचान करना और विकलांगता प्रभाव को कम करने के लिए एक कार्यक्रम योजना तैयार करना। उपलब्ध सर्वोत्तम हस्तक्षेप विधियों के साथ प्रभावी ढंग से परिस्थितियों की प्रकृति और जरूरतों का मिलान करना।

मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन या मनोवैज्ञानिक परीक्षण किसी व्यक्ति के व्यवहार का मूल्यांकन करने के लिए गठित मौखिक या लिखित परीक्षण हैं। कई प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण लोगों को मनुष्य की विभिन्न गतिशीलता को समझने में मदद करते हैं। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि क्यों कोई किसी चीज में अच्छा है, जबकि दूसरा दूसरे में अच्छा है। हालाँकि, मनुष्य जटिल प्राणी हैं जिन्हें कुछ शाखाओं के तहत परिभाषित और वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है। मनुष्यों की व्यक्तिपरक प्रकृति और व्यक्तिगत मतभेदों ने मनोवैज्ञानिक परीक्षण में अक्सर आलोचना की है।

मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के प्रकारों का वर्गीकरण इस प्रकार है:

- परीक्षण की मानकीकृत और गैर–परीक्षण पद्धति के संदर्भ में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की प्रकृति के अनुसार

- मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के कार्यों के अनुसार जैसे कि बुद्धि परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, रुचि सूची, योग्यता परीक्षण, आदि।

बीसवीं सदी में बौद्धिक मूल्यांकन में काफी बदलाव आया है। यह भाषा और भाषण पैटर्न के आधार पर आकलन से संवेदी भेदभाव में स्थानांतरित हो गया है, जिसमें अधिकांश प्रारंभिक आकलन मानसिक रूप से कमजोर हैं। धीरे–धीरे, मूल्यांकन उपकरण 1990 के दशक में उपयोग किए जाने वाले मानकीकृत उपकरणों के अग्रदूतों में विकसित हुए, जो संज्ञानात्मक क्षमता के सभी स्तरों के लिए अधिक जटिल संज्ञानात्मक कार्यों को मापते हैं। परीक्षण विकास की प्रगति में, वेक्स्लर के सापेक्ष विकल्प अधिक सिद्धांत–आधारित रहे हैं। ऐसा लगता है कि 1990 के दशक में परीक्षण विकास की दिशा केवल विशुद्ध रूप से चिकित्सकीय रूप से संचालित होने के बजाय, बुद्धि परीक्षणों के आधार पर सिद्धांत की ओर ले जाने के लिए जारी है। साइकोमेट्रिक सिद्धांत और स्नायविक सिद्धांत नए उपकरणों के आधार के रूप में विकसित हो रहे हैं। हालांकि, नए सिद्धांत–संचालित परीक्षणों के इस प्रसार के बावजूद, एक निश्चित रूढ़िवाद है जो अतीत पर कायम है, वेक्स्लर परीक्षणों को वास्तव में प्रतिद्वंद्वी होने देने के लिए अनिच्छुक है।

क्योंकि वेक्स्लर परीक्षण इतने लंबे समय से सर्वोच्च शासन कर रहे हैं, वेक्स्लर पैमानों का उपयोग करते हुए शोध अध्ययनों का एक पहाड़ रहा है। इस प्रकार, चिकित्सकों के पास यह समझने के लिए एक अच्छा अनुभवजन्य आधार है कि एक विशिष्ट वेक्स्लर प्रोफाइल क्या संकेत दे सकता है। चिकित्सकीय रूप से, मनोवैज्ञानिक भी काफी सहज हैं और वेक्स्लर पैमानों से परिचित हैं। भविष्य में खुफिया आकलन के लिए तकनीकी रूप से उन्नत उपकरणों की अधिक प्रगति शामिल होने की संभावना है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

बुद्धि परीक्षण के प्रमुख प्रकार यहां दिए गए हैं :–

- Wechsler Individual Achievement Test
- Woodcock Johnson III Tests of Cognitive Disabilities
- Wechsler Adult Intelligence Scale
- Stanford & Binet Intelligence Scale
- Peabody Individual Achievement Test
- Universal Nonverbal Intelligence
- Differential Ability Scales

Achievement Test **(उपलब्धि परीक्षण)**:–कुछ शैक्षणिक क्षेत्रों में परीक्षार्थी के ज्ञान का आकलन करने के लिए उपलब्धि परीक्षण का उपयोग किया जाता है। उपलब्धि शब्द को ध्यान में रखते हुए, इस प्रकार के परीक्षण माप ठीक यही हैं। एक उपलब्धि परीक्षण एक छात्र की उपलब्धि या सामग्री, कौशल या सामान्य शैक्षणिक ज्ञान की महारत को मापेगा। एक उपलब्धि परीक्षण यह मापता है कि किसी व्यक्ति ने समय के साथ कैसे सीखा है और व्यक्ति ने अपने वर्तमान प्रदर्शन का

विश्लेषण करके क्या सीखा है। यह भी मापता है कि एक व्यक्ति कैसे वर्तमान समय में एक विशेष ज्ञान क्षेत्र को समझता है और उसमें महारत हासिल करता है। इस परीक्षण के साथ, आप विश्लेषण कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति उन कार्यों को करने में कितना तेज और सटीक है, जिन्हें वे एक उपलब्धि मानते हैं। किसी व्यक्ति के अकादमिक प्रदर्शन का विश्लेषण और मूल्यांकन करने के लिए एक उपलब्धि परीक्षण एक उत्कृष्ट विकल्प है।

उदाहरण के लिए, प्रत्येक स्कूल को अपने छात्रों से विभिन्न विषयों में अपनी दक्षता दिखाने की आवश्यकता होती है। ज्यादातर मामलों में, छात्रों से अगली कक्षा में जाने के लिए कुछ हद तक उत्तीर्ण होने की उम्मीद की जाती है। एक उपलब्धि परीक्षण इन छात्रों के प्रदर्शन को रिकॉर्ड और मूल्यांकन करेगा ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि वे मानक के खिलाफ कितना अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। एक उपलब्धि परीक्षण का प्राथमिक उद्देश्य किसी व्यक्ति का मूल्यांकन करना है। एक उपलब्धि परीक्षण हालांकि एक कार्य योजना शुरू कर सकता है। एक व्यक्ति को एक उच्च उपलब्धि स्कोर मिल सकता है जो दर्शाता है कि व्यक्ति ने उच्च स्तर की महारत दिखाई है और एक उन्नत स्तर की शिक्षा के लिए तैयार है। दूसरी ओर, एक कम उपलब्धि स्कोर यह संकेत दे सकता है कि ऐसे संबंधित क्षेत्र हैं जिनमें किसी व्यक्ति को सुधार करना चाहिए, या किसी विशेष विषय को दोहराया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक छात्र उपलब्धि परीक्षण के परिणाम के कारण अध्ययन योजना शुरू करने का निर्णय ले सकता है। तो यह सुधार करने के लिए एक प्रेरणा या उच्च स्तर पर आगे बढ़ने के लिए एक संकेतक के रूप में काम कर सकता है। शैक्षिक क्षेत्र और व्यावसायिक क्षेत्र दोनों में उपलब्धि परीक्षण का उपयोग किया जाता है।

योग्यता परीक्षण :– परीक्षा जो भविष्य के प्रशिक्षण के माध्यम से, कुछ विशिष्ट कौशल (बौद्धिक, मोटर, और इसी तरह) हासिल करने की क्षमता को निर्धारित करने और मापने का प्रयास करती है। परीक्षण मानते हैं कि लोग अपनी विशेष क्षमताओं में भिन्न हैं और ये अंतर भविष्य की उपलब्धियों की भविष्यवाणी करने में उपयोगी हो सकते हैं। सामान्य, या एकाधिक, योग्यता परीक्षण बुद्धि परीक्षणों के समान होते हैं जिसमें वे क्षमताओं के व्यापक स्पेक्ट्रम को मापते हैं। (उदाहरण के लिए, मौखिक समझ, सामान्य तर्क, संख्यात्मक संचालन, अवधारणात्मक गति, या यांत्रिक ज्ञान)।

Personality Tests	16 Personality Factor Questionnaire (16-PF), Basic Personality Inventory (BPI), Thematic Apperception Test (TAT), Rorschach Test
Achievement Tests	Kaufman Test of Education Achievement (K-TEA), Wechlar Individual Assessment Test, Woodcock-Johnson Psychoeduca Battery (Achievement)
Attitude Tests	Likert Scale, Thurstone Scale, etc.

Notes For Essum

Aptitude Tests	Abstract Reasoning Test, Visual Reasoning Test, etc.
Emotional Intelligence Tests	Emotional & Social Competence Inventory, Mayer-Salovey-Caruso EI Test (MSCEIT), etc.
Intelligence Tests	Wechsler Individual Achievement Test, Wechsler Adult Intelligence Scale, Universal Nonverbal Intelligence
Neuropsychological Tests	Ammons Quick Test, Beck Depression Inventory, Anxiety Inventory, and Hopelessness Scale
Projective Tests	Rorschach Inkblot Test, Thematic Apperception Test (TAT), Draw-A-Person Test, House-Tree-Person Test
Observation (Direct) Tests	Direct Observation

Notes For Pyssum

Unit :– 1.3

Developmental assessment and educational assessment – entry level, formative and summative assessments विकासात्मक मूल्यांकन और शैक्षिक मूल्यांकन – प्रवेश स्तर, प्रारंभिक और योगात्मक मूल्यांकन

EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

प्रवेश स्तर का आकलन :– प्रवेश स्तर के छात्रों की शैक्षणिक साक्षरता का आकलनः क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उच्च शिक्षा में, आने वाले छात्रों की पढ़ने और लिखने की विशिष्ट मांगों का सामना करने के लिए उनकी तैयारी का आकलन करने की आवश्यकता है, जो उनके अध्ययन के वांछित स्थान की भाषा–निर्देशन में सामना करना पड़ेगा (लगभग) सामान्य कारण है। सामान्य अर्थों में पढ़ने और लिखने की मांगों का सामना करने की यह तत्परता अकादमिक साक्षरता की धारणाओं के केंद्र में है। 'अकादमिक साक्षरता' कम से कम, यह सुझाव देती है कि प्रवेश स्तर के छात्रों के पास कुछ बुनियादी समझ होती है– या समझने की क्षमता होती है– अर्थ और तर्क के लिए पढ़ने का क्या अर्थ है; पाठ की संरचना और संगठन पर ध्यान देनाय सक्रिय और आलोचनात्मक पाठक बननाय और तार्किक संगठन, सुसंगतता और अभिव्यक्ति की सटीकता की विशेषता वाले अकादमिक कार्यों के लिए लिखित प्रतिक्रिया तैयार करना।

रचनात्मक मूल्यांकन (formative Assessment) :– शिक्षण प्रक्रिया के दौरान, सीखने के दौरान रचनात्मक मूल्यांकन प्रतिक्रिया और जानकारी प्रदान करता है। रचनात्मक मूल्यांकन छात्र की प्रगति को मापता है लेकिन यह एक प्रशिक्षक के रूप में आपकी खुद की प्रगति का आकलन भी कर सकता है।

उदाहरण के लिए, कक्षा में एक नई गतिविधि को लागू करते समय, आप अवलोकन या छात्रों का सर्वेक्षण करके यह निर्धारित कर सकते हैं कि गतिविधि का फिर से उपयोग किया जाना चाहिए या नहीं (या संशोधित)। रचनात्मक मूल्यांकन का प्राथमिक फोकस उन क्षेत्रों की पहचान करना है जिनमें सुधार की आवश्यकता हो सकती है। ये आकलन आम तौर पर वर्गीकृत नहीं होते हैं और छात्रों की सीखने की प्रगति के लिए एक गेज के रूप में कार्य करते हैं और शिक्षण प्रभावशीलता (उपयुक्त विधियों और गतिविधियों को लागू करने) को निर्धारित करने के लिए कार्य करते हैं।

रचनात्मक आकलन के प्रकार :–

- कक्षा में गतिविधियों के दौरान अवलोकन
- व्याख्यान के दौरान छात्रों की गैर–मौखिक प्रतिक्रिया
- परीक्षा और कक्षा चर्चा के लिए समीक्षा के रूप में होमवर्क अभ्यास)
- सेमेस्टर के दौरान समय–समय पर समीक्षा की जाने वाली प्रतिबिंब पत्रिकाएं
- प्रश्न और उत्तर सत्र, दोनों औपचारिक–नियोजित और अनौपचारिक–सहज
- प्रशिक्षक और छात्र के बीच सम्मेलन सेमेस्टर में विभिन्न बिंदुओं पर
- इन–क्लास गतिविधियाँ जहाँ छात्र अनौपचारिक रूप से अपने परिणाम प्रस्तुत करते हैं
- निर्देश के बारे में विशिष्ट प्रश्न का समय–समय पर उत्तर देकर और उनके प्रदर्शन और प्रगति का स्व–मूल्यांकन करके छात्रों की प्रतिक्रिया एकत्र की जाती है।

अधिक विशेष रूप से, रचनात्मक आकलनः–

- छात्रों को उनकी ताकत और कमजोरियों की पहचान करने और काम की आवश्यकता वाले क्षेत्रों को लक्षित करने में मदद करें।
- संकाय को यह पहचानने में मदद करें कि छात्र कहां संघर्ष कर रहे हैं और तुरंत समस्याओं का समाधान करें प्रारंभिक मूल्यांकन आम तौर पर कम दांव होते हैं, जिसका अर्थ है कि उनके पास कम या कोई बिंदु मूल्य नहीं है।

रचनात्मक आकलन के उदाहरणों में छात्रों से निम्नलिखित के लिए पूछना शामिल हैः

- किसी विषय की उनकी समझ का प्रतिनिधित्व करने के लिए कक्षा में एक अवधारणा मानचित्र तैयार करे।
- एक व्याख्यान के मुख्य बिंदु की पहचान करने वाले एक या दो वाक्य प्रस्तुत करें।
- प्रारंभिक प्रतिक्रिया के लिए एक शोध प्रस्ताव को चालू करें ।

(Summative Assessments) योगात्मक आकलन :– समय–समय पर यह निर्धारित करने के लिए योगात्मक आकलन दिया जाता है कि छात्र क्या जानते हैं और क्या नहीं। कई योगात्मक आकलनों को केवल राज्य के आकलन जैसे मानकीकृत परीक्षणों के साथ जोड़ते हैं, लेकिन उनका उपयोग जिला और कक्षा कार्यक्रमों में भी किया जाता है और एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जिला और कक्षा स्तर पर योगात्मक मूल्यांकन एक जवाबदेही उपाय है जिसे आमतौर पर ग्रेडिंग प्रक्रिया के भाग के रूप में उपयोग किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन अधिक उत्पाद–उन्मुख है और अंतिम उत्पाद का आकलन करता है, जबकि रचनात्मक मूल्यांकन उत्पाद को पूरा करने की प्रक्रिया पर केंद्रित है। एक बार परियोजना पूरी हो जाने के बाद, कोई और संशोधन नहीं किया जा सकता है। यदि, हालांकि, छात्रों को संशोधन करने की अनुमति दी जाती है, तो मूल्यांकन रचनात्मक हो जाता है, जहां छात्र सुधार के अवसर का लाभ उठा सकते हैं।

योगात्मक मूल्यांकन के प्रकार :–

- परीक्षा (प्रमुख, उच्च–दांव परीक्षा)

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION

- अंतिम परीक्षा (एक सही मायने में योगात्मक मूल्यांकन)
- टर्म पेपर (पूरे सेमेस्टर में जमा किए गए ड्राफ्ट एक प्रारंभिक मूल्यांकन होंगे)
- परियोजनाएं (विभिन्न समापन बिंदुओं पर प्रस्तुत परियोजना चरण हो सकते हैं) औपचारिक रूप से मूल्यांकन किया गया)
- पोर्टफोलियो (एक रचनात्मक मूल्यांकन के रूप में इसके विकास के दौरान भी मूल्यांकन किया जा सकता है)
- प्रदर्शन
- पाठ्यक्रम का छात्र मूल्यांकन (शिक्षण प्रभावशीलता)
- प्रशिक्षक स्व–मूल्यांकन

Unit:–1.4

Formal and informal assessment– concept, meaning and role in educational- settings- Standardised/Norm referenced tests (NRT) and teacher made/informal Criterion referenced testing (CRT)- औपचारिक और अनौपचारिक मूल्यांकन – शैक्षिक में अवधारणा, अर्थ और भूमिका / समायोजन

मानकीकृत/मानक संदर्भित परीक्षण (एनआरटी) और शिक्षक निर्मित/अनौपचारिक मानदंड संदर्भित परीक्षण (सीआरटी) –औपचारिक आकलन में डेटा होता है जो परीक्षण से किए गए निष्कर्षों का समर्थन करता है। हम आमतौर पर इस प्रकार के परीक्षणों को मानकीकृत उपायों के रूप में संदर्भित करते हैं। इन परीक्षणों को पहले छात्रों पर आजमाया जा चुका है और इसमें ऐसे आँकड़े हैं जो निष्कर्ष का समर्थन करते हैं जैसे कि छात्र अपनी उम्र के लिए औसत से नीचे पढ़ रहा है। डेटा को गणितीय रूप से गणना और सारांशित किया जाता है। पर्सेंटाइल, स्टैनिन, या मानक स्कोर जैसे स्कोर आमतौर पर इस प्रकार के मूल्यांकन से दिए जाते हैं। अनौपचारिक आकलन डेटा संचालित नहीं बल्कि सामग्री और प्रदर्शन संचालित होते हैं।

औपचारिक या मानकीकृत उपायों का उपयोग समग्र उपलब्धि का आकलन करने के लिए, किसी छात्र के प्रदर्शन की उनकी उम्र या ग्रेड में दूसरों के साथ तुलना करने के लिए, या साथियों के साथ तुलनीय ताकत और कमजोरियों की पहचान करने के लिए किया जाना चाहिए। अनौपचारिक आकलन को कभी–कभी मानदंड संदर्भित उपायों या प्रदर्शन आधारित उपायों के रूप में संदर्भित किया जाता है, निर्देश को सूचित करने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। सबसे प्रभावी शिक्षण प्रदर्शन उद्देश्यों की पहचान करने, इन उद्देश्यों के अनुसार निर्देश देने और फिर इन प्रदर्शन उद्देश्यों का आकलन करने पर आधारित है। इसके अलावा, किसी भी उद्देश्य को प्राप्त नहीं करने के लिए, इन उद्देश्यों को फिर से सिखाने के लिए हस्तक्षेप गतिविधियाँ आवश्यक हैं :–

Norm referenced tests (NRT) मानक संदर्भित आकलन :– मानदंड संदर्भित आकलन या मानक संदर्भित परीक्षण (एनआरटी) आकलन के लिए अधिक पारंपरिक दृष्टिकोण है। इन परीक्षणों और माप प्रक्रियाओं में परीक्षण सामग्री शामिल होती है जो नमूना आबादी पर मानकीकृत होती है और दूसरों के सापेक्ष परीक्षार्थियों की क्षमता की पहचान करने के लिए उपयोग की जाती है। इसे औपचारिक मूल्यांकन के रूप में भी जाना जाता है।

मानक संदर्भित मूल्यांकन को एक ऐसे उपकरण का उपयोग करके डेटा एकत्र करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है जिसे एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए बड़ी नमूना आबादी पर मानकीकृत किया गया है। प्रत्येक मानकीकृत मूल्यांकन उपकरण में कुछ निर्देश होंगे जिनका पालन किया जाना चाहिए। ये निर्देश परीक्षण को प्रशासित

करने की प्रक्रिया और परिणामों का विश्लेषण और व्याख्या करने और उन्हें रिपोर्ट करने के तरीके निर्दिष्ट करते हैं। अधिक सामान्य रूप से ज्ञात औपचारिक मूल्यांकन उपकरणों के उदाहरण हैं बच्चों के लिए :– Wechsler Intelligence Scales for children & Revised (WISC&R), The Illinois Test of Psycholinguistic Ability (ITPA), The Stanford& Binet Intelligence Test and the Peabody Picture Vocabulary Test & Revised (PPVT &R) and Peabody Individual Achievement Test (PIAT).

मानक–संदर्भित मूल्यांकन के लाभ :–

- कई कारणों से विशेष और उपचारात्मक शिक्षा में सामान्य संदर्भित परीक्षणों का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
- सबसे पहले, बच्चों को असाधारण या विशेष के रूप में वर्गीकृत करने का निर्णय मुख्य रूप से एनआरटीएस के परीक्षा परिणामों पर आधारित होता है।
- दूसरा, माता–पिता और परीक्षण से अपरिचित अन्य लोगों के लिए परीक्षा परिणामों को संप्रेषित करना आसान है।
- तीसरा, तकनीकी डेटा और अनुसंधान के संदर्भ में मानक–संदर्भित परीक्षणों ने सबसे अधिक ध्यान आकर्षित किया है। वे समस्या की पहचान और स्क्रीनिंग में विशेष रूप से उपयोगी हैं।

मानदंड–संदर्भित मूल्यांकन (सीआरटीएस) :–Criterion referenced testing (CRT)- मानदंड–संदर्भित मूल्यांकन का संबंध इस बात से है कि कोई बच्चा निर्धारित मानदंड के अनुसार कौशल का प्रदर्शन करने में सक्षम है या नहीं। मानदंड संदर्भित मूल्यांकन के विपरीत, जो एक व्यक्ति के प्रदर्शन की तुलना दूसरों से करता है, मानदंड संदर्भित मूल्यांकन किसी व्यक्ति के प्रदर्शन की तुलना पूर्व–स्थापित मानदंडों से करता है। मानदंड–संदर्भित परीक्षण में, किसी विषय के भीतर कौशल को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित किया जाता है ताकि जिन्हें पहले सीखा जाना चाहिए, पहले उनका परीक्षण किया जाए।

गणित में, उदाहरण के लिए गुणन कौशल से पहले जोड़ कौशल का मूल्यांकन (और सिखाया) किया जाएगा। इन परीक्षणों को आमतौर पर मानदंड संदर्भित किया जाता है क्योंकि एक छात्र को उच्च स्तर पर पढ़ाए जाने से पहले एक स्तर पर योग्यता प्राप्त करनी चाहिए।

मानदंड–संदर्भित मूल्यांकन के लाभः–

- मानदंड–संदर्भित परीक्षा परिणाम उपयोगी होते हैंः
- विशिष्ट कौशल की पहचान करने के लिए जिन्हें हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।
- पढ़ाने के लिए अगला सबसे तार्किक कौशल निर्धारित करने के लिए क्योंकि शिक्षण के निहितार्थ मानदंड संदर्भित परीक्षणों के साथ अधिक प्रत्यक्ष हैं।
- रचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए, अर्थात्, छात्र के प्रदर्शन को नियमित रूप से या दैनिक रूप से रिकॉर्ड किया जाता है जब कौशल पढ़ाया जा रहा होता है।
- यह छात्र की प्रगति को नोट करना संभव बनाता है, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या हस्तक्षेप प्रभावी है और अगले कौशल को हासिल करने में मदद करने के लिए, यदि नहीं तो यह तय करना कि शिक्षण के लिए अन्य रणनीतियों या विधियों और सामग्रियों का उपयोग किया जाना है।

पाठ्यचर्या–आधारित मूल्यांकन (CBA) :–पाठ्यचर्या आधारित मूल्यांकन की अवधारणा नई नहीं है और कई वर्षों से कार्यरत है। सीबीए को नियमित स्कूलों में कम उपलब्धि प्राप्त करने वालों और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों से निपटने के साधन के रूप में विकसित किया गया है। इसके अलावा, यह गैर–श्रेणीबद्ध मॉडल में फिट बैठता है कि मूल्यांकन पाठ्यचर्या–आधारित कौशल लेबलिंग के लिए परीक्षण पर केंद्रित है न कि उद्देश्य।CBA का उद्देश्य बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं और उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रावधान के सबसे उपयुक्त रूपों की पहचान करना है।

सैलिटी एंड बेल (1987) शैक्षिक आवश्यकताओं को ''ऐसे व्यवहारों के रूप में वर्णित करता है जिनमें एक व्यक्ति की कमी होती है जो वर्तमान और भविष्य दोनों में प्रभावी ढंग से और स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए आवश्यक हैं''।

CBA के संचालन का प्रारंभिक बिंदु बच्चे की कक्षा है। यह इस वातावरण की उपयुक्तता और इसके साथ बच्चे की बातचीत का आकलन किया जाता है न कि बच्चे का।

<u>परिभाषाः—</u>CBA को ब्लेंकशिप एंड लिली (1981) द्वारा परिभाषित किया गया है, जो पाठ्यक्रम से प्राप्त क्रमिक रूप से व्यवस्थित उद्देश्यों की एक श्रृंखला पर एक छात्र के प्रदर्शन के प्रत्यक्ष और लगातार माप प्राप्त करने के अभ्यास के रूप में है। कक्षा में उपयोग किया जाता है। यह स्कूल के अपेक्षित पाठ्यचर्या परिणामों के संदर्भ में एक छात्र के वर्तमान स्तर का पता लगाने में मदद करता है। दूसरे शब्दों में, मूल्यांकन उपकरण छात्र पाठ्यक्रम की सामग्री पर आधारित है। कुछ प्रकार के CBA अनौपचारिक होते हैं, जबकि अन्य अधिक औपचारिक और मानकीकृत होते हैं।

<u>Teacher Made Test शिक्षक निर्मित परीक्षण (टीएमटी) :—</u>एक शिक्षक—निर्मित परीक्षण एक मानकीकृत परीक्षण का एक विकल्प है, जो छात्र की समझ को मापने के लिए प्रशिक्षक द्वारा लिखा जाता है। शिक्षक—निर्मित परीक्षण तब सबसे प्रभावी माने जाते हैं जब उन्हें तथ्य के बाद के बजाय शिक्षा प्रक्रिया के हिस्से के रूप में लागू किया जाता है।

Unit 1.5 **Points to consider while assessing students with developmental disabilities विकासात्मक विकलांग छात्रों का आकलन करते समय ध्यान देने योग्य बातें** :—सीखने की अक्षमता वाले छात्रों का आकलन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। कुछ छात्र, जैसे कि एडीएचडी और ऑटिज्म वाले, परीक्षण स्थितियों के साथ संघर्ष करते हैं और इस तरह के आकलन को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय तक कार्य पर नहीं रह सकते हैं। लेकिन आकलन महत्वपूर्ण हैं; वे बच्चे को ज्ञान, कौशल और समझ का प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान करते हैं। असाधारणता वाले अधिकांश शिक्षार्थियों के लिए, मूल्यांकन रणनीतियों की सूची में कागज और पेंसिल का कार्य सबसे नीचे होना चाहिए। नीचे कुछ वैकल्पिक सुझाव दिए गए हैं जो विकलांग छात्रों के सीखने के मूल्यांकन का समर्थन और वृद्धि करते हैं।

मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा का एक व्यापक सेट प्राप्त करने के लिए, एक व्यक्तिगत छात्र की स्थिति और जरूरतों के बारे में सटीक और उपयोगी जानकारी आरटीआई डेटा सहित विभिन्न मूल्यांकन उपकरणों और प्रक्रियाओं से प्राप्त की जानी चाहिए।

1. किसी भी मानकीकृत मूल्यांकन के मान्य और नवीनतम संस्करण का उपयोग करें।
2. मानकीकृत और गैर—मानकीकृत आकलन, और अन्य डेटा स्रोतों, जैसे कि दोनों सहित कई उपायों का उपयोग करें —

- माता—पिता, शिक्षकों, संबंधित पेशेवरों और छात्र (यदि उपयुक्त हो) के साथ केस इतिहास और साक्षात्कार; मूल्यांकन और माता—पिता द्वारा प्रदान की गई जानकारी।
- प्रत्यक्ष अवलोकन जो कई सेटिंग्स में और एक से अधिक अवसरों पर अनौपचारिक (जैसे, उपाख्यानात्मक रिपोर्ट) या डेटा—आधारित जानकारी (जैसे, आवृत्ति रिकॉर्डिंग) उत्पन्न करते हैं।
- मानकीकृत परीक्षण जो विश्वसनीय और मान्य होने के साथ—साथ सांस्कृतिक, भाषाई, विकासात्मक और आयु उपयुक्त हों ।
- पाठ्यचर्या—आधारित आकलन, कार्य और त्रुटि पैटर्न विश्लेषण (जैसे, विविध विश्लेषण), पोर्टफोलियो, नैदानिक शिक्षण, और अन्य गैर—मानकीकृत दृष्टिकोण । निर्देश के दौरान और समय के साथ निरंतर प्रगति की निगरानी दोहराई गई।

3. विशिष्ट सीखने की अक्षमताओं की परिभाषा और/या इसके नियमों के सभी घटकों पर विचार करें, जिनमें शामिल हैंः

- Exclusionary factors (बहिष्करण कारक)
- समावेशी कारक ।
- विशिष्ट सीखने की अक्षमता के आठ क्षेत्र (यानी, मौखिक अभिव्यक्ति, सुनने की समझ, लिखित अभिव्यक्ति, बुनियादी पढ़ने का कौशल, पढ़ने की समझ, पढ़ने की प्रवाह, गणित की गणना, गणित की समस्या को हल करना) ।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

4. धारणा में संज्ञानात्मक और एकीकृत कठिनाइयों के विशिष्ट क्षेत्रों सहित मोटर, संवेदी, संज्ञानात्मक, संचार और व्यवहार के डोमेन में कामकाज और/या क्षमता स्तरों की जांच करें , याद, ध्यान, अनुक्रमण, मोटर योजना और समन्वय और सोच, तर्क और संगठन।

5. मानकीकृत उपायों के प्रशासन, स्कोरिंग और रिपोर्टिंग के लिए स्वीकृत और अनुशंसित प्रक्रियाओं का पालन करें। ऐसे परिणाम व्यक्त करें जो सभी मापों में तुलनीयता को अधिकतम करें (अर्थात, मानक स्कोर)। आयु या ग्रेड समकक्ष रिपोर्ट करने के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

6. यदि उपलब्ध हो तो विश्वास अंतराल और माप की मानक त्रुटि प्रदान करें।

7. एकत्रित मानकीकृत और अनौपचारिक डेटा को एकीकृत करें।

8. मानकीकृत और गैर–मानकीकृत डेटा दोनों से एकत्रित जानकारी को संतुलित और चर्चा करें, जो छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन और कार्यात्मक कौशल के वर्तमान स्तर का वर्णन करता है और पहचान, योग्यता, सेवाओं और निर्देशात्मक योजना के बारे में निर्णयों को सूचित करता है।

Unit :–2

Role of special educator in assessment मूल्यांकन में विशेष शिक्षक की भूमिका

Unit :– 2.1

Screening tools – scope and importance in educational settings and tools used (स्क्रीनिंग टूल – शैक्षिक सेटिंग्स और उपयोग किए गए टूल में दायरा और महत्व) – स्क्रीनिंग एक संक्षिप्त, सरल प्रक्रिया है जिसका उपयोग शिशुओं और छोटे बच्चों की पहचान करने के लिए किया जाता है जो संभावित स्वास्थ्य, विकासात्मक या सामाजिक–भावनात्मक समस्याओं के जोखिम में हो सकते हैं। यह उन बच्चों की पहचान करता है जिन्हें स्वास्थ्य मूल्यांकन, नैदानिक मूल्यांकन या शैक्षिक मूल्यांकन की आवश्यकता हो सकती है।

''स्क्रीनिंग'' का अर्थ एक मानकीकृत उपकरण (या तो माता–पिता प्रश्नावली या एक अवलोकन) का उपयोग करना है जिसे बच्चे के विकास के बारे में अधिक जानने के लिए अनुसंधान द्वारा मान्य किया गया है। केवल पेशेवर निर्णय या बच्चे के विकास के बारे में अनौपचारिक प्रश्नों का उपयोग करने की तुलना में वास्तविक चिंताओं या देरी की पहचान करने के लिए एक मानकीकृत उपकरण का उपयोग करना अधिक प्रभावी है।

Notes For Byssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

- किसी विशिष्ट स्थिति या विकार के लिए संभावित रूप से उच्च जोखिम वाले व्यक्तियों की प्रारंभिक पहचान के लिए उपयोग किया जाता है।
- मूल्यांकन या प्रारंभिक हस्तक्षेप की आवश्यकता का संकेत दे सकता है ।
- आम तौर पर संक्षिप्त और संकीर्ण दायरे में एक नियमित नैदानिक यात्रा के हिस्से के रूप में प्रशासित किया जा सकता है।
- समय के साथ उपचार की प्रगति, परिणाम, या लक्षणों में परिवर्तन की निगरानी के लिए उपयोग किया जा सकता है चिकित्सकों द्वारा प्रशासित किया जा सकता है, उपयुक्त प्रशिक्षण वाले सहायक कर्मचारी, एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण (जैसे कंप्यूटर), या स्व–प्रशासित ।
- सहायक कर्मचारी स्कोरिंग के लिए एक स्थापित प्रोटोकॉल का पालन करते हैं सकारात्मक स्कोर करने वाले व्यक्तियों के लिए पूर्व–स्थापित कट–ऑफ स्कोर और दिशानिर्देश।
- न तो निश्चित रूप से निदान है और न ही किसी विशिष्ट स्थिति या विकार का निश्चित संकेत है।

स्क्रीनिंग से उन बच्चों की पहचान करने में मदद मिलती है, जिन्हें अधिक मूल्यांकन की आवश्यकता होती है और वे बड़ी समस्या बनने से पहले ही चिंताओं को दूर कर देते हैं। स्क्रीनिंग छोटे बच्चों और उनके परिवारों को विभिन्न

प्रकार की सेवाओं और प्रारंभिक बचपन के कार्यक्रमों तक पहुंचने का अवसर प्रदान करती है, और माता–पिता की अपने बच्चे के स्वास्थ्य, विकास और सीखने की समझ को बढ़ावा देती है और समर्थन करती है।

विकासात्मक स्क्रीनिंग :– संज्ञानात्मक, मोटर, संचार, या सामाजिक–भावनात्मक देरी के जोखिम वाले बच्चों की प्रारंभिक पहचान है। ये देरी हैं जो अपेक्षित वृद्धि, सीखने और विकास में हस्तक्षेप कर सकती हैं और आगे निदान, मूल्यांकन और मूल्यांकन की गारंटी दे सकती हैं।

विकासात्मक स्क्रीनिंग उपकरणों में निम्नलिखित डोमेन शामिल हैं:

- Cognition अनुभूति
- Fine and gross motor skill सूक्ष्म और सकल मोटर कौशल
- Speech and language वाणी और भाषा
- Social & emotional development सामाजिक–भावनात्मक विकास

Social & emotional screening सामाजिक–भावनात्मक स्क्रीनिंग :– सामाजिक–भावनात्मक स्क्रीनिंग छोटे बच्चों की विकासात्मक जांच का एक घटक है जो एक बच्चे की क्षमता पर केंद्रित है:

- भावनाओं को व्यक्त और विनियमित करें ।
- घनिष्ठ और सुरक्षित संबंध बनाएं।
- उसके पर्यावरण का अन्वेषण करें और सीखें ।

छोटे बच्चों के लिए अलग सामाजिक–भावनात्मक जांच की आवश्यकता है, क्योंकि इसे सामान्य विकासात्मक जांच उपकरणों में पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं किया गया है। 6 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए, सामाजिक–भावनात्मक जांच मानसिक स्वास्थ्य जांच का पर्याय है।

मानसिक स्वास्थ्य जांच (Mental health screening) :–मानसिक स्वास्थ्य जांच संभावित मानसिक स्वास्थ्य विकारों के जोखिम में बच्चों की प्रारंभिक पहचान है जो अपेक्षित वृद्धि, सीखने और विकास में हस्तक्षेप कर सकते हैं और आगे निदान, मूल्यांकन की गारंटी दे सकते हैं।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

Some Development Screening Tests.

Name	Age range	Domains evaluated	Administration time (minutes)	Validity
Denver Development Screening Test (DDST)	0- 6yr	Gross Motor, Fine Motor, Social, Language, Self help, Cognitive	20	Sensitivity = 0.13 to 0.46 Specificity = 0.87 to 1.00
Denver II	0- 6yr	Gross Motor, Fine Motor, Social, Language, Self help, Cognitive	35	NA
Developmental Profile (DP II)	0- $9^{1/2}$ yr	Motor, Social, Self help, Cognitive, Language	35	VC = 0.52-0.72
Cognitive Adaptive Test! Clinical Linguistic Auditory Milestone Scale (CAT/CALMS)	0- 3yr	Visual-Motor, Language'	20	Sensitivity = 0.88 Specificity = 0.67
Early Language Milestone Scale (ELM)	0- 3 yr	Language	15	Sensitivity = 0.97 Specificity = 0.93
Vineland Social Maturity scale'"	0-15 yr	Self help, Locomotion, Occupation, Communication, Self Direction,' Socialization	25	VC = 0.40-0.50
Tests for Indian Children				
Trivandrum Development Screeening Chart (TDSC)	0- 2 yr	Gross Motor, Fine Motor, Cognitive	5	Sensitivity = 0.67 Specificity = 0.79
Haroda Development Screening Test for Infants.	0- 2V2 yr	Gross Motor, Fine Motor, Cognitive	10	Sensitivity = 0.66 to 0.93 Specificity = 0.77 to 0.94

** Indian adaptation available.*
VC = Validity coefficients (Correlations between screening test and other measures of intelligence, language or adaptive functions).
NA= Not Available.

Notes For Pyssum

Unit- 2.2

Formal assessments carried out by special educator & curriculum based assessments] educational evaluations] term end evaluations- औपचारिक मूल्यांकन विशेष शिक्षक द्वारा किया जाता है – पाठ्यक्रम आधारित मूल्यांकन, शैक्षिक मूल्यांकन, अवधि और मूल्यांकन – आज के स्कूलों में विशेष शिक्षा में शामिल पेशेवर सभी प्रकार के विकलांग छात्रों की समग्र शिक्षा में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष शिक्षक की स्थिति इस मायने में अद्वितीय है कि वह शैक्षिक वातावरण में कई अलग–अलग भूमिकाएँ निभा सकता है। उनकी भूमिका चाहे जो भी हो, विशेष शिक्षकों को विभिन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जिनके लिए व्यावहारिक निर्णयों और प्रासंगिक सुझावों की आवश्यकता होती है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप विशेष शिक्षा के क्षेत्र में किस प्रकार के पेशेवर हैं, मूल्यांकन प्रक्रिया को पूरी तरह से समझना और पेशेवरों, माता–पिता और छात्रों को महत्वपूर्ण जानकारी स्पष्ट रूप से संप्रेषित करने में सक्षम होना हमेशा आवश्यक होता है।

सीबीए में माप शामिल है जो ''निर्देशात्मक निर्णय लेने के लिए जानकारी एकत्र करने के आधार के रूप में स्थानीय पाठ्यक्रम में छात्र के प्रदर्शन के प्रत्यक्ष अवलोकन और रिकॉर्डिंग'' का उपयोग करता है (डेनो, 1987: 41)।

सीबीए, संयुक्त राज्य अमेरिका में विशेष शिक्षा आंदोलन के लिए महत्वपूर्ण और हाइलाइट करने वाले इतिहास के साथ, पिछले तीन दशकों के दौरान छात्र प्रगति के चल रहे मापन और निर्देशात्मक प्रथाओं के बारे में ठोस निर्णय लेने की प्रणाली में विकसित हुआ। आज, यह एक ठोस शोध आधार के संग्रह का प्रतिनिधित्व करता है जिसे सीधे शिक्षकों के निर्देशात्मक निर्णयों से जोड़ा जा सकता है। CBA सिद्धांतों का अनुप्रयोग यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि व्यक्तिगत छात्र, कक्षा के वातावरण के अंदर और बाहर, शिक्षकों के निर्देशात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं, चाहे उनका निर्देश किसी भी शिक्षण सेटिंग में क्यों न हो। स्पष्ट रूप से, सीबीए प्रक्रियाओं और प्रक्रियाओं को उचित रूप से लागू करने वाले शिक्षक प्रभावी निर्देश तैयार करने में सक्षम हैं। जब वे निर्देश को लागू और प्रबंधित करते हैं, तो वे महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम उद्देश्यों पर व्यवस्थित तरीके से अपने छात्रों की प्रगति के लगातार मूल्यांकन का उपयोग करके मूल्यांकन डेटा एकत्र करने में सक्षम होते हैं। तब ये शिक्षक अपने प्राप्त आंकड़ों पर चिंतन कर अपनी शिक्षण प्रभावशीलता और कक्षा की सफलता के बारे में ठोस शैक्षिक निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। शिक्षक विभिन्न, अकादमिक मुख्य विषय क्षेत्रों में कौशल की एक श्रृंखला को कवर करने के लिए चल रहे मूल्यांकन डेटा को नियोजित करते हैं (उदाहरण के लिए, अवधारणा मान्यता, संख्या याद, और गणित में नियम भेदभावय अक्षर नामकरण, शब्द पहचान, और पढ़ने में प्रवाहय और पूंजीकरण, विराम चिह्न, और लिखित अभिव्यक्ति में विषय–क्रिया समझौता)। वे समय के साथ डेटा देखते हैं (उदाहरण के लिए, निर्देश के पूर्व, दौरान या बाद में), और विभिन्न सेटिंग्स (जैसे, कक्षा, समुदाय, घर और कार्य स्थल) में। जैसा कि शिक्षक निर्देश से जुड़े मूल्यांकन की उपयोगिता पर प्रतिबिंबित करते हैं, और समय के साथ छात्रों की शैक्षणिक प्रगति की रिपोर्ट करने के शिक्षकों के नियमित प्रदर्शनों की सूची में चल रहे मूल्यांकन के रूप में, वे शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं के दौरान छात्रों को अधिक सीधे और स्पष्ट रूप से शामिल करना शुरू करते हैं। शिक्षकों और छात्रों द्वारा निर्देशात्मक रूप से प्रासंगिक माप के माध्यम से एकत्र किए गए चिंतनशील डेटा का उपयोग यह सूचित करने में मदद करता है कि छात्र निर्देशात्मक बना रहे हैं या नहीं।

इससे यह पुष्टि करने में मदद मिलती है कि छात्र अकादमिक महारत के स्तर तक पहुंचने के लिए व्यवहार का प्रदर्शन कर रहे हैं या नहीं। इस तरह के डेटा का उपयोग, यह सूचित करने और पुष्टि करने में भी मदद करता है कि शिक्षक शैक्षिक निर्णय लेने में सफल हैं या नहीं। शिक्षक चाहे जो भी कौशल का आकलन करें, शिक्षक द्वारा नियोजित पाठ्यचर्या मानकों, जब वे डेटा एकत्र करते हैं, जहां वे मूल्यांकन करते हैं, वे कैसे मापते हैं, औरध्या शिक्षकों द्वारा किस प्रकार के डेटा की तलाश की जाती है, निर्देश और सीखने का विश्लेषण सार्थक ज्ञान की ओर ले जाता है। बार–बार विश्लेषण से शिक्षकों को (1) आकलन के लिए महत्वपूर्ण कौशल जानने में मदद मिलती है जिसके लिए शिक्षक का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है।

- वैध और विश्वसनीय डेटा संग्रह सुनिश्चित करना,
- निरंतर आधार पर निर्देशात्मक डेटा की जांच करना,
- छात्र की सीखने की स्थितियों के लिए महत्वपूर्ण प्रदर्शन की निगरानी करना,
- अपने स्वयं के शिक्षक प्रभावशीलता के बारे में चिंतनशील निर्णय लेना, सुधार करना
- छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और स्व–निर्देशात्मक जागरूकता।

आईडिया (IDEA) उस महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देता है जो एक टीम छात्रों के मूल्यांकन और उनकी चल रही शिक्षा में निभाती है। विकलांग छात्रों के लिए सेवाएं प्रदान करने के केंद्रीय घटकों में से एक हितधारकों की एक टीम को बुला रहा

है जिसमें प्रमुख पेशेवरों और परिवार के सदस्यों को सहयोगात्मक रूप से एक आईईपी (असाधारण बच्चों के लिए परिषद, एनडी) बनाने के लिए शामिल किया गया है। एक उच्च गुणवत्ता वाला आईईपी विकलांग छात्रों को प्रगति करने में व्यक्तिगत बनाने और उनकी सहायता करने का प्राथमिक तंत्र है। टीम के सदस्य के रूप में विशेष शिक्षा शिक्षक की भूमिका मूल्यांकन की जानकारी के आधार पर छात्र की ताकत और जरूरतों पर विचार करना है और पूरी टीम के साथ मिलकर काम करना है ताकि एक शैक्षिक योजना तैयार की जा सके, जो लागू होने पर छात्र के लिए अधिकतम लाभ पैदा करेगी। चूंकि शैक्षिक योजना का कार्यान्वयन और मूल्यांकन चल रहा है, विशेष शिक्षा शिक्षकों को निर्देश के प्रति छात्र की प्रतिक्रिया की निगरानी के प्रयास के हिस्से के रूप में अन्य शिक्षकों, कर्मचारियों और परिवारों के साथ नियमित रूप से मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या और संवाद करने में सक्षम होना चाहिए।

हम सीखने के लिए मूल्यांकन का पता लगाएंगे, जहां प्राथमिकता छात्रों के सीखने और विकास को बढ़ाने के लिए मूल्यांकन रणनीतियों को डिजाइन और उपयोग कर रही है। कभी–कभी एक शिक्षक नैदानिक मूल्यांकन के साथ पाठ, इकाई या अकादमिक शब्द शुरू कर सकता है। इन आकलनों का उपयोग शिक्षण से पहले छात्रों के पिछले ज्ञान, कौशल और समझ को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह 'पूर्व–मूल्यांकन शिक्षक को यह निर्धारित करने में मदद करता है कि छात्र पहले से क्या जानते हैं, उन्हें क्या जानने की जरूरत है, और छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम को समायोजित करने में मदद करता है।

सीखने के लिए आकलन अक्सर रचनात्मक मूल्यांकन होता है, यानी यह जानकारी प्रदान करके निर्देश के दौरान होता है कि शिक्षक अपने शिक्षण को संशोधित करने के लिए उपयोग कर सकते हैं और छात्र अपने सीखने में सुधार के लिए उपयोग कर सकते हैं **(ब्लैक, हैरिसन, ली, मार्शल और विलियम, 2004)** .

रचनात्मक मूल्यांकन में छात्रों के व्यवहार (जैसे प्रश्न और उत्तर सत्र के दौरान या जब छात्र एक असाइनमेंट पर काम कर रहे हों) और औपचारिक मूल्यांकन जिसमें पूर्व–नियोजित, व्यवस्थित डेटा एकत्र करना शामिल है, दोनों अनौपचारिक मूल्यांकन शामिल हैं।

सीखने का आकलन एक औपचारिक मूल्यांकन है जिसमें छात्रों को उनकी क्षमता को प्रमाणित करने और जवाबदेही जनादेश को पूरा करने के लिए मूल्यांकन करना शामिल है। सीखने का आकलन आम तौर पर योगात्मक होता है, यानी निर्देश पूरा होने के बाद प्रशासित होता है (उदाहरण के लिए, शैक्षिक मनोविज्ञान पाठ्यक्रम में अंतिम परीक्षा)। योगात्मक आकलन इस बारे में जानकारी प्रदान करते हैं कि छात्रों ने सामग्री में कितनी अच्छी महारत हासिल की, क्या छात्र अगली इकाई के लिए तैयार हैं, और क्या ग्रेड दिए जाने चाहिए।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

Unit :– 2.3

Informal assessment carried out by the teachers – Assessment for planning Individualised educational Programmes (IEPs), Teacher made and criterion referenced tests in different curricular domains शिक्षकों द्वारा किया गया अनौपचारिक मूल्यांकन – व्यक्तिगत योजना बनाने के लिए मूल्यांकनशैक्षिक कार्यक्रम (आईईपी), शिक्षक बनाया और विभिन्न में मानदंड संदर्भित परीक्षण पाठ्यचर्या डोमेन–एक अनौपचारिक मूल्यांकन स्वतःस्फूर्त होता है। यह मूल्यांकन का एक तरीका है जहां प्रशिक्षक बिना किसी मानक मानदंड या रूब्रिक का उपयोग करके प्रतिभागियों के ज्ञान का परीक्षण करता है। इसका मतलब है कि कोई वर्तनी–आउट मूल्यांकन मार्गदर्शिका नहीं है। इसके बजाय, प्रशिक्षक केवल ओपन–एंडेड प्रश्न पूछता है और छात्रों के प्रदर्शन को यह निर्धारित करने के लिए देखता है कि वे कितना जानते हैं।यह सरल–प्रतिक्रिया है। इन मूल्यांकनों के डेटा प्रशिक्षक को प्रतिभागियों के लिए बेहतर सीखने के अनुभव बनाने के लिए निरंतर समायोजन करने में मदद करते हैं।

विशेष शिक्षा सेवाओं के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए सभी छात्रों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। एक बार एक रेफरल किए जाने के बाद, स्कूल जिला कर्मियों को एक मूल्यांकन योजना विकसित करनी चाहिए, जिसमें पूर्व लिखित नोटिस का आकलन करना होगा और इसे माता–पिताध्अभिभावक को रेफरल के 15 कैलेंडर दिनों के भीतर प्रदान करना होगा, उस समय अवधि को छोड़कर जब स्कूल सत्र में 5 से अधिक के लिए सत्र में नहीं है। स्कूल के दिन। एक आकलन योजना मूल्यांकन प्रक्रियाओं का एक विवरण है जिसका उपयोग आईईपी टीम को यह निर्धारित करने में मदद करने के लिए किया जाएगाः

- योग्यता विकलांगता की उपस्थितिध्स्वरूप विशेष शिक्षा और संबंधित सेवाओं के लिए पात्रता ।
- छात्र की जरूरतें और उन्हें कैसे पूरा किया जाएगा
- उपयुक्त निर्देशात्मक रणनीतियां

मुख्यधारा और मानदंड संदर्भित परीक्षण(Mainstreaming and Criterion Referenced Tests):—यदि आपके छात्रों को सामाजिक अध्ययन और विज्ञान जैसी कक्षाओं के लिए नियमित कक्षा में मुख्यधारा में लाया जाता है, तो वे शायद मानदंड संदर्भित परीक्षण ले रहे हैं। आपके कुछ छात्रों के पास परीक्षा देने के लिए उनके प्म्चे में आवास और संशोधन लिखे हो सकते हैं, जैसे कि उन्हें परीक्षा पढ़कर सुनाना या नोट्स या अध्ययन गाइड का उपयोग करने की अनुमति देना। इन संशोधनों के साथ, मानदंड—संदर्भित परीक्षणों से आप जो जानकारी एकत्र करते हैं, वह आपको दिखाएगा कि छात्र सामग्री क्षेत्र की कक्षाओं में सीखी जाने वाली सामग्री को कितनी अच्छी तरह समझते हैं। आप आकलन से इस जानकारी का उपयोग अध्ययन गाइडों, अतिरिक्त पठन असाइनमेंट, या यहां तक कि कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के माध्यम से छात्रों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करने के लिए कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि एक आईईपी वाला छात्र चौथी कक्षा में मुख्यधारा में आता है और एक विज्ञान परीक्षा लेता है जो उसे पढ़ा जाता है, तो परीक्षा परिणाम सटीक रूप से दिखाना चाहिए कि छात्र विज्ञान इकाई के बारे में कितनी जानकारी समझता है। चूंकि प्रश्न पढ़े जाते हैं, शिक्षक यह पता लगा सकते हैं कि छात्र शब्दावली शब्द को समझते हैं या नहीं—यदि वे इसे पढ़ नहीं सकते हैं। वही सच होगा यदि किसी छात्र के आईईपी ने कहा कि वह अपने उत्तरों को एक पैराप्रोफेशनल को निर्देशित कर सकता है। शिक्षक यह आकलन कर सकते हैं कि क्या छात्र विज्ञान की जानकारी को समझता है—न कि यदि छात्र उत्तर लिख सकता है और शब्दावली को सही ढंग से लिख सकता है।

विशेष आवश्यकता वाले कुछ छात्रों के IEPs में परीक्षण संशोधन नहीं होते हैं, और इसलिए विज्ञान और इतिहास परीक्षण उनके लिए अधिक कठिन हो सकते हैं क्योंकि वे पढ़ने या लिखने के कौशल के साथ संघर्ष करते हैं। इन मामलों में, निर्देश को चलाने के लिए मानदंड संदर्भित परीक्षणों का उपयोग करना और यह देखना कठिन है कि छात्रों को अभी भी किन उद्देश्यों में महारत हासिल करने की आवश्यकता है। वे विज्ञान परीक्षण के लिए आवश्यक सभी तथ्यों को जान सकते हैं, लेकिन वे अपनी पढ़ने और लिखने की क्षमताओं से सीमित हैं। एक विशेष शिक्षक के रूप में, आप यह देखने के लिए छात्रों के साथ श्रेणीबद्ध मूल्यांकन पर जा सकते हैं कि क्या वे अवधारणाओं को समझते हैं लेकिन पढ़ने और लिखने में सहायता की आवश्यकता है।

जब आप अपने छात्रों के लिए मानदंड संदर्भित परीक्षणों के परिणाम प्राप्त करते हैं, तो आप इन परिणामों का उपयोग अपने छात्रों के लिए निम्नलिखित तरीकों से निर्देश की सहायता के लिए कर सकते हैं:

- अपने छात्र के लिए विषय क्षेत्र में अधिक सहायता प्रदान करें। उदाहरण के लिए, आप उसके नियमित कक्षा में जाने से पहले अपनी कक्षा में पाठ्यपुस्तक से सामग्री पढ़ सकते हैं। आप हाइलाइट किए गए परीक्षण के लिए सबसे आवश्यक जानकारी के साथ एक अध्ययन मार्गदर्शिका भी प्रदान कर सकते हैं ।
- आईईपी लक्ष्यों को लिखने के लिए जानकारी प्रदान करें। यदि छात्र मानदंड संदर्भित परीक्षणों पर अच्छा कर रहे हैं, तो वे अपने कुछ आईईपी लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं। उन्हें अब परीक्षण आवास की आवश्यकता नहीं हो सकती है, या उन्हें कम की आवश्यकता हो सकती है। यदि छात्र मानदंड—संदर्भित परीक्षणों में लगातार असफल हो रहे हैं, तो इन परिणामों पर IEP समिति के साथ चर्चा करने की आवश्यकता हो सकती है और IEP को संशोधित करने के लिए अतिरिक्त परीक्षण करने की आवश्यकता हो सकती है।
- अपने छात्रों के हितों की खोज करें। मानदंड संदर्भित परीक्षण विशेष शिक्षकों के लिए ऐतिहासिक आंकड़ों से लेकर जानवरों के आवास तक के विषयों पर चर्चा करने का अवसर हो सकता है। यदि छात्र किसी विशेष विषय में एक ताकत या विशेष रुचि दिखाते हैं, तो आप इस रुचि का उपयोग परीक्षा लेने या अध्ययन कौशल जैसे उद्देश्यों को पढ़ाने के लिए कर सकते हैं।
- विशेष शिक्षक अपने छात्रों को अपने स्तर पर सफल होने में मदद करने के लिए मानदंड संदर्भित परीक्षणों का उपयोग कर सकते हैं।

Unit :– 2.4

Assessment of students who need high supports/having severe disabilities- उन छात्रों का मूल्यांकन जिन्हें उच्च समर्थन की आवश्यकता है या गंभीर विकलांग हैं :– विकलांग छात्रों को आवास या मूल्यांकन के वैकल्पिक रूपों की आवश्यकता होती है ताकि उनके सीखने को प्रणाली और कक्षा स्तर पर मापा जा सके और लक्षित शिक्षण रणनीतियों को नियोजित किया जा सके। छात्रों को उनकी जरूरतों के आधार पर विभिन्न प्रकार के आवास उपलब्ध कराए जाने चाहिए और प्रौद्योगिकी विकलांग बच्चों को मूल्यांकन के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। सीधे शब्दों में कहें, विकलांग छात्रों के परीक्षण के लिए विविध मूल्यांकन दृष्टिकोण आवश्यक हैं, साथ ही उनकी सीखने की जरूरतों को पूरा करने वाले कई शिक्षण भी हैं।

आईडिया (IDEA) के लिए आवश्यक है कि विकलांग छात्र राज्य या जिला–व्यापी मूल्यांकन में भाग लें। ये ऐसे परीक्षण हैं जो समय–समय पर सभी छात्रों को उपलब्धि मापने के लिए दिए जाते हैं। यह एक तरीका है जिससे स्कूल यह निर्धारित करते हैं कि छात्र कितना अच्छा और कितना सीख रहे हैं। आईडिया(IDEA) अब कहता है कि विकलांग छात्रों की सामान्य पाठ्यक्रम में यथासंभव भागीदारी होनी चाहिए। इसका मतलब यह है कि, यदि कोई बच्चा सामान्य पाठ्यक्रम में निर्देश प्राप्त कर रहा है, तो वह वही मानकीकृत परीक्षा दे सकता है जो स्कूल जिला या राज्य गैर–विकलांग बच्चों को देता है। तदनुसार, एक बच्चे के आईईपी में वे सभी संशोधन या आवास शामिल होने चाहिए जिनकी बच्चे को आवश्यकता है ताकि वह राज्य या जिला–व्यापी मूल्यांकन में भाग ले सके। आईईपी टीम यह तय कर सकती है कि कोई विशेष परीक्षण बच्चे के लिए उपयुक्त नहीं है। इस मामले में, IEP में शामिल होना चाहिएः

- इस बात का स्पष्टीकरण कि वह परीक्षण बच्चे के लिए उपयुक्त क्यों नहीं है ।
- इसके बजाय बच्चे का मूल्यांकन कैसे किया जाएगा (जिसे अक्सर वैकल्पिक मूल्यांकन कहा जाता है)।

अपने राज्य और/या स्थानीय स्कूल जिले से छात्रों के लिए उपलब्ध आवासों, संशोधनों और वैकल्पिक आकलन के प्रकार पर उनके दिशानिर्देशों की एक प्रति के लिए पूछें। क्योंकि विकलांग बच्चों को सामान्य पाठ्यक्रम तक पहुँचने, स्कूल में भाग लेने (अतिरिक्त और गैर–शैक्षणिक गतिविधियों सहित) में मदद करने के लिए आवास बहुत महत्वपूर्ण हो सकते हैं, और विकलांगों के बिना अपने साथियों के साथ शिक्षित हो सकते हैं।

Unit:–2.5

Teacher competencies and role Of special education teacher assessment in different settings- शिक्षक दक्षता और विभिन्न सेटिंग्स में विशेष शिक्षा शिक्षक मूल्यांकन की भूमिका – सकारात्मक लाभ दिखाने के लिए समावेशन के लिए, सभी छात्रों के लिए मजबूत सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए सीखने के माहौल और निर्देशात्मक मॉडल को सावधानीपूर्वक स्थापित किया जाना चाहिए। विशेष शिक्षा और सामान्य शिक्षा के शिक्षकों को समावेश के दर्शन के प्रति परस्पर सम्मान और खुले दिमाग के साथ–साथ मजबूत प्रशासनिक समर्थन और विकलांग छात्रों की जरूरतों को पूरा करने का ज्ञान होना चाहिए। कई क्षेत्रों में एक संयुक्त शिक्षण वातावरण की सफलता के लिए एक विशेष शिक्षा शिक्षक की भागीदारी महत्वपूर्ण है ।

पाठ्यचर्या डिजाइन (Curriculum Design) :– विशेष शिक्षा शिक्षक यह सुनिश्चित करने के लिए समावेशी कक्षाओं के लिए पाठ तैयार करने में मदद करते हैं कि विकलांग छात्रों की जरूरतों पर विचार किया जाता है। शिक्षक एक पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए एक साथ काम कर सकते हैं जो सभी छात्रों के लिए सुलभ हो, या विशेष शिक्षा शिक्षक सामान्य शिक्षा शिक्षक की पाठ योजनाओं में संशोधन कर सकते हैं। एक विशेष शिक्षा शिक्षक विशिष्ट छात्रों के लिए पूरक शिक्षण सामग्री भी तैयार करेगा, जिसमें दृश्य, जोड़ तोड़, पाठ और प्रौद्योगिकी संसाधन शामिल हैं, और यह निर्धारित करेंगे कि कब एक–एक पाठ की आवश्यकता हो सकती है। पाठ तैयार करते समय शिक्षकों को छात्रों की ताकत, कमजोरियों, रुचियों और संचार विधियों की जांच करनी चाहिए। उपलब्धि लक्ष्यों को पूरा करने के लिए छात्रों के आईईपीएस का सावधानीपूर्वक पालन किया जाना चाहिए। चूंकि कई सामान्य शिक्षा शिक्षकों के पास समावेशी शिक्षा में सीमित प्रशिक्षण है, इसलिए विशेष शिक्षा शिक्षक के लिए प्रशिक्षक को यह समझने में मदद करना महत्वपूर्ण है कि कुछ आवासों की आवश्यकता क्यों है और उन्हें कैसे शामिल किया जाए।

कक्षा निर्देश (Classroom Instruction) :– कई समावेशी कक्षाएँ एक सह–शिक्षण मॉडल पर आधारित होती हैं, जहाँ दोनों शिक्षक पूरे दिन मौजूद रहते हैं। अन्य लोग पुश–इन मॉडल का उपयोग करते हैं, जहां विशेष शिक्षा शिक्षक दिन के दौरान निश्चित समय

Notes For Physum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

पर पाठ प्रदान करते हैं। वास्तव में समावेशी कक्षा को लागू करने के लिए सामान्य और विशेष शिक्षा शिक्षकों के बीच व्यापक सहयोग की आवश्यकता होती है। विशेष शिक्षा शिक्षक अक्सर आईईपी वाले छात्रों के साथ या उनके पास बैठते हैं ताकि उनकी प्रगति की निगरानी की जा सके और कोई विशेष निर्देश या पूरक शिक्षण सामग्री प्रदान की जा सके। छात्रों को उनकी अनूठी जरूरतों के आधार पर व्यक्तिगत निर्देश और सहायता के विभिन्न स्तरों की आवश्यकता होती है।

शिक्षक छात्रों को एक–एक पाठ या संवेदी गतिविधियों के लिए कक्षा से बाहर निकाल सकते हैं, या परामर्शदाताओं, भाषण चिकित्सक, डिस्लेक्सिया प्रशिक्षकों और अन्य विशिष्ट कर्मियों के साथ समय की व्यवस्था कर सकते हैं। विशेष शिक्षा प्रशिक्षकों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता हो सकती है कि पैराप्रोफेशनल या चिकित्सक छात्रों की सहायता के लिए निश्चित समय पर कक्षा में मौजूद हों। सकारात्मक माहौल बनाए रखने में मदद के लिए, वे सामान्य शिक्षा शिक्षक को पूरी कक्षा में पाठ प्रस्तुत करने, पेपर ग्रेडिंग, नियमों को लागू करने और अन्य कक्षा दिनचर्या में सहायता कर सकते हैं। सामान्य और विशेष शिक्षा शिक्षक अधिक जुड़ाव अवसर प्रदान करने के लिए कक्षाओं को छोटे समूहों में तोड़ सकते हैं।

सीखने का आकलन (Learning Assessments) :– समावेशी कक्षाओं में विशेष शिक्षा शिक्षकों की एक अन्य भूमिका यह निर्धारित करने के लिए नियमित मूल्यांकन करना है कि छात्र शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त कर रहे हैं या नहीं। पाठों का समय–समय पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि क्या वे छात्रों पर हावी हुए बिना पर्याप्त रूप से चुनौतीपूर्ण हैं। छात्रों को सामान्य शिक्षा सेटिंग्स में आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की भावना हासिल करनी चाहिए, लेकिन उन्हें पर्याप्त रूप से समर्थित भी महसूस करना चाहिए। विशेष शिक्षा शिक्षक प्रत्येक छात्र, उनके परिवार और कुछ स्टाफ सदस्यों के साथ समय–समय पर आईईपी बैठकें आयोजित करते हैं ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि छात्र की योजना में समायोजन करने की आवश्यकता है या नहीं।

छात्रों के लिए वकालत (Advocating for Student) :– विशेष शिक्षा शिक्षक विकलांग और विशेष जरूरतों वाले छात्रों के लिए अधिवक्ता के रूप में कार्य करते हैं। इसमें यह सुनिश्चित करना शामिल है कि सभी स्कूल अधिकारी और कर्मचारी समावेश के महत्व को समझते हैं और सभी परिसर गतिविधियों में समावेश को सर्वोत्तम तरीके से कैसे लागू किया जाए। समर्थन में समावेश–केंद्रित व्यावसायिक विकास गतिविधियों का अनुरोध करना शामिल हो सकता है–विशेष रूप से ऐसे कार्यक्रम जो सामान्य शिक्षा शिक्षकों को समावेश की सर्वोत्तम प्रथाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं–या समावेशी शिक्षण की सफलता दर के बारे में समुदाय के सदस्यों को जानकारी प्रदान करते हैं।

समावेशी कक्षा की सफलता के लिए माता–पिता के साथ संचार भी आवश्यक है। परिवारों को फोन कॉल, ईमेल और अन्य संचार माध्यमों के माध्यम से बच्चे के शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास पर नियमित अपडेट प्राप्त करना चाहिए। माता–पिता छात्रों को कक्षा की दिनचर्या के लिए तैयार करने में मदद कर सकते हैं। गृहकार्य और कक्षा में भागीदारी की अपेक्षाएं जल्दी ही स्थापित की जानी चाहिए।

Notes For Nyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

Unit:–3

Assessment of individuals with ASD (एएसडी वाले व्यक्तियों का आकलन)

Unit :–3.1

Screening and Diagnosis: Criteria and Tools (e-g-, Diagnostic and Statistical Manual (DSM) 5, International Classification of Diseases (ICD 10). International Classification of Functioning (ICF) Checklist, Modified Checklist for Autism in Toddlers (MCHAT&R/F), Indian Scale for Assessment of Autism (ISAA), AIIMS&Modified INCLEN Diagnostic Tool for Autism Spectrum Disorder (AIIMS Modified INDT&ASD). Childhood Autism Rating Scale 2nd edition (CARS–2), स्क्रीनिंग और निदानः मानदंड और उपकरण (जैसे, नैदानिक और सांख्यिकीय मैनुअल(डीएसएम) 5, रोगों का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीडी 10)।

अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण फंक्शनिंग (आईसीएफ) चेकलिस्ट, टॉडलर्स में ऑटिज्म के लिए संशोधित चेकलिस्ट (एमसीएचएटी– आरध्एफ), ऑटिज्म के आकलन के लिए भारतीय स्केल (आईएसएए), एम्स–संशोधित छब्क्स्छ ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर के लिए डायग्नोस्टिक टूल (AIIMS संशोधित INDT–एएसडी)। चाइल्डहुड ऑटिज्म रेटिंग स्केल दूसरा संस्करण (CARS–2),

<u>Diagnostic and Statistical Manual (DSM) 5 डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल (DSM) 5</u> :– 2013 में, अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन ने अपने डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ मेंटल डिसऑर्डर (DSM–5) का पांचवां संस्करण जारी किया। DSM–5 अब मानक संदर्भ है जिसका उपयोग स्वास्थ्य सेवा प्रदाता आत्मकेंद्रित सहित मानसिक और व्यवहारिक स्थितियों के निदान के लिए करते हैं।

I. कई संदर्भों में सामाजिक संचार और सामाजिक संपर्क में लगातार कमी, जैसा कि निम्नलिखित, वर्तमान या इतिहास द्वारा प्रकट होता है ।

1. सामाजिक–भावनात्मक पारस्परिकता में कमी, उदाहरण के लिए, असामान्य सामाजिक दृष्टिकोण और सामान्य आगे–पीछे बातचीत की विफलता से लेकर , रुचियों, भावनाओं, या प्रभाव के बंटवारे को कम करने के लिए , सामाजिक बातचीत शुरू करने या प्रतिक्रिया करने में विफलता के लिए।

2. सामाजिक संपर्क के लिए उपयोग किए जाने वाले अशाब्दिक संचार व्यवहार में कमी, उदाहरण के लिए, खराब एकीकृत मौखिक और अशाब्दिक संचार से, आंखों के संपर्क और शरीर की भाषा में असामान्यताएं या इशारों की समझ और उपयोग में कमी, चेहरे के भाव और अशाब्दिक संचार की कुल कमी।

3. संबंधों को विकसित करने, बनाए रखने और समझने में कमी, उदाहरण के लिए, विभिन्न सामाजिक संदर्भों के अनुरूप व्यवहार को समायोजित करने में कठिनाइयों से लेकर; कल्पनाशील खेल को साझा करने या दोस्त बनाने में कठिनाइयों के लिए, साथियों में रुचि की अनुपस्थिति के लिए।वर्तमान गंभीरता निर्दिष्ट करें , गंभीरता सामाजिक संचार में कमी और व्यवहार के प्रतिबंधित दोहराव वाले पैटर्न पर आधारित है।

4 व्यवहार, रुचियों या गतिविधियों के प्रतिबंधित, दोहराव वाले पैटर्न, जैसा कि निम्नलिखित में से कम से कम दो, वर्तमान में या इतिहास द्वारा प्रकट होता है

1. स्टीरियोटाइप या दोहराए जाने वाले गतिविधियों, वस्तुओं का उपयोग, या भाषण (उदाहरण के लिए, साधारण मोटर स्टीरियोटाइप, खिलौनों को अस्तर या वस्तुओं को फ्लिप करना, इकोलिया, अज्ञात वाक्यांश)।

2. समानता पर जोर, दिनचर्या का अनम्य पालन, या अनुष्ठान पैटर्न या मौखिक अशाब्दिक व्यवहार (जैसे, छोटे बदलावों पर अत्यधिक संकट, संक्रमण के साथ कठिनाइयाँ, कठोर सोच पैटर्न, अभिवादन अनुष्ठान, एक ही मार्ग लेने या हर दिन भोजन करने की आवश्यकता)।

3. अत्यधिक प्रतिबंधित, निश्चित रुचियां जो तीव्रता या फोकस में असामान्य हैं (उदाहरण के लिए, असामान्य वस्तुओं के साथ मजबूत लगाव या व्यस्तता, अत्यधिक सीमित या लगातार रुचि)।

4. पर्यावरण के संवेदी पहलुओं में संवेदी इनपुट या असामान्य रुचियों के लिए हाइपर– या हाइपोरिएक्टिविटी (जैसे, दर्द ध् तापमान के प्रति स्पष्ट उदासीनता, विशिष्ट ध्वनियों या बनावट के प्रति प्रतिकूल प्रतिक्रिया, अत्यधिक गंध या वस्तुओं को छूना, रोशनी या गति के साथ दृश्य आकर्षण) .

ब्. लक्षण प्रारंभिक विकास अवधि में मौजूद होना चाहिए (लेकिन तब तक पूरी तरह से प्रकट नहीं हो सकते जब तक कि सामाजिक मांग सीमित क्षमता से अधिक न हो या बाद के जीवन में सीखी गई रणनीतियों द्वारा मुखौटा हो)।

क्. लक्षण सामाजिक, व्यावसायिक, या वर्तमान कामकाज के अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में चिकित्सकीय रूप से महत्वपूर्ण हानि का कारण बनते हैं।

म. इन गड़बड़ियों को बौद्धिक अक्षमता (बौद्धिक विकास संबंधी विकार) या वैश्विक विकासात्मक देरी से बेहतर ढंग से समझाया नहीं गया है। बौद्धिक अक्षमता और ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार अक्सर सह–होते हैंय ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार और बौद्धिक अक्षमता का सहवर्ती निदान करने के लिए, सामाजिक संचार सामान्य विकास स्तर की अपेक्षा से कम होना चाहिए।

Diagnostic Criteria (नैदानिक मानदंड) –.मौखिक और अशाब्दिक संचार के सामाजिक उपयोग में लगातार कठिनाइयाँ जैसा कि निम्नलिखित सभी द्वारा प्रकट किया गया हैः

1. सामाजिक उद्देश्यों के लिए संचार का उपयोग करने में कमी, जैसे अभिवादन और जानकारी साझा करना, सामाजिक संदर्भ के लिए उपयुक्त तरीके से।

2. संदर्भ या श्रोता की जरूरतों के अनुरूप संचार को बदलने की क्षमता में कमी, जैसे कि खेल के मैदान की तुलना में कक्षा में अलग ढंग से बोलना, एक वयस्क की तुलना में एक बच्चे से अलग बात करना, और अत्यधिक औपचारिक भाषा के उपयोग से बचना।

3. बातचीत और कहानी कहने के लिए नियमों का पालन करने में कठिनाइयाँ, जैसे बातचीत में मोड़ लेना, गलत समझे जाने पर फिर से लिखना, और बातचीत को विनियमित करने के लिए मौखिक और अशाब्दिक संकेतों का उपयोग किया जाना।

4 घाटे के परिणामस्वरूप प्रभावी संचार, सामाजिक भागीदारी, सामाजिक संबंध, अकादमिक उपलब्धि, या व्यावसायिक प्रदर्शन, व्यक्तिगत रूप से या संयोजन में कार्यात्मक सीमाएं होती हैं।

5 लक्षणों की शुरुआत प्रारंभिक विकास अवधि में होती है (लेकिन जब तक सामाजिक संचार की मांग सीमित क्षमता से अधिक नहीं हो जाती तब तक कमी पूरी तरह से प्रकट नहीं हो सकती है)।

6. लक्षण किसी अन्य चिकित्सा या तंत्रिका संबंधी स्थिति या डोमेन या शब्द संरचना और व्याकरण में कम क्षमताओं के कारण नहीं होते हैं, और ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार, बौद्धिक अक्षमता (बौद्धिक विकास संबंधी विकार), वैश्विक विकास देरी, या किसी अन्य द्वारा बेहतर ढंग से समझाया नहीं जाता है ।

International Classification of Diseases (ICD 10)रोगों का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (ICD 10) :–

व्यापक विकास संबंधी विकार विशेषता–सामाजिक अंतःक्रियाओं और संचार के पैटर्न में गुणात्मक असामान्यताओं और रुचियों और गतिविधियों के प्रतिबंधित, रूढ़िबद्ध, दोहराव वाले प्रदर्शनों की विशेषता वाले विकारों का एक समूह है। ये गुणात्मक असामान्यताएं सभी स्थितियों में व्यक्ति के कामकाज की एक व्यापक विशेषता हैं।

बाल्यावस्था आत्मकेंद्रित (Childhood autism) :–

यह एक प्रकार का व्यापक विकासात्मक विकार जिसे परिभाषित किया गया हैः

(।) असामान्य या बिगड़ा हुआ विकास की उपस्थिति जो तीन साल की उम्र से पहले प्रकट होती है,

(2) मनोविकृति विज्ञान के सभी तीन क्षेत्रों में विशिष्ट प्रकार की असामान्य कार्यप्रणाली : पारस्परिक सामाजिक संपर्क, संचार, और प्रतिबंधित, रूढ़िबद्ध, दोहराव वाला व्यवहार।

इन विशिष्ट नैदानिक विशेषताओं के अलावा, कई अन्य गैर–विशिष्ट समस्याएं आम हैं, जैसे कि फोबिया, नींद और खाने में गड़बड़ी, गुस्सा नखरे, और (स्व–निर्देशित) आक्रामकता।

- Autistic disorder (ऑटिस्टिक डिसऑर्डर)
- Infantile (शिशु)
- Autism (स्वलीनता)
- Psychosis (मनोविकृति)
- कैनर सिंड्रोम(Kanner syndrome)

Notes For Byssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

➢ एटिपिकल ऑटिज़्म (Atypical autism)

एक प्रकार का व्यापक विकासात्मक विकार है जो बचपन के ऑटिज़्म से या तो शुरुआत की उम्र में या नैदानिक मानदंडों के सभी तीन सेटों को पूरा करने में विफल रहता है। इस उपश्रेणी का उपयोग तब किया जाना चाहिए । जब असामान्य और बिगड़ा हुआ विकास होता है जो केवल तीन साल की उम्र के बाद मौजूद होता है, और आत्मकेंद्रित के निदान के लिए आवश्यक मनोचिकित्सा के तीन क्षेत्रों में से एक या दो में पर्याप्त प्रदर्शन योग्य असामान्यताओं की कमी होती है (अर्थात् पारस्परिक सामाजिक संपर्क) , संचार, और प्रतिबंधित, रूढ़िबद्ध, दोहराव वाला व्यवहार) अन्य क्षेत्रों में विशिष्ट असामान्यताओं के बावजूद। एटिपिकल ऑटिज्म सबसे अधिक बार मंदबुद्धि व्यक्तियों में और ग्रहणशील भाषा के गंभीर विशिष्ट विकासात्मक विकार वाले व्यक्तियों में उत्पन्न होता है।

➢ असामान्य बचपन मनोविकृत
➢ ऑटिस्टिक विशेषताओं के साथ मानसिक मंदता

रिट सिंड्रोम(Rett syndrome) :– एक ऐसी स्थिति है, जो अब तक केवल लड़कियों में पाई जाती है, जिसमें स्पष्ट रूप से सामान्य प्रारंभिक विकास के बाद आंशिक या पूर्ण रूप से बोलने और हाथों के उपयोग में कौशल का नुकसान होता है, साथ में सिर के विकास में मंदी, आमतौर पर सात के बीच की शुरुआत के साथ और 24 महीने की उम्र। उद्देश्यपूर्ण हाथ आंदोलनों का नुकसान, हाथ से लिखने वाली रूढ़िवादिता, और हाइपरवेंटिलेशन विशेषता है। सामाजिक और खेल विकास को गिरफ्तार किया जाता है लेकिन सामाजिक हित को बनाए रखा जाता है।

अन्य बचपन विघटनकारी विकार(Other childhood disintegrative disorder)– एक प्रकार का व्यापक विकासात्मक विकार जिसे विकार की शुरुआत से पहले पूरी तरह से सामान्य विकास की अवधि द्वारा परिभाषित किया जाता है, जिसके बाद कुछ महीनों के दौरान विकास के कई क्षेत्रों में पहले से अर्जित कौशल का एक निश्चित नुकसान होता है। आमतौर पर, यह पर्यावरण में रुचि के सामान्य नुकसान के साथ, रूढ़िबद्ध, दोहराए जाने वाले मोटर तौर–तरीकों और सामाजिक संपर्क और संचार में ऑटिस्टिक जैसी असामान्यताओं के साथ होता है। कुछ मामलों में विकार को कुछ संबद्ध एन्सेफैलोपैथी के कारण दिखाया जा सकता है लेकिन निदान व्यवहार संबंधी विशेषताओं पर किया जाना चाहिए।

• डिमेंशिया इन्फेंटिलिस (Dementia infantili)

• विघटनकारी मनोविकृति (Disintegrative psychosi)

• हेलर सिंड्रोम (Heller syndrome)

• सहजीवी मनोविकृति(Symbiotic psychosis)

एस्परगर सिंड्रोम (Asperger syndrome) :–अनिश्चित नोसोलॉजिकल वैधता का एक विकार है, जो पारस्परिक सामाजिक संपर्क की एक ही प्रकार की गुणात्मक असामान्यताओं की विशेषता है जो ऑटिज़्म को एक प्रतिबंधित, रूढ़िबद्ध, दोहराव वाले हितों और गतिविधियों के साथ प्रदर्शन करते हैं। यह आत्मकेंद्रित से मुख्य रूप से इस तथ्य में भिन्न है कि भाषा या संज्ञानात्मक विकास में कोई सामान्य देरी या मंदता नहीं है। किशोरावस्था और वयस्क जीवन में असामान्यताओं के बने रहने की प्रबल प्रवृत्ति होती है।

• Autistic psychopathy

• Schizoid disorder of childhood

<u>व्यापक विकास संबंधी विकार International Classificationof Functioning (ICF) Checklist</u>

1: ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) के वर्तमान विश्वव्यापी प्रसार के साथ, उन स्थितियों के एक समूह को संदर्भित करता है जो पारस्परिक सामाजिक संपर्क, मौखिक और गैर–मौखिक संचार की हानि के साथ–साथ दोहराव, रूढ़िबद्ध गतिविधियों, व्यवहारों को प्राथमिकता देते हैं।

शुरुआत की उम्र हमेशा 36 महीने से पहले होती है और लक्षण जीवन भर बने रहते हैं। ये विशेषताएं संज्ञानात्मक और भावनात्मक कामकाज में विकल्प, मनोरोग सह–रुग्णता की उच्च दर, रिश्ते की समस्याएं, खराब अनुकूली कौशल और जीवन की कम रिपोर्ट की गुणवत्ता से जुड़ी हैं। निदान से परे कामकाज के अनुभवों के इस जटिल मेलजोल को पकड़ने के लिए, आईसीएफ एक व्यापक और मानकीकृत तरीके से एएसडी वाले व्यक्ति के जीवित अनुभव का वर्णन करने के लिए एक उपकरण प्रदान करता है।

आईसीएफ को बनाने के लिए, 1424 श्रेणियों का वर्गीकरण, नैदानिक अभ्यास में उपयोग के लिए अधिक व्यावहारिक, आईसीएफ कोर सेट यानी विशिष्ट स्वास्थ्य स्थितियों के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक के रूप में चयनित आईसीएफ श्रेणियों की शॉर्टलिस्ट विकसित की गई है। करोलिंस्का संस्थान और आईसीएफ अनुसंधान शाखा ने एक अंतरराष्ट्रीय, बहु–पेशेवर संचालन समिति के सहयोग से आईसीएफ कोर सेट विकसित करने की चुनौती ली है जिसका उपयोग एएसडी वाले व्यक्तियों के मूल्यांकन और अनुवर्ती कार्रवाई में किया जा सकता है।

प्रोजेक्ट टीम ने अध्ययन के लिए बच्चों और युवाओं के लिए प्ब् संस्करण (ICF&CY) का उपयोग करने का निर्णय लिया है। ICF&CY में न केवल संदर्भ वर्गीकरण ICF की सभी श्रेणियां शामिल हैं, बल्कि यह विकासशील बच्चे की विशेष विशेषताओं को भी पकड़ती है।

प्रारंभिक चरण में शामिल हैं:

• एएसडी वाले व्यक्तियों के कामकाज और अक्षमता पर शोध अध्ययनों की पहचान करने के लिए, 2008–2013 से प्रकाशित सहकर्मी–समीक्षा लेखों की एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा की गई।

• एक गुणात्मक अध्ययन किया गया जिसका उद्देश्य रोगियोंध्ग्राहकों, देखभाल करने वालों, पतिध्पत्नी, शिक्षकों के दृष्टिकोण से कामकाज के प्रासंगिक पहलुओं और प्रासंगिक कारकों की पहचान करना था। कनाडा, भारत, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका और स्वीडन के व्यक्तियों ने अध्ययन में या तो फोकस समूहों या व्यक्तिगत साक्षात्कार में भाग लिया। एक पांडुलिपि वर्तमान में लिखी जा रही है और 2016 के अंत तक एक सहकर्मी–समीक्षा पत्रिका को प्रस्तुत की जाएगी।

• एक इंटरनेट आधारित अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षण भी आयोजित किया गया था। इस अध्ययन में 10 अलग–अलग विषयों के 225 विशेषज्ञ शामिल थे और सभी डब्ल्यूएचओ विश्व क्षेत्रों का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों की राय इकट्ठा करना था, जिन पर एएसडी वाले व्यक्तियों के लिए कामकाज और स्वास्थ्य के पहलू प्रासंगिक हैं।

• नैदानिक दृष्टिकोण से एएसडी वाले व्यक्तियों द्वारा अनुभव की जाने वाली सामान्य समस्याओं का वर्णन करने के लिए, 6 यूरोपीय देशों, 2 दक्षिण अमेरिकी देशों, एक एशियाई देश और मध्य पूर्व के एक देश में एक बहुकेंद्रीय क्रॉस–अनुभागीय अध्ययन किया गया था। एक केस रिकॉर्ड फॉर्म, जिसमें अन्य बातों के अलावा एक विस्तारित आईसीएफ चेकलिस्ट के डोमेन शामिल थे, जिसका उपयोग डेटा एकत्र करने के लिए किया गया था।

Modified Checklist for Autism in Toddlers (MCHAT& R/F)– टॉडलर्स में ऑटिज्म के लिए संशोधित चेकलिस्ट, संशोधित (एम–चौट–आर) एक स्क्रीनर है जो आपके बच्चे के व्यवहार के बारे में 20 प्रश्नों की एक श्रृंखला पूछेगा। यह 16 से 30 महीने की उम्र के बच्चों के लिए अभिप्रेत है। परिणाम आपको बताएंगे कि क्या आगे के मूल्यांकन की आवश्यकता हो सकती है। आप अपने बच्चे के स्वास्थ्य सेवा प्रदाता के साथ किसी भी चिंता के बारे में चर्चा करने के लिए स्क्रीनर के परिणामों का उपयोग कर सकते हैं।

टॉडलर्स में ऑटिज्म के लिए संशोधित चेकलिस्ट (एम–चैट) को 16 महीने से 30 महीने के बीच के बच्चों में ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) की जांच के लिए डिजाइन किया गया था। सत्यापन अध्ययनों ने विभिन्न आबादी में मध्यम साइकोमेट्रिक गुणों की सूचना दी है, संभावित रूप से सार्वभौमिक स्क्रीनिंग के हिस्से के रूप में एम–चौट के उपयोग का

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

समर्थन करते हैं। एक मानकीकृत उपकरण का उपयोग करके एएसडी स्क्रीनिंग का उद्देश्य एएसडी के शुरुआती लक्षणों को व्यवस्थित रूप से पहचानना है, और American Academy of Pediatrics की सिफारिश है कि यह सभी बच्चों के लिए 18 महीने और 24 महीने में होना चाहिए। क्या सभी बच्चों के लिए स्क्रीनिंग होनी चाहिए और किस स्क्रीनिंग टूल के साथ, वर्तमान में इस पर बहस चल रही है।

मूल एम–चैट में व्यवहार के बारे में 23 प्रश्न हैं जो बहुत छोटे बच्चों में एएसडी के संभावित शुरुआती संकेत हैं। माता–पिता या देखभाल करने वाले अपने बच्चे के वर्तमान कौशल और व्यवहार के आधार पर चेकलिस्ट को पूरा करते हैं। इसकी संक्षिप्तता इसके लाभों में से एक है, जैसा कि तथ्य यह है कि इसे प्रशिक्षित चिकित्सक द्वारा नैदानिक अवलोकन के आधार पर प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता नहीं होती है। एक बच्चे को जोखिम में माना जाता है यदि वे चेकलिस्ट पर छह महत्वपूर्ण वस्तुओं (क्रिटिकल 6) या 23 में से तीन (कुल 23) में से दो से अधिक विफल हो जाते हैं। मूल अध्ययन में 1293 बच्चों की जांच की गई, जिनमें से 132 सकारात्मक पाए गए और 39 को बाद में एएसडी का पता चला। एम–चौट फॉलो–अप साक्षात्कार, माता–पिता द्वारा अनुमोदित वस्तुओं की पुष्टि के लिए उपयोग किए जाने वाले 5 से 20 मिनट के संरचित टेलीफोन साक्षात्कार, पूर्ण विकास मूल्यांकन से पहले सकारात्मक स्क्रीन वाले बच्चों के अतिरिक्त किए जा सकते हैं। सकारात्मक भविष्य कहनेवाला मूल्य (पीपीवी) में सुधार के लिए अनुवर्ती साक्षात्कार की सूचना दी गई थी। अनुवर्ती संस्करण के साथ एक संशोधित, एम–चौट–आरध्एफ, मूल एम–चौट से तीन वस्तुओं को बाहर रखा गया था और 0.14 के पीपीवी के साथ कम जोखिम वाले नमूने में मान्य किया गया था।

एम–चैट (बच्चे में ऑटिज्म के लिए संशोधित चेकलिस्ट) ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) के जोखिम का आकलन करने के लिए माता–पिता–रिपोर्ट स्क्रीनिंग टूल है। लगभग 10 मिनट में, माता–पिता 20 प्रश्नों को पूरा कर सकते हैं और अपने बच्चे के लिए ऑटिज्म जोखिम मूल्यांकन प्राप्त कर सकते हैं।बच्चे की उम्रः एम–चौट 16 से 30 महीने के बच्चों के लिए सबसे उपयुक्त है।

एम–चैट का प्राथमिक लक्ष्य एएसडी के अधिक से अधिक मामलों का पता लगाना है (वैज्ञानिक भाषा में ''संवेदनशीलता को अधिकतम करना''), इसलिए कुछ गलत–सकारात्मक होंगेः ऐसे मामले जहां एक बच्चे का मूल्यांकन ''जोखिम में'' के रूप में किया जाता है, लेकिन में तथ्य एएसडी के साथ का निदान नहीं किया जाएगा। हालांकि, ''उच्च–जोखिम'' स्कोर प्राप्त करने वाले किसी भी बच्चे को ऑटिज्म विशेषज्ञ से मूल्यांकन प्राप्त करना चाहिए।

<u>Indian Scale for Assessment of Autism (ISAA) ऑटिज्म के आकलन के लिए भारतीय पैमाना (ISAA)–</u> ऑटिज्म एक अच्छी तरह से प्रलेखित विकासात्मक विकलांगता है, ऑटिज्म के मूल्यांकन और निदान के लिए अधिकांश स्क्रीनिंग और नैदानिक उपकरण पश्चिमी आबादी के लिए अभिप्रेत हैं। चूंकि किसी भी विकार या अक्षमता की समझ में सांस्कृतिक प्रभाव के महत्व को कम नहीं किया जा सकता है, यह अनिवार्य था कि भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्तियों के आकलन के लिए एक उपकरण विकसित किया जाए।

ISAA एक व्यक्तिगत रूप से प्रशासित उपकरण है जिसमें आत्मकेंद्रित व्यक्तियों के सामाजिक संबंधों, संचार और व्यवहार पैटर्न में हानि की विशेषता को मापने वाले छह डोमेन शामिल हैं। उपकरण की परीक्षण वस्तुओं का निर्माण आमतौर पर ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली गतिविधियों की श्रेणी से किया गया था। इस प्रकार की विकलांगता की असमान विकास विशेषता को निर्धारित करने के लिए सामान्य और मानसिक मंदता और अन्य मानसिक बीमारियों वाले व्यक्तियों के तुलना समूह का परीक्षण किया गया।

Indian Scale for Assessment of Autism (ISAA)–ऑटिज्म के आकलन के लिए भारतीय स्केल (आईएसएए): आईएसएए एक 40 आइटम स्केल है जो छह डोमेन में विभाजित है–

- सामाजिक संबंध और पारस्परिकता (9 प्रश्न)
- भावनात्मक जवाबदेही (5 प्रश्न)
- भाषण – भाषा और संचार (9 प्रश्न)
- व्यवहार पैटर्न (7 प्रश्न)
- संवेदी पहलू (6 प्रश्न)

- संज्ञानात्मक घटक (4 प्रश्न)।

निम्नलिखित डोमेन के साथ किसी विशेष व्यवहार की तीव्रता, आवृत्ति और अवधि के आधार पर आईएसएए के प्रत्येक आइटम के लिए स्कोर 1–5 से होता हैः

- स्कोर 1 = दुर्लभ (20ः तक),
- स्कोर 2 = कभी–कभी (21–40)
- स्कोर 3 = बार–बार (41–60ः)
- स्कोर 4 = अधिकतर (61–80ः)
- स्कोर 5 = हमेशा (81ः–100ः)।

स्कोरिंग माता–पिता से मिली जानकारी और आईएसएए के मैनुअल के दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए बच्चे के अवलोकन पर आधारित है।

भाषण–भाषा और संचार क्षेत्र में बच्चे को 5 का दर्जा दिया जाना चाहिए यदि उसने कभी भाषण या संचार विकसित नहीं किया है। कुल ै।। स्कोर 40–200 के बीच है। सबसे कम स्कोर ऐसे किसी भी लक्षण या लक्षण का प्रतिनिधित्व नहीं करता है जो केवल बहुत कम ही मौजूद थे, और अधिकतम स्कोर एडी की सबसे गंभीर प्रस्तुति को दर्शाता है। निम्नलिखित श्रेणियों की सिफारिश की जाती है।

- अतिअल्प आटिज्मः 70–107(mild AD: 70–107),
- अल्प आटिज्मः 108–153 (moderate AD: 108–153)
- गंभीर आटिज्मः 153, (severe AD: 153.)

AIIMS & Modified INCLEN Diagnostic Tool for Autism Spectrum Disorder - आत्मकेंद्रित स्पेक्ट्रम विकार के लिए एम्स–संशोधित INCLEN नैदानिक उपकरण- संशोधित INCLEN टूल को विशेषज्ञों की एक टीम द्वारा मौजूदा टूल (2–9 वर्ष) को संशोधित करके 1 महीने से 18 वर्ष तक की आयु सीमा को बढ़ाने और जनवरी और जून के बीच उत्तर भारत के तृतीयक देखभाल शिक्षण अस्पताल में व्यापक रोगसूचकता शामिल करने के लिए मान्य किया गया था। 2015 में एक योग्य चिकित्सा स्नातक ने उम्मीदवार उपकरण को लागू किया जिसके बाद गोल्ड स्टैन्टर्ड मूल्यांकन एक बाल रोग विशेषज्ञ द्वारा किया गया।

निर्माण और इसके उप–निर्माण को भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में इसकी उपयुक्तता के लिए अनुकूलित किया गया था और नैदानिक कार्य के दौरान मूल्यांकन करने के लिए चिकित्सकों और मनोवैज्ञानिकों के लिए लक्षण समूहों में परिवर्तित किया गया था। टूल को ASD (INDT&ASD) के लिए INCLEN डायग्नोस्टिक टूल नाम दिया गया था।

टूल के दो खंड हैंः खंड ए में 29 लक्षणध्वस्तुएं हैं और खंड बी में डीएसएम–आईवी–टीआर के बी और सी डोमेन से संबंधित 12 प्रश्न हैं, शुरुआत का समय, लक्षणों की अवधि, स्कोर और नैदानिक एल्गोरिथम। उपकरण को प्रशासित करने और स्कोर करने में लगभग 45–60 मिनट लगते हैं। मूल्यांकनकर्ता तथा साक्षात्कारकर्ता को एक ट्राइकोटोमस एंडोर्समेंट विकल्प ('हां', 'नहीं', 'अनिश्चित/लागू नहीं') दिया जाता है। इसके अलावा, चिकित्सक/मनोवैज्ञानिक को बच्चे पर व्यवहार संबंधी अवलोकन करना होता है और आइटम को भी स्कोर करना होता है। माता–पिता की प्रतिक्रिया और साक्षात्कारकर्ता के मूल्यांकन में किसी भी विसंगति के लिए, प्रत्येक प्रश्न के लिए यह इंगित किया जाता है कि क्या माता–पिता की प्रतिक्रिया या मूल्यांकनकर्ता के अवलोकन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। प्रत्येक लक्षणध्वस्तु को 'हां' के लिए '1' और 'नहीं' के लिए '0' या 'अनिश्चित/लागू नहीं' का अंक दिया जाता है।

INCLEN diagnostic tool for autism spectrum disorder (INDT&ASD tool) ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार के लिए INCLEN डायग्नोस्टिक टूल (INDT&ASD टूल)– ऑटिज्म के निदान के लिए आईएनडीटी–एएसडी उपकरण ऑटिज्म के निदान तक पहुंचने के लिए प्राथमिक देखभाल चिकित्सक द्वारा ऑटिज्म का निदान था। उपकरण को 49 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों की टीम द्वारा विकसित किया गया था। विशेषज्ञों में बाल रोग विशेषज्ञ, बाल रोग विशेषज्ञ, महामारी विशेषज्ञ, नैदानिक

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

मनोवैज्ञानिक, विशेष शिक्षक शामिल हैं। टीम ने एक उपयुक्तता मानदंड विकसित किया और उपकरण को 2 दिवसीय कार्यशाला में विकसित किया गया।

टूल में दो सेक्शन हैंः सेक्शन ए में 29 लक्षण/आइटम हैं और सेक्शन बी में सेक्शन ए के आधार पर प्रतिक्रिया से संबंधित 12 प्रश्न हैं। टूल को प्रशासित करने में 45–60 मिनट लगते हैं।

उपकरण में माता–पिता की प्रतिक्रिया और अवलोकन का संयोजन है। उपकरण को शुरू में अंग्रेजी में विकसित किया गया था और फिर आगे और पीछे हिंदी और अंग्रेजी में अनुवाद किया गया था।

आईएनडीटी एएसडी टूल का डायग्नोस्टिक प्रदर्शन इस प्रकार हैः डायग्नोस्टिक सटीकता ख्एयूसी = 0.97 (0.93, 0.99)य पीढ0.001,, संवेदनशीलता 98ः, विशिष्टता 95ः, पीपीवी 91ः, एनपीवी 99ः'। INDT & ASD और ASD समूह' के लिए विशेषज्ञ निदान के बीच समन्वय दर 82.52ः थी ख्ब्वीमद' ज्ञ=0.89य 95ः सीआई (0.82,0.97)य पी = 0.001,। कारों के साथ अभिसरण वैधता (आर = 0.73, पी = 0.001)। आईएनडीटी–एएसडी की खूबियों में उच्च नैदानिक सटीकता, पर्याप्त सामग्री वैधता, अच्छी आंतरिक स्थिरता, उच्च मानदंड वैधता, उच्च से मध्यम अभिसरण वैधता और प्रशासन में आसान शामिल हैं। कुछ प्रमुख चिंताएं विशेष रूप से कैड–प्ट से कैड–5 में संशोधन के आलोक में इसे अपग्रेड करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, वर्तमान उपकरण में आत्मकेंद्रित की गंभीरता को ग्रेड करने के लिए गंभीरता स्कोरिंग का अभाव है। कैड–प्ट से कैड–5 में संशोधन के आलोक में, वर्तमान उपकरण को व्यवहार के दोहराव पैटर्न के उन्नयन की आवश्यकता है, `िक का निदान करने के लिए उपयोग किया जाता है।

Childhood Autism Rating Scale 2nd edition (CARS–2) चाइल्डहुड ऑटिज्म रेटिंग स्केल दूसरा संस्करण (CARS–2)–चाइल्डहुड ऑटिज्म रेटिंग स्केल–सेकंड एडिशन (CARS2) एक 15–आइटम रेटिंग स्केल है जिसका उपयोग ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों की पहचान करने और उन्हें विकासात्मक विकलांग लोगों से अलग करने के लिए किया जाता है। यह अनुभवजन्य रूप से मान्य है और प्रत्यक्ष व्यवहार अवलोकन के आधार पर संक्षिप्त, उद्देश्यपूर्ण और मात्रात्मक रेटिंग प्रदान करता है। यह ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकारों वाले 1,034 व्यक्तियों के नमूने पर निर्धारित किया गया था।

CARS का यह दूसरा संस्करण परीक्षण के नैदानिक मूल्य का विस्तार करता है, जिससे यह ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकारों के ''उच्च कामकाज'' के अंत में व्यक्तियों के लिए अधिक प्रतिक्रियाशील हो जाता है। 4–पॉइंट रेटिंग स्केल का उपयोग करते हुए, चिकित्सक प्रत्येक आइटम पर व्यक्ति को रेट करता है। रेटिंग प्रश्न में व्यवहार की आवृत्ति, उसकी तीव्रता, विशिष्टता और अवधि पर आधारित होती हैं।चिकित्सक, विशेष शिक्षक, स्कूल मनोवैज्ञानिक, स्पीच पैथोलॉजिस्ट और ऑडियोलॉजिस्ट सभी के लिए CARS–2 देना और स्कोर करना आसान होगा।

CARS–2 में तीन रूप शामिल हैंः

1. मानक संस्करण रेटिंग पुस्तिका (CARS2&ST): मूल CARS के बराबर; 6 वर्ष से कम उम्र के व्यक्तियों और संचार कठिनाइयों वाले या औसत से कम अनुमानित आईक्यू वाले लोगों के साथ उपयोग के लिए ।

2. हाई–फंक्शनिंग वर्जन रेटिंग बुकलेट (CARS2&HF): मौखिक रूप से धाराप्रवाह व्यक्तियों, 6 वर्ष और उससे अधिक उम्र के आकलन के लिए एक विकल्प, 80 से ऊपर आईक्यू स्कोर के साथ।

3. माता–पिता या देखभाल करने वालों के लिए प्रश्नावली (CARS2 & QPC): एक बिना स्कोर वाला पैमाना जो CARS2ST और CARS2 & HF रेटिंग बनाने में उपयोग के लिए जानकारी एकत्र करता है।

मानक और उच्च–कार्यशील रूपों में से प्रत्येक में निम्नलिखित कार्यात्मक क्षेत्रों को संबोधित करने वाले 15 आइटम शामिल हैंः

- लोगों से संबंधित
- नकल (एसटी)

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

- सामाजिक–भावनात्मक समझ (एचएफ)
- भावनात्मक प्रतिक्रिया (एसटी)
- भावनात्मक अभिव्यक्ति और भावनाओं का विनियमन (एचएफ)
- शारीरिक उपयोग(Body Use)
- वस्तु उपयोग (एसटी)
- खेल में वस्तु का उपयोग (एचएफ)
- परिवर्तन के लिए अनुकूलन (एसटी)
- परिवर्तन/प्रतिबंधित रुचियों (एचएफ) के लिए अनुकूलन
- दृश्य प्रतिक्रिया (Visual Response)
- सुनने की प्रतिक्रिया (Listening Response)
- स्वाद, गंध और स्पर्श प्रतिक्रिया और उपयोग
- भय या घबराहट (एसटी)
- डर या चिंता (एचएफ)
- मौखिक संवाद (Verbal Communication)
- अशाब्दिक संचार
- गतिविधि स्तर (एसटी)
- सोच/संज्ञानात्मक एकीकरण कौशल (एचएफ)
- बौद्धिक प्रतिक्रिया का स्तर और निरंतरता
- सामान्य प्रभाव

जिस व्यक्ति का मूल्यांकन किया जा रहा है उसके माता–पिता या देखभाल करने वाला इस बिना स्कोर वाले फॉर्म को पूरा करता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य चिकित्सक को CARS2 & ST या CARS2 & HF रेटिंग के आधार पर अधिक जानकारी देना है। प्रश्नावली में व्यक्ति के प्रारंभिक विकास को शामिल किया जाता है। सामाजिक, भावनात्मक और संचार कौशल; दोहरावदार व्यवहारय खेल और दिनचर्याय और असामान्य संवेदी रुचियां।

EXAM TRICKY
Notes For Pyssum
SPECIAL EDUCATION

Unit :– 3.2

Assessments of Learning Styles and Strategies (Behavioural, Functional, adaptive, Educational, and vocational) सीखने की शैलियों और रणनीतियों का आकलन (व्यवहार, कार्यात्मक, अनुकूली, शैक्षिक और व्यावसायिक) – शिक्षकों को यह पता लगाना होगा कि उनके छात्र कैसे सीखते हैं। तीन मुख्य अलग–अलग सीखने की शैलियाँ हैंः दृश्य, श्रवण, और स्पर्श / गतिज सीखने वाले। छात्रों के सीखने का आकलन करने के लिए, आप उन्हें स्कूल वर्ष की शुरुआत में सीखने की शैली का आकलन दे सकते हैं। यह न केवल शिक्षक की मदद करेगा, बल्कि यह छात्रों को यह भी जानकारी देता है कि वे कैसे सीखते हैं। यहां एक सरल आकलन है जो आप कर सकते हैं। इसे करने का सबसे आसान तरीका यह है कि आकलन को तीन खंडों में विभाजित किया जाए, प्रत्येक अलग–अलग सीखने की शैलियों के लिए, लेकिन छात्रों को यह न बताएं कि कौन सा अनुभाग कौन सा है।

सीखने की शैलियाँ (Styles of Learning)–हम सीखने के तौर–तरीकों को एक संवेदी मार्ग के रूप में परिभाषित करते हैं जिसमें छात्र सीखते हैं। वे अपने तौर–तरीकों या सीखने की शैलियों के माध्यम से जानकारी लेते हैं, साझा करते हैं और संग्रहीत करते हैं। सीखने की शैलियों की मात्रा के बारे में कई मत हैं। अधिकांश शिक्षक इन तीनों पर अधिकांश कक्षाओं में पाई जाने वाली सीखने की शैलियों के रूप में सहमत हैंः

- दृश्य शिक्षार्थी चीजों को पसंद करते हैं और रिश्तों को समझते हैं।
- श्रवण शिक्षार्थी पाठ सुनना पसंद करते है।

➢ सीखने के लिए गतिज / स्पर्शनीय शरीर।

दृश्य, श्रवण, और गतिज/स्पर्श तीन सीखने के तरीके हैं। हो सकता है कि आपको इस बात की जानकारी न हो कि आपकी सीखने की शैली का कक्षा के अंदर और बाहर आपके अनुभवों पर क्या प्रभाव पड़ता है। आप अपनी सीखने की शैली का पता कैसे लगा सकते हैं? आपका तौर–तरीका क्या है?

एक शिक्षक के रूप में अपनी शक्तियों का उपयोग करने से आपके छात्रों में सीखने की शैलियों को समायोजित करने में मदद मिल सकती है। आप अपने स्वयं के सीखने के तौर–तरीकों का निर्धारण कैसे कर सकते हैं? इन स्थितियों में अपने बारे में सोचें।

वर्तनी – एक नए शब्द की वर्तनी की कोशिश करते समय, क्या आप शब्द (दृश्य) को चित्रित करने का प्रयास करते हैं, अक्षरों और ध्वनियों (श्रवण) पर भरोसा करने के लिए अपने ध्वन्यात्मक कौशल का उपयोग करते हैं, या लिखते हैं ?

किसी परिचित से टकराना – जब आप किसी ऐसे व्यक्ति से टकराते हैं जिससे आप एक या दो बार मिले हैं, तो क्या आप चेहरों को याद करने में अच्छे हैं लेकिन नाम (दृश्य) नहीं, नाम याद रखते हैं लेकिन चेहरे (श्रवण) नहीं, या उन चीजों को याद करते हैं जो आपने इस व्यक्ति के साथ की थीं (गतिज/ स्पर्शनीय)?

कुछ नया करना – क्या आपको चित्र या चित्र (दृश्य) देखने की जरूरत है, मौखिक निर्देशों (श्रवण) की जरूरत है, या क्या आप बस व्यस्त होना और इसे समझने के लिए पसंद करते हैं (काईनेस्थेटिक/स्पर्शीय)?

प्रशासन से जानकारी प्राप्त करना – जब आपके प्रधानाचार्य आपको जानकारी देना चाहते हैं, तो क्या आप इसे मेमो या ईमेल (दृश्य) में पढ़ना पसंद करते हैं, इसे ध्वनि मेल (श्रवण) में सुनना पसंद करते हैं, या आमने–सामने की बैठक में भाग लेना पसंद करते हैं (कीनेस्थेटिक) / स्पर्शनीय)?

हमें आपने छात्रों के सीखने की शैलियों का आकलन क्यों करना चाहिए?

जीवन में जिन लोगों से हमारा सामना होता है, वे आमतौर पर हमसे अलग होते हैं और इसी तरह हमने उनसे अलग चीजों का अनुभव किया है। वास्तव में, यह कहा जा सकता है कि सीखने की प्रक्रिया के बारे में भी यही सच है। हर कोई अलग तरह से सीखता है, इसलिए यह समझ में आता है कि स्कूल इसके अनुसार समायोजित करते हैं। हालाँकि, ऐसा नहीं हुआ है। सामान्य तौर पर, शिक्षक छात्रों को दो ट्रैक – भाषाई और गणितीय में समूहित करने के आदी रहे हैं। इस प्रक्रिया में, शिक्षक यह पहचानने में असफल हो सकते हैं कि छात्र अलग तरीके से सीखते हैं, इसलिए इन आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए निर्देश को समायोजित किया जाना चाहिए।

टॉमलिंसन (1999) का कहना है "कि क्षमता को अधिकतम करने के लिए शिक्षकों को एक छात्र से उसके स्तर पर मिलना चाहिए।" हालांकि अभी तक ऐसा नहीं हो पाया है। इसके बजाय, शिक्षा भाषाई क्षमताओं को पढ़ाने के लिए तैयार है

(पीटरसन, 1994)। संक्षेप में," वर्तमान प्रणाली सभी शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को समायोजित नहीं करती है। अक्सर, जो बच्चे भाषाई रूप से अच्छा नहीं करते हैं, वे वही बच्चे होते हैं जो स्कूल में अच्छा नहीं करते हैं"

(पीटरसन, 1994)। साहित्य सुझाव देता है (कैंपबेल, मिलबोर्न, और सिल्वरमैन, 2001य विलियम्स, 1983य और आर्मस्ट्रांग, 2001) कि जो बच्चे इस निरंतरता में फिट नहीं होते हैं वे पीछे छूट जाते हैं। वास्तव में, इनमें से कई बच्चों को कमजोरी के रूप में देखा जाता है, इस प्रकार उन्हें विशेष कक्षाओं में रखा जाता है।

एक छात्र द्वारा सीखे जाने वाले विभिन्न तरीकों को शामिल करने के लिए मूल्यांकन प्रथाओं को निर्देश को अनुकूलित करने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता हो सकती है। छोटे बच्चों की ताकत और सीमाओं का आकलन करना आवश्यक है, क्योंकि यह बच्चे के स्कूल में प्रवेश करने से पहले उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकता है। समस्याओं को विकसित करना शुरू करने से पहले छात्रों से मिलने में मदद करने के लिए आकलन एक वांछित उपकरण हो सकता है। हालांकि, यह सुझाव

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

दिया जाता है कि एक अच्छे मूल्यांकन में इस बारे में जानकारी शामिल होगी कि बच्चा क्या जानता है, बच्चा क्या कर सकता है, बच्चा कैसे सीखता है, और कोई चिंता या समस्या कहां है (रूडोल्फ, 1999)।

Unit :– 3.3

Differential Diagnosis विभेदक निदान– जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर एक विविध स्थिति है, इसका मतलब है कि उपरोक्त नैदानिक विशेषताएं पैमाने के शीर्ष छोर पर बहुत हल्की हानि के साथ नीचे के अंत में उपरोक्त कार्यों की अधिक गंभीर हानि के साथ एक निरंतरता पर मौजूद हैं।इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि नीचे वर्णित कई नैदानिक स्थितियां हैं, जो एएसडी की कुछ विशेषताओं को साझा करती हैं। इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं है कि उन्हें गलती से एएसडी के रूप में लेबल किया जा सकता है। चीजों को और अधिक जटिल बनाने के लिए, नीचे दी गई कई स्थितियां आमतौर पर एएसडी के साथ सह–हो सकती हैं। इसलिए, जैसा कि आप समझ सकते हैं, इसमें शामिल जटिलताओं के कारण, विशेषज्ञ भी इसे गलत मान सकते हैं।

इसके अलावा, चूंकि एएसडी एक आजीवन निदान है और चूंकि एक गलत निदान से बच्चे और परिवार के लिए खराब परिणाम हो सकते हैं, इसलिए एएसडी के निदान पर पहुंचने के लिए एक विस्तृत मूल्यांकन करना अनिवार्य हो जाता है, और इसकी संभावना को खारिज कर देता है। नीचे दी गई शर्तें जो एएसडी के रूप में नकल कर सकती हैं।

विभेदक निदान का सीधा सा अर्थ है कि निदान की एक से अधिक संभावनाएँ हैं। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी 'डिफरेंशियल डायग्नोसिस' को 'दो या दो से अधिक स्थितियों के बीच अंतर करने की प्रक्रिया' के रूप में वर्णित करती है जो समान लक्षण साझा करते हैं।कुछ स्थितियां भ्रामक रूप से एएसडी के समान हो सकती हैं और बच्चे के विकार और उसके प्रबंधन के बारे में अंतिम निर्धारण करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। कोई भी स्थिति जो भाषा में देरी से जुड़ी हो सकती है, विशेष रूप से जिनका इलाज किया जा सकता है, उन पर विचार किया जाना चाहिए।

निम्नलिखित कुछ शर्तें हैं जो एएसडी के रूप में नकल या प्रस्तुत कर सकती हैं। मैंने उन्हें किसी विशेष क्रम में सूचीबद्ध नहीं किया है। हालांकि, सूची के शीर्ष आधे हिस्से की स्थितियों पर निचले आधे हिस्से की स्थितियों की तुलना में अधिक बार विचार करने की आवश्यकता है।

1. सीखने की अक्षमता/बौद्धिक विकलांगता (एलडी/आईडी):– सीखने की अक्षमता यूके में अधिक सामान्यतः इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है (और यूएस में हमारे सहयोगी, आईडी या बौद्धिक अक्षमता शब्द का उपयोग करते हैं), महत्वपूर्ण वैश्विक विकासात्मक देरी वाले किसी भी बच्चे के लिए। मेरे अनुभव पर विचार करते हुए, कम से कम दो महत्वपूर्ण कारणों से एलडीध्आईडी मेरी सूची में सबसे ऊपर होना चाहिए। सबसे पहले, एएसडी वाले कई बच्चों के पास एलडी की डिग्री हो सकती है, जिससे एएसडी मूल्यांकन के हिस्से के रूप में विकासात्मक मूल्यांकन करने की आवश्यकता महत्वपूर्ण हो जाती है। दूसरा, एलडी वाले बच्चों को एएसडी के रूप में भ्रमित करना आम बात है, क्योंकि एलडी वाले बच्चे कई कारणों से दोहराव वाले व्यवहार में संलग्न होते हैं। विकासात्मक मूल्यांकन करने से पता चलेगा कि एलडी वाले बच्चों की भाषा क्षमता उनकी संज्ञानात्मक क्षमता के अनुरूप है। इसके अलावा, एलडी वाले बच्चों में बेहतर गैर–मौखिक संचार क्षमता और भावनात्मक पारस्परिकता की एक उचित डिग्री होती है, जबकि एएसडी वाले बच्चे नहीं करते हैं।

2. एडीएचडी (ADHD) :– एएसडी वाले बच्चों में एडीएचडी के साथ भ्रमित होना आम बात है। अति सक्रियता के साथ गुस्सा नखरे और दोहराव वाले व्यवहार को गलत किया जा सकता है। और आंखों के संपर्क से बचने को असावधानी से भ्रमित किया जा सकता है। हालांकि, एडीएचडी वाले बच्चे आवेगी और दबंग होने की संभावना रखते हैं। उनके पास कल्पनाशील खेल के लिए बेहतर क्षमताएं हैं और उनकी जरूरतों को संप्रेषित करने का इरादा है। दूसरी ओर, एएसडी वाले बच्चे दूर, अलग–थलग होने और अपनी जरूरतों को संप्रेषित करने के इरादे और क्षमता को क्षीण करने की संभावना रखते हैं। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि एएसडी और एडीएचडी दोनों सह–हो सकते हैं।

3. सामाजिक संचार विकार (Social Communication Disorder) :– एससीडी वाले बच्चों को एएसडी होने के रूप में भ्रमित करना आसान है क्योंकि इन दोनों स्थितियों में बच्चों में मौखिक और गैर–मौखिक संचार क्षमताएं खराब होती हैं। हालाँकि, जैसा कि

EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION Notes For Pyssum

कैड–5 मैनुअल ने निर्दिष्ट किया है, ौक वाले बच्चों के विपरीत, ॅब्क बच्चों में व्यवहार और गतिविधियों के प्रतिबंधित और दोहराव वाले पैटर्न नहीं होते हैं।

4. प्रतिभाशाली और प्रतिभाशाली(Gifted and talented) :– जो बच्चे प्रतिभाशाली और प्रतिभाशाली होते हैं उनमें उच्च बुद्धि और अविश्वसनीय रूप से अच्छी याददाश्त होती है। ये बच्चे, जब उन्हें सह–मौजूदा चिंता होती है, एएसडी की नकल कर सकते हैं। फिर भी, प्रतिभाशाली और प्रतिभाशाली बच्चे सामाजिक संपर्क चाहते हैं और सामाजिक संदर्भ के लिए उपयुक्त भाषा को समझने और उपयोग करने की अच्छी क्षमता रखते हैं।

5. चिंता (Anxiety) :– एएसडी वाले बच्चों में चिंता एक सामान्य सह–रुग्णता हो सकती है। सामाजिक चिंता विकार या चयनात्मक उत्परिवर्तन वाले बच्चों में कई विशेषताएं हो सकती हैं जो एएसडी के साथ ओवरलैप होती हैं। हालांकि, एएसडी वाले बच्चों के विपरीत, इन बच्चों के पास अच्छा कल्पनाशील खेल कौशल होता है और वे अपने माता–पिता और देखभाल करने वालों को अपनी जरूरतों के बारे में बताने में सक्षम होते हैं।

6. भाषा विकार (Language Disorder) :– भाषा विकार वाले बच्चे एएसडी से भिन्न होते हैं, इसमें वे अपनी जरूरतों को संप्रेषित करने के लिए बेहतर प्रेरणा और इरादे रखते हैं। उनकी गैर–मौखिक संचार क्षमताएं एएसडी वाले बच्चों की तरह ही प्रभावित नहीं होती हैं। इसके अलावा, एएसडी के विपरीत, उनके पास एक बेहतर कल्पनाशील नाटक है।

7. बहरापन(Hearing Impairment):– एएसडी वाले बच्चों के माता–पिता के लिए यह आश्चर्य करना आम बात है कि उनका बच्चा बहरा है या श्रवण बाधित है। इसका कारण यह है कि, एएसडी वाले बच्चों की तरह, श्रवण दोष वाले बच्चे अपने नाम पर प्रतिक्रिया की कमी प्रदर्शित करते हैं, कम से कम बड़बड़ाते हैं, और अपनी जरूरतों को संप्रेषित करने के लिए भाषा का उपयोग करने में कठिनाई होती है। लेकिन एएसडी के विपरीत, श्रवण बाधित बच्चों के पास एक अच्छा कल्पनाशील खेल हो सकता है, अच्छी आंखों से संपर्क हो सकता है, और कई तरह के इशारों, चेहरे के भाव और शरीर की भाषा के साथ खुद को व्यक्त कर सकते हैं।

8. अनुलग्नक विकार(Attachment Disorder) :–प्रारंभिक महीनों और वर्षों में महत्वपूर्ण माता–पिता के अभाव और या उपेक्षा का इतिहास लगाव विकार वाले बच्चों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जो एएसडी वाले बच्चों में अनुपस्थित है। साथ ही, लगाव विकार वाले बच्चे अपनी सामाजिक बातचीत और भाषा क्षमताओं का विकास तब करते हैं जब उन्हें उपयुक्त देखभाल करने वाले वातावरण में रखा जाता है।

9. रिग्रेशन एंड रेट्ट्स(Regression and Rett's):– 'रिग्रेशन' शब्द का प्रयोग तब किया जाता है, जब किसी बच्चे का हाथ कौशल और या भाषण और भाषा क्षमताओं को खोने का इतिहास होता है, जिसे उन्होंने पहले हासिल किया था। यह वास्तव में माता–पिता से संबंधित हो सकता है। Rett's syndrome एक नैदानिक स्थिति है जो विशेष रूप से लड़कियों में होती है, क्योंकि MECP2 नामक एक विशिष्ट जीन में उत्परिवर्तन होता है। इस स्थिति में, जो लड़कियां आमतौर पर विकसित होती दिखाई देती हैं, उनकी बोलने की क्षमता और दैनिक गतिविधियों के लिए हाथों का उपयोग करने की उनकी क्षमता कम हो जाती है। रेट्ट्स सिंड्रोम, बचपन के विघटनकारी विकार के साथ, अब ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर के तहत वर्गीकृत नहीं किया गया है, जब डीएसएम को 2013 में संशोधित किया गया था।

10. आनुवंशिक विकार और सिंड्रोमिक(Genetic disorders and Syndromic) :–एक दर्जन से अधिक सिंड्रोम हैं जिनमें एएसडी के साथ अतिव्यापी विशेषताएं हैं। इसके अलावा, एएसडी आमतौर पर कुछ स्थितियों जैसे कि फ्रैगाइल एक्स, फेटल अल्कोहल स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर, डाउन सिंड्रोम आदि के साथ होता है। एक न्यूरोडेवलपमेंटल बाल रोग विशेषज्ञ द्वारा एक विस्तृत मूल्यांकन इन स्थितियों की पहचान कर सकता है।

11. इनहेरिटेड मेटाबोलिक डिसऑर्डर Inherited Metabolic Disorder (IMD):–कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन मेटाबॉलिज्म के विकार वाले बच्चे सीखने की अक्षमता, सुनने की दुर्बलता, दृष्टि हानि, विकासात्मक प्रतिगमन और खाद्य असहिष्णुता के साथ उपस्थित हो सकते हैं। एएसडी वाले बच्चों में आईएमडी की उपस्थिति सौभाग्य से दुर्लभ है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

12.मिर्गी (Epilepsy) :–कुछ मिर्गी जैसे लैंडौ क्लेफनर सिंड्रोम (एलकेएस), हालांकि दुर्लभ, बच्चे को भाषा समझने की क्षमता खोने, व्यवहारिक प्रकोपों को प्रदर्शित करने और गुस्से में नखरे दिखाने के साथ पेश कर सकते हैं। एक ईईजी (इलेक्ट्रोएन्सेफलोग्राम ध मस्तिष्क का अनुरेखण) एएसडी जैसे लक्षणों के कारण के रूप में दौरे की पहचान करने में मदद कर सकता है।

13. टौरेटे(Tourette's) :–टॉरेट सिंड्रोम वाले बच्चों और साथ में एडीएचडी लक्षणों को एएसडी होने के लिए गलत समझा जा सकता है, क्योंकि बिगड़ा हुआ सामाजिक संपर्क कौशल और सामाजिक संचार कौशल अचानक उच्चारण, संक्षिप्त लेकिन दोहराव वाले टिक्स आदि के लिए माध्यमिक है।

14. जुनूनी–बाध्यकारी विकार Obsessive & Compulsive Disorder (OCD):– एएसडी और ओसीडी दोनों में समान लक्षण हो सकते हैं। हालांकि, एएसडी के विपरीत, ओसीडी वाले बच्चों में बेहतर सामाजिक संपर्क और सामाजिक संचार कौशल होते हैं। इसके अलावा, एएसडी वाले बच्चों के विपरीत, ओसीडी वाले बच्चे अपने लक्षणों को परेशान करने वाले पाते हैं।

15.संवेदी प्रसंस्करण कठिनाइयाँ (Sensory Processing Difficulties):– एसपीडी 2013 में डीएसएम के नवीनतम संशोधन तक एएसडी के लिए नैदानिक मानदंड का हिस्सा नहीं था। एएसडी के निदान के लिए एसपीडी को एक विशेषता के रूप में शामिल करना मददगार रहा है, क्योंकि मुझे कुछ डिग्री का सामना करना पड़ता है। एएसडी वाले बच्चों में लगभग सार्वभौमिक रूप से संवेदी कठिनाइयों का। एसपीडी वाले बच्चे ध्वनि, दृष्टि, गंध, स्पर्श और गति की विभिन्न संवेदनाओं के प्रति अतिसंवेदनशील या हाइपोसेंसिटिव हो सकते हैं। इसलिए, एसपीडी वाले बच्चे संवेदी चाहने वाले हो सकते हैं या कुछ संवेदनाओं से बेहद परहेज कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कुछ लोग गलती से उन्हें एएसडी मान लेते हैं। कैड–5 में SPD को एक अलग नैदानिक विकार के रूप में मान्यता नहीं दी गई है।

16.दृष्टि हानि (VI):– दृष्टिबाधित बच्चों में ऐसी विशेषताएं हो सकती हैं जो एएसडी की नकल करती हैं क्योंकि उनके सामाजिक दृष्टिकोण, सामाजिक संपर्क, संचार और प्रतिबंधात्मक व्यवहार में कुछ गुणात्मक अंतर हैं। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि VI और ASD सह–हो सकते हैं।

जैसा कि आप देख सकते हैं, उपरोक्त सूची में कई शर्तें शामिल हैं जिन पर एएसडी का निदान करने से पहले विचार करने, विचार करने और खारिज करने की आवश्यकता है। फिर भी, यह सूची किसी भी तरह से संपूर्ण नहीं है। इसलिए, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर के सटीक निदान के लिए एक व्यापक नैदानिक मूल्यांकन आवश्यक है।

EXAM TRICKY
Notes For Pyssum
SPECIAL EDUCATION

Unit:– 3.4

Assessment of associated conditions संबद्ध स्थितियों का आकलन–प्रभावित बच्चों में एएसडी अभिव्यक्तियों की विविधता के बावजूद, वे अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन के डीएसएम –5 में चित्रित मुख्य घाटे को साझा करते हैं। इसमें गंभीरता स्तर मानदंड और सामाजिक (व्यावहारिक) संचार विकार (एसपीसीडी) के लक्षणों के साथ एएसडी लक्षणों के वर्णनकर्ता शामिल हैं, हालांकि बिना गंभीरता के स्तर दिए गए हैं।

एएसडी के निदान के लिए सामाजिक संचार और सामाजिक संपर्क की तीन विशेषताओं और व्यवहार के प्रतिबंधित दोहराव पैटर्न (आरआरपीबी) की दो विशेषताओं में हानि के प्रमाण की आवश्यकता होती है। लक्षण प्रारंभिक विकास में मौजूद होना चाहिए और खराब दैनिक कार्य का कारण बनना चाहिए। सामाजिक संचार और सामाजिक संपर्क, और त्त्च्ठ गंभीरता स्तर दोनों कार्य करने के लिए व्यक्तिगत जरूरतों के समर्थन की डिग्री पर आधारित हैंः हल्का, पर्याप्त, और बहुत पर्याप्त समर्थन। निदान में साथ में होने वाली बौद्धिक हानि, भाषा की दुर्बलता, या संबंधित ज्ञात चिकित्सा, आनुवंशिक, या अन्य स्थितियों की उपस्थिति या अनुपस्थिति भी निर्दिष्ट होनी चाहिए।क्सर ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों में ऐसे संकेत और लक्षण होते हैं जिन्हें केवल ऑटिज्म के निदान द्वारा आसानी से समझाया नहीं जा सकता है। ऑटिज्म के साथ अन्य चिकित्सीय और मानसिक स्थितियां सह–अस्तित्व में हो सकती हैं, जिनमें शामिल है–

- Learning difficulties
- Epilepsy

- Speech and Language problems
- Attention Deficit / Hyperactivity Disorder (ADHD)
- Developmental Co&ordination Disorder (DCD)
- Tourette's Syndrome and Tics
- Feeding and Eating

यह एक विस्तृत सूची नहीं है, लेकिन हम संक्षेप में कुछ सबसे सामान्य स्थितियों और कठिनाइयों पर विचार करेंगे, जिनका निदान ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे में भी किया जा सकता है।

1. सीखने की कठिनाइयाँ (Learning Difficulties) :–जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, क्लासिक ऑटिज्म वाले लगभग 70ः बच्चों का आईक्यू 70 से नीचे है और इसलिए उन्हें हल्के, मध्यम या गंभीर सीखने की कठिनाइयों के रूप में पहचाना जाता है।

2.मिर्गी (Epilepsy) :–सीखने की कठिनाइयों के साथ, क्लासिक ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों में मिर्गी अधिक आम है, लगभग 30ः वयस्कता में प्रभावित होते हैं। एस्पर्जर सिंड्रोम वाले बच्चों में मिर्गी कम आम है, लेकिन आम तौर पर विकासशील बच्चों की तुलना में अधिक प्रचलित हो सकती है।

3.भाषण और भाषा की समस्याए (Speech and Language Problems) :– एएसडी वाले अधिकांश बच्चों में अपने साथियों की तुलना में धीमी भाषा का विकास होता है। यह न केवल अभिव्यंजक भाषा है जो समस्याएं दिखा सकती है, ग्रहणशील भाषा भी छोटे बच्चों में देरी से दिखाई दे सकती है, और बच्चे अपने नाम के प्रति कम प्रतिक्रियाशील प्रतीत हो सकते हैं। ऑटिज्म से पीड़ित कुछ बच्चे उन शब्दों को भी खो देते हैं जो उन्होंने पहले सीखे थे। क्लासिक ऑटिज्म वाले लगभग 25ः बच्चों में इस प्रतिगमन का वर्णन किया गया है, और आमतौर पर एक क्रमिक प्रक्रिया है जहां एक बच्चा नए शब्दों को सीखने में विफल रहता है, और पहले से सीखे गए शब्दों का पूरी तरह से उपयोग करना बंद कर सकता है।

4.एडीएचडी (ADHD) :–एडीएचडी एएसडी के साथ होने वाला सबसे आम मानसिक विकार है और दोहरी निदान प्राप्त करने से नैदानिक लाभ होते हैं। बच्चों को विशेष रूप से उनके एडीएचडी लक्षणों के उद्देश्य से उपचार प्राप्त करने से लाभ होने की संभावना है, साथ ही माता–पिता और शिक्षकों द्वारा मान्यता प्राप्त दोनों हानियों के होने की संभावना है।

5.डीसीडीः – विकासात्मक समन्वय विकार Developmental Co & ordination Disorder(या डिस्प्रेक्सिया) मोटर समन्वय समस्याओं और एएस में विशिष्ट भद्दापन का वर्णन करता है। ऐसी कठिनाइयाँ किसी व्यावसायिक चिकित्सक या फिजियोथेरेपिस्ट के हस्तक्षेप से लाभान्वित हो सकती हैं।

6.टिक्स और टॉरेट सिंड्रोम(Tics and Tourette's syndrome):– कई रिपोर्टों ने एस्परगर सिंड्रोम में टिक्स की सह–घटना का दस्तावेजीकरण किया है। ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों में टॉरेट सिंड्रोम भी देखा गया है। टिक्स मौखिक या मोटर हो सकते हैं।

7.भोजन और खाने की समस्याएं(Feeding and Eating Problems):– एएसडी वाले बच्चों में भोजन से इनकार, चुनिंदा भोजन, जमाखोरी, पिका और अधिक खाने सहित भोजन की समस्याएं देखी गई हैं। कुछ बच्चों को मिश्रित बनावट का सामना करने में कठिनाई होती है, वे अपना भोजन एक निश्चित क्रम में खा सकते हैं और यहां तक कि विभिन्न प्लेटों पर अपना भोजन भी मांग सकते हैं।

आकलन(Assessment) :–एक सामान्य मूल्यांकन में निम्नलिखित क्षेत्र शामिल होने चाहिएः

- बच्चे का विकासात्मक इतिहास।
- संरचित और अर्ध–संरचित स्थितियों में बच्चे का अवलोकन।
- नर्सरी/स्कूल की रिपोर्ट।
- संज्ञानात्मक स्तर का आकलन।

EXAM TRICKY
Notes For Pyssum
SPECIAL EDUCATION

- समस्या व्यवहार का आकलन। भाषण और भाषा मूल्यांकन।
- यदि संकेत दिया गया हो तो ऑडियोलॉजी और दृश्य परीक्षण।
- डस्मॉर्फिक (असामान्य) विशेषताएं होने पर क्रोमोसोमल स्क्रीन की आवश्यकता होती है।

कुछ मामलों में विशेष रूप से शारीरिक जांच का संकेत दिया जा सकता है जिसमें ईईजी की आवश्यकता, या फ्रैगाइल एक्स और अन्य गुणसूत्र असामान्यताओं के लिए स्क्रीनिंग शामिल है। यह अभी भी बहस का विषय है कि क्या ये जांच नियमित रूप से करने लायक हैं क्योंकि सकारात्मक परिणाम की उपज अपेक्षाकृत कम है।

नैदानिक साक्षात्कार (Diagnostic Interview) :–कई साक्षात्कार मौजूद हैं जो निदान को स्पष्ट करने में मदद करते हैं और अनुसंधान में भी उपयोग किए जाते हैं। इनमें ऑटिज्म डायग्नोस्टिक इंटरव्यू, सोशल एंड कम्युनिकेशन डिसऑर्डर के लिए डायग्नोस्टिक इंटरव्यू, चाइल्डहुड ऑटिज्म रेटिंग स्केल और एक नया कम्प्यूटरीकृत इंटरव्यू, डेवलपमेंटल, डायमेंशनल एंड डायग्नोस्टिक इंटरव्यू (3Di) शामिल हैं।

Unit :–3.5

Documentation of assessment, interpretation and report writing मूल्यांकन, व्याख्या और रिपोर्ट लेखन का दस्तावेजीकरण–

Documentation- प्रलेखन चिंतनशील अभ्यास का एक अनिवार्य तत्व है। यह बच्चों के खेलने और सीखने के अनुभवों को बच्चों, माता–पिता और शिक्षकों के लिए दृश्यमान बनाता है। यह बच्चे की क्षमता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने का एक तरीका है।

दस्तावेजीकरण का सीधा सा मतलब है कि जो कुछ देखा गया है उसका रिकॉर्ड रखना, जबकि छात्र खेलते और खोजते समय सीखने के अनुभव में लगे रहते हैं। अभिलेखों में शिक्षक अवलोकन शामिल हो सकते हैं जो किंडरगार्टन पाठ्यक्रम में उल्लिखित विशिष्ट कौशल, अवधारणाओं या विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। दैनिक अवलोकन नियोजित और स्वतःस्फूर्त दोनों हो सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि किसी विशेष गतिविधि से उभरने वाले सभी सीखने के अनुभव शामिल हैं।

विद्यार्थी के अधिगम अनुभवों के दस्तावेजीकरण के विभिन्न रूप हैं। इसमें छात्र की कलाकृति और लेखन, फोटोग्राफ, वीडियो टेप औरध्या टेप–रिकॉर्डिंग का उपयोग शामिल हो सकता है। प्रलेखन दीवार पर बच्चों के काम के आकर्षक प्रदर्शन के रूप में सरल हो सकता है या यह एक अधिक विस्तृत रूप से तैयार किया गया डिस्प्ले बोर्ड हो सकता है जो किसी बच्चे या बच्चों के समूह के अनुभव की कहानी बताता है। विभिन्न प्रकार के दस्तावेजों में डिस्प्ले बोर्ड, स्क्रैप बुक्स, फोटो एलबम, वेब साइट (केवल माता–पिता के लिए सुलभ), और माता–पिता को ईमेल, बुलेटिन बोर्ड डिस्प्ले और माता–पिता को न्यूजलेटर शामिल हो सकते हैं। सभी प्रकार के दस्तावेजीकरण में बच्चों के काम का शीर्षक, फोटो या रेखाचित्र लिखित कैप्शन के साथ, अनुभव के बच्चों के चित्र और सीखने के अतिरिक्त लिखित विवरण शामिल होने चाहिए।

दस्तावेजीकरण यह सब छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए एक साथ खींचता है। यह छात्रों को उनके काम पर फिर से विचार करने का अवसर प्रदान करता है, जो बदले में, शिक्षकों को उनके साथ उनकी रुचियों, उनके विचारों और उनकी योजनाओं पर चर्चा करने का अवसर प्रदान करता है। अपने स्वयं के सीखने के अनुभवों के दस्तावेजीकरण में शामिल होने से, छात्र अधिक चिंतनशील हो जाते हैं और अपने चारों ओर हो रहे सीखने में अधिक व्यस्त हो जाते हैं।

रिपोर्ट लेखन :– एक संदिग्ध विकलांगता वाले बच्चे के मूल्यांकन में कई अलग–अलग पेशेवर इनपुट प्रदान कर सकते हैं। जब ऐसा होता है, तो निष्कर्षों के आधार पर एक व्यापक रिपोर्ट लिखी जानी चाहिए।इस रिपोर्ट का उद्देश्य परिणामों को इस तरह से संप्रेषित करना है कि पाठक सिफारिशों के पीछे के तर्क को समझ सकें, और हस्तक्षेप के लिए व्यावहारिक दिशानिर्देशों के रूप में सिफारिशों का उपयोग करने में सक्षम हो सकें।यह रिपोर्ट माता–पिता को प्रस्तुत की जा सकती है, किसी बाहरी डॉक्टर या एजेंसी को भेजी जा सकती है, या पात्रता समिति को प्रस्तुत की जा सकती है। किसी भी मामले में, रिपोर्ट पेशेवर, व्यापक और व्यावहारिक होनी चाहिए।

एक अच्छी रिपोर्ट लिखना एक वास्तविक कौशल है। तथ्य यह है कि, सभी अद्भुत डेटा संग्रह बेकार हो जाते हैं यदि इसे स्पष्ट और संक्षिप्त तरीके से व्याख्या और व्याख्या नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, बहुत सामान्य होना या परिणामों की खराब व्याख्या करना पाठकों के लिए कई समस्याएं और भ्रम पैदा करता है। साथ ही, कई सामान्य सिफारिशों का हवाला देना स्कूल, शिक्षक या माता–पिता के लिए व्यावहारिक नहीं होगा।

ऐसी रिपोर्ट लिखना जिसमें शब्दजाल हो जिसे आप के अलावा कोई नहीं समझता है, वह भी बेकार है। बहुत व्यापक होने के प्रयास में एक अत्यंत लंबी रिपोर्ट को पूरा करने से केवल आपके पाठक की हानि होगी।

Unit 4:

Assessment of students with ID आईडी वाले छात्रों का मूल्यांकन

Unit :– 4.1

Purpose and significance of assessment for students with Intellectual disability बौद्धिक अक्षमता वाले छात्रों के लिए मूल्यांकन का उद्देश्य और महत्व–'बौद्धिक अक्षमता' शब्द विभिन्न आनुवंशिक विकारों और संक्रमणों के कारण होने वाली स्थितियों के समूह को संदर्भित करता है। बौद्धिक अक्षमता की पहचान आमतौर पर बचपन के दौरान की जाती है, और इसका व्यक्ति के विकास पर निरंतर प्रभाव पड़ता है। बौद्धिक अक्षमता को नई या जटिल जानकारी को समझने, नए कौशल सीखने और सामाजिक कामकाज सहित स्वतंत्र रूप से सामना करने की काफी कम क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जैसा कि सभी विकलांगता समूहों के साथ होता है, विभिन्न प्रकार की गंभीरता के साथ कई प्रकार की बौद्धिक अक्षमता होती है। इनमें बौद्धिक अक्षमताओं की प्रकृति और सीमा और कार्यात्मक सीमाओं, अक्षमता के कारणों, व्यक्तिगत पृष्ठभूमि और व्यक्ति के सामाजिक वातावरण में काफी अंतर शामिल हैं। कुछ लोगों में आनुवंशिक विकार होते हैं जो उनकी बौद्धिक, सामाजिक और अन्य कार्यात्मक क्षमताओं पर गंभीर प्रभाव डालते हैं। हल्के बौद्धिक दुर्बलता वाले अन्य पर्याप्त जीवन कौशल विकसित कर सकते हैं और अपेक्षाकृत स्वतंत्र वयस्क जीवन जीने में सक्षम हैं। बौद्धिक अक्षमता वाले लगभग 75 प्रतिशत लोग केवल मामूली रूप से प्रभावित होते हैं, 25 प्रतिशत मध्यम, गंभीर या गंभीर रूप से प्रभावित होते हैं।

बच्चे किसी भी उम्र में प्रीस्कूल शुरू कर सकते हैं, आमतौर पर दो या तीन साल की उम्र में, आमतौर पर चार या पांच साल की उम्र के आसपास। जबकि सबसे कम उम्र के पूर्वस्कूली बच्चे और सबसे पुराने पूर्वस्कूली बच्चे के बीच आमतौर पर केवल तीन साल का अंतर होता है, वे सभी विभिन्न प्रकार के विकास के लिए तीन महत्वपूर्ण, महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं – इस बारे में सोचें कि 2 साल के बच्चे के लिए ''सामान्य'' क्या है और क्या है 5 साल के बच्चे के लिए ''सामान्य'', बुनियादी शिक्षाविदों से लेकर शारीरिक क्षमताओं तक, भावनात्मक विकास से लेकर सामाजिक कौशल तक।

शिक्षकों, माता–पिता, अभिभावकों, बाल रोग विशेषज्ञों, और किसी भी अन्य चिकित्सा या शिक्षा पेशेवरों के लिए सहायता, मार्गदर्शन और आधार रेखा प्रदान करने के लिए, जो आपके प्रीस्कूलर का सामना कर सकते हैं, कई प्रीस्कूल अक्सर आंतरिक प्रीस्कूल मूल्यांकन करते हैं और जबकि पूर्वस्कूली शिक्षकों और प्रारंभिक बचपन के विकास विशेषज्ञों के लिए मानक परीक्षण उपलब्ध हैं, कई प्रीस्कूल और डेकेयर के अपने आकलन और क्वालिफायर हैं जिनका वे उपयोग करते हैं।

पूर्वस्कूली शिक्षक और प्रारंभिक बचपन विकास विशेषज्ञ आमतौर पर यह मूल्यांकन करने के लिए प्रीस्कूल मूल्यांकन के किसी न किसी रूप का उपयोग करते हैं कि एक पूर्वस्कूली छात्र विभिन्न कौशल क्षेत्रों में कैसा प्रदर्शन कर रहा हैः

- स्थूल गामक कौशल Gross motor skills
- सूक्ष्म गामक कौशल Fine motor skills
- आँख–हाथ का समन्वय Eye & hand coordination
- अक्षरों की पहचान Recognition of letters
- आकृतियों की पहचान Recognition of shapes
- संख्याओं की पहचान

EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION
Notes For Pyssum

- रंगों की पहचान
- भाषण कौशल जिसमें अभिव्यक्ति शामिल है और बच्चा उसे कितनी अच्छी तरह व्यक्त करता है।
- सामाजिक कौशल, जिसमें सहयोग करने, मोड़ लेने, दोस्त बनाने आदि की क्षमता शामिल है।

उपयोग की जाने वाली विधि के आधार पर, मूल्यांकन औपचारिक या अनौपचारिक हो सकता है, लेकिन ज्यादातर मामलों में, आपके बच्चे को कुछ भी अलग नहीं दिखाई देगा क्योंकि वे आमतौर पर कक्षा की गतिविधियों के दौरान आयोजित किए जाते हैं।प्रारंभिक बचपन के शिक्षकों को बच्चों के व्यक्तिगत हितों और शक्तियों के बारे में जागरूक होने और उन्हें संलग्न करने और विस्तार करने के तरीके खोजने की जरूरत है। वे ऐसा समृद्ध विविध प्रकार के सीखने के अनुभवों की व्यवस्था करके कर सकते हैं जो सभी इंद्रियों को आकर्षित करते हैं – श्रवण, और शारीरिक छोटे समूह, और बड़े समूह की गतिविधियाँ ताकि बच्चे विभिन्न प्रकार के सामाजिक संपर्क का अनुभव करें। – दृश्य, और बारी–बारी से व्यक्ति, भागीदारी,

प्रारंभिक बचपन के कार्यक्रमों में, बच्चों को दैनिक गतिविधियों में देखकर और उनके कौशल, समझ, रुचियों, शब्दावली और विभिन्न कार्यों के प्रति दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन किया जाता है। इसमें उन परिस्थितियों के बारे में जानने के लिए परिवारों के साथ नियमित रूप से संवाद करना शामिल है जो कक्षा के व्यवहार या बातचीत को प्रभावित कर सकती हैं, जैसे कि व्यक्तिगत या पारिवारिक बीमारी, चोट, और बच्चे के पालन–पोषण के विश्वास और व्यवहार। जबकि बच्चे व्यक्तिगत मतभेदों और व्यक्तिगत हितों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदर्शित करते हैं, मूल्यांकन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लड़कों और लड़कियों दोनों के पास विकास को प्रोत्साहित करने के लिए ब्लॉक बिल्डिंग से लेकर संगीत, कलात्मक या नाटकीय नाटक तक कई गतिविधियों में भाग लेने के अवसर हैं। सभी बच्चों में स्थानिक, कलात्मक, संगीत और मौखिक क्षमताएं।

बौद्धिक अक्षमता वाले छात्रों को मूल्यांकन कार्यों में विशेष समायोजन की आवश्यकता हो सकती है। एक बार जब आपके पास यह स्पष्ट हो जाए कि विकलांगता सीखने पर कैसे प्रभाव डालती है, तो आप वैकल्पिक मूल्यांकन रणनीतियों पर विचार कर सकते हैं। मूल्यांकन के वैकल्पिक रूपों पर विचार करने में, समान अवसर एक गारंटीकृत परिणाम नहीं है, यह उद्देश्य है। आपसे विकलांग छात्रों को समायोजित करने के लिए मानकों को कम करने की अपेक्षा नहीं की जाती है, बल्कि उन्हें यह दिखाने का एक उचित अवसर देने की आवश्यकता होती है कि उन्होंने क्या सीखा है:

- असाइनमेंट की समय सीमा बढ़ाने की अनुमति दें
- छात्रों के काम को रिकॉर्ड करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करें, उदाहरण :–डिजिटल फोटोग्राफी, टेप और वीडियो।
- छात्रों को विचारों और अनुक्रम सामग्री को व्यवस्थित करने में अधिक समय लग सकता है। उपयुक्त संबंधों और बिंदुओं के बीच संबंधों पर विशेष ध्यान देने के साथ, उनकी रूपरेखा पर चर्चा करने से उन्हें लाभ होगा।
- प्रारंभिक प्रक्रिया के रूप में छात्र को फीडबैक के अवसर की अनुमति देने के लिए छात्र को असाइनमेंट का प्रारंभिक मसौदा प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बौद्धिक अक्षमता वाले छात्रों को प्रश्नों को पढ़ने और उनका विश्लेषण करने और उनके उत्तरों की योजना बनाने के लिए परीक्षा में अतिरिक्त समय की आवश्यकता होगी। कुछ छात्र अनुरोध करेंगे कि परीक्षा के प्रश्न उन्हें पढ़ा जाए। कुछ छात्र अपने उत्तर किसी लेखक को निर्देशित करना पसंद कर सकते हैं। उन्हें एक ऐसे स्थान की आवश्यकता होगी जो शांत और व्याकुलता मुक्त हो।
- परीक्षा के प्रश्नों में अपने लिखित परीक्षा निर्देशों और वाक्यों को संक्षिप्त रखें। बुलेट पॉइंट्स, सूचियों या अलग–अलग हिस्सों का उपयोग करने वाले प्रश्नों की सही व्याख्या होने की अधिक संभावना है।
- आईडी वाले व्यक्तियों के मूल्यांकन में विकासात्मक डोमेन में अलग–अलग और दूरगामी जरूरतों के कारण कई पेशेवर शामिल होते हैं। टीम मॉडल बहु–विषयक, अंतःविषय या ट्रांसडिसिप्लिनरी हो सकते हैं।
- चयनित विशेष सहयोगी टीम मॉडल आईडी वाले व्यक्ति की जरूरतों पर निर्भर करता है। टीम के सदस्य अनुकूली कामकाज में ताकत और सीमाएं निर्धारित करते हैं और वैचारिक, सामाजिक और व्यावहारिक डोमेन में आवश्यक समर्थन के स्तर को सहयोगात्मक रूप से निर्धारित करते हैं।

सएलपीएस और ऑडियोलॉजिस्ट की भूमिका व्यक्तियों के भाषण, भाषा और सुनने के कौशल का आकलन करना है। आकलन सांस्कृतिक और भाषाई विविधता के प्रति संवेदनशील होते हैं और ICF (WHO, 2001) ढांचे के भीतर घटकों को संबोधित

Notes For Ryssum
EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION

करते हैं, जिसमें शारीरिक संरचनाएं/कार्य, गतिविधियां/भागीदारी, और प्रासंगिक कारक शामिल हैं। संचार और सुनवाई के आकलन से प्राप्त निष्कर्षों का विश्लेषण अन्य पेशेवरों (जैसे, मनोवैज्ञानिक) के निष्कर्षों के संदर्भ में किया जाना चाहिए, जिनके लिए एक आईडी निदान उनके दायरे में है।

Unit :– 4.2

Assessment tools at Pre & school level: (e-g-, Upanayan, Portage Guide to early Education, and Aarambh)
प्री–स्कूल स्तर पर मूल्यांकन उपकरणः (उदाहरण के लिए, उपनयन, प्रारंभिक शिक्षा के लिए पोर्टेज गाइड, और आरंभ)

Upanayan – A programme of developmental training for children with mental retardation -उपनयन – मानसिक मंद बच्चों के लिए विकासात्मक प्रशिक्षण का कार्यक्रम यह छोटे बच्चों के लिए एक आकलन उपकरण है। इस कार्यक्रम में 0–6 वर्ष की आयु के बच्चों को शामिल किया गया है। कार्यक्रम में एक चेकलिस्ट, एक उपयोगकर्ता पुस्तिका, गतिविधि कार्ड का एक सेट और मूल्यांकन और प्रशिक्षण के लिए सामग्री शामिल है।

समग्री (Content) :– चेकलिस्ट में विकास के पांच क्षेत्र शामिल हैं, जैसे मोटर, स्वयं सहायता, भाषा, संज्ञानात्मक और समाजीकरण। प्रत्येक डोमेन में 250 तक कुल 50 आइटम होते हैं। आइटम सामान्य विकास के आधार पर अनुक्रम में व्यवस्थित होते हैं।

स्वरूप (Format) :– प्रत्येक डोमेन को दूसरे से अलग करने के लिए गतिविधि कार्ड रंग कोडित होते हैं। मैनुअल में मूल्यांकन के दौरान उपयोग की जाने वाली सामग्रियों की एक सूची है। पृष्ठभूमि की जानकारी और मूल्यांकन डेटा को समय–समय पर नोट करने के लिए रिकॉर्ड प्रारूप प्रदान किए जाते हैं। यदि कोई बच्चा कोई गतिविधि करता है तो उसे ''ए'' के रूप में चिह्नित किया जाता है और बच्चा उस कार्य को नहीं करता है जिसे ''बी'' के रूप में चिह्नित किया जाता है।

उपनयन जाँच सूची इस सूची में मोटे तौर पर विकास के पाँच क्षेत्रों को शामिल किया गया है और इसे बच्चे के सामान्य विकास क्रम में व्यवस्थित किया गया है। इसमें नीचे बताए अनुसार कुल 250 कौशल शामिल हैं।

- मोटर कौशल – 50
- स्वयं सहायता कौशल– 50
- भाषा कौशल – 50
- अनुभूति कौशल – 50
- समाजीकरण कौशल – 50

गतिविधि कार्ड (Activity Card):– ये पांच भागों में होते हैं, आसान पहचान के लिए पांच विकास क्षेत्रों में से प्रत्येक के लिए एक भाग, विभिन्न क्षेत्रों के कार्ड अलग–अलग रंग के होते हैं। इन कार्डों में शामिल हैं:

- चेकलिस्ट में सूचीबद्ध आवश्यक कौशल हासिल करने के लिए बच्चे को प्रशिक्षित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों को करने के लिए चरण–दर–चरण निर्देश।
- गतिविधियों का प्रदर्शन करने वाले बच्चेधशिक्षक के चित्र।
- प्रत्येक गतिविधि के लिए आवश्यक सामग्री की एक सूची।
- स्वयं सहायता पर गतिविधि कार्ड के साथ एक लंबा, कार्ड का एक सेट प्रदान किया जाता है जो उस क्षेत्र में प्रत्येक कौशल से संबंधित पूर्व–आवश्यक कौशल को जोड़ता है।
- मूल्यांकन और प्रशिक्षण के लिए सामग्री में आसानी से उपलब्ध खिलौने और बच्चे के मूल्यांकन और प्रशिक्षण में उपयोग के लिए अन्य सामग्री शामिल है।
- कंप्यूटर प्रोग्राम पैकेज का एक वैकल्पिक आइटम है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम की सहायता के लिए इच्छुक है, इस कार्यक्रम का उपयोग करने के लिए एक पर्सनल कंप्यूटर की आवश्यकता होती है।
- कार्यक्रम को कम्प्यूटरीकृत किया गया है ताकि माता–पिता को अपने बच्चे को प्रशिक्षण देने के लिए आवश्यक संबंधित गतिविधि कार्ड दिए जा सकें। कार्यक्रम घर आधारित और केंद्र आधारित हस्तक्षेप में घरेलू प्रशिक्षण के लिए अभिप्रेत है।

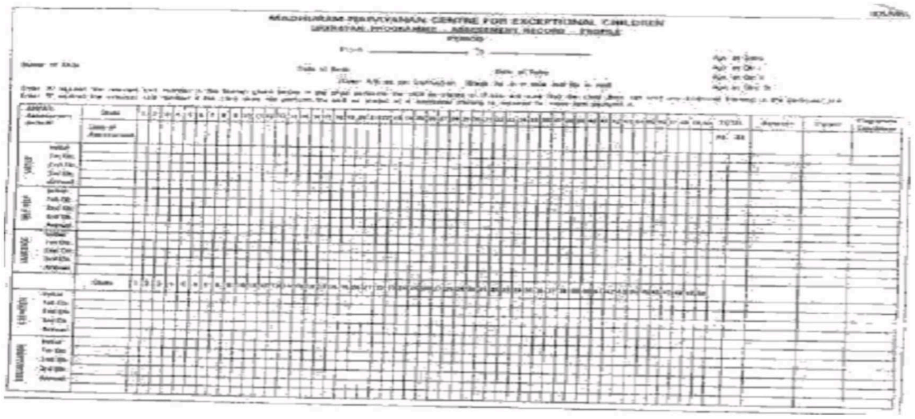

आरंभ(ARAMBH)– आरंभ पैकेज में वैकल्पिक गतिविधियों का सुझाव दिया गया है 2002 में 3 वर्ष से 6 वर्ष के आयु वर्ग के विकलांग बच्चे को NIMH द्वारा यूनिसेफ द्वारा वित्त पोषित किया गया था। आरंभ पैकेज में शामिल हैं–

- कैलेंडर
- गतिविधि कार्ड
- किट सामग्री
- नीति निर्माण पुस्तिका
- शिक्षक पुस्तिका

Portage & Produced early stimulus for pre&school पोर्टाज– भारत में विद्यालय पूर्व बच्चों के लिए शीघ्र उद्दीपन– इसका निर्माण एस . एम . ब्लूमा , एम . सीएरर , एच . फ्राहमेन तथा जीन एम . हिलीयर्ड द्वारा किया गया जिसका भारतीय परिवेश में हिन्दी अनुवाद किया गया है । यह मुख्यतः विकासात्मक समस्या वाले बच्चों के लिए एक गृह आधारित प्रशिक्षण तंत्र है जिसमें अभिभावक अपने बच्चे की शिक्षा में परोक्ष रूप से सम्मिलित रहते हैं । यह 6 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयुक्त है । इसमें प्रशिक्षण एक प्रशिक्षित पुनर्वास कर्मी द्वारा प्रदान किया जाता है ।

<u>विषय सूची:</u>– इसमें दिए गए क्षेत्र हैं– शिशु उद्दीपन , स्व – सहायता , गामक , बौद्धिक , भाषा तथा समाजीकरण । प्रत्येक क्षेत्र में आयु के अनुसार क्रियाएँ क्रम से दी गई है ।

● प्रत्येक कौशल के लिए क्रिया कार्ड दिए गए है जिसमें बच्चे को प्रशिक्षित करने के लिए प्रयुक्त सामग्री तथा विधि का वर्णन हैं । जाँच तालिका के किनारे प्रत्येक कौशल के लिए उपयुक्त आयु दी गई है ।

<u>प्रारूप :–</u>

● इसमें सबसे पहले सभी कौशलों में बच्चे का आकलन किया जाता है तथा उसके कार्यात्मक स्तर को कौशल के सामने अभिलेखित किया जाता हैं ।

● इसमें उपलब्धि दर्शाने तथा टिप्पणी लिखने की भी व्यवस्था है ।

Unit : 4.3

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

Assessment tools at School ages: (e-g-, Madras developmental Programming system & MDPS,Behavioural Assessment Scale for Indian Children (BASIC–MR), Grade Level Assessment Device for Children with Learning Problems in Schools (GLAD),and Functional Assessment checklist for Programming (FACP), FACP & PMR

मद्रास विकासात्मक कार्यक्रम प्रणाली एम.डी.पी.एस .(Madras Developmental Programming System MDPS)– मद्रास विकासात्मक कार्यक्रम प्रणाली – एम . डी . पी . एस . का निर्माण प्रो . जयचन्द्रन , विमला और कुमार ने किया है । इसके द्वारा बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के अनुकूल व्यवहारों का आकलन किया जाता है तथा उनके कार्यात्मक कौशलों (functional skill) के बारे में सूचना मिलती है । यह उपकरण बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों के अनुकूल व्यावहार स्तर के संबंध में उसकी योग्यता तथा आवश्यकताओं का परिमाणात्मक (Quantitative) दृश्य प्रस्तुत करता है । एम.डी.पी.एस. एक मानदण्ड आधारित परीक्षण (Criterian Referenced Test) है जिसका प्रयोग मानसिक मंद व्यक्तियों के आकलन तथा कार्यक्रम योजना बनाने में किया जाता है ।

<u>मद्रास विकासात्मक कार्यक्रम प्रणाली एम.डी. पी . एस . की विशेषताएँ :</u>

- इस उपकरण में 360 अवलोकन योग्य क्रियाएँ हैं जिन्हें 18 कौशल क्षेत्रों के अन्दर रखा गया है । प्रत्येक कौशल क्षेत्र में 20 क्रियाएँ हैं । कौशल क्षेत्रों का निर्माण विकासात्मक चरणों के आधार पर किया गया है । सभी 18 कौशल क्षेत्र स्वयं विकासात्मक क्रम में व्यवस्थित हैं जिसमें प्रारम्भिक कौशल क्षेत्रों सबसे प्राथमिक कौशल रखे गए हैं ।
- प्रत्येक कौशल क्षेत्र में क्रियाओं को विकासात्मक क्रम में व्यवस्थित किया गया है ।
- सभी 360 कौशल वांछनीय क्रियाएँ हैं जो अवलोकन तथा मापन योग्य है ।
- सभी क्रियाएँ कार्यात्मक व्यावहारों पर केंद्रित है (क्रियाएँ जो व्यक्ति के दैनिक जीवन में सामान्य रूप से घटित होती है) । यह सभी क्रियाएँ निर्भरता (B) – आत्मनिर्भरता (A) में मापी जाती हैं ।
- उपकरण का निर्माण इस प्रकार से किया गया है के प्राथमिक क्रियाएँ सबसे आसान तथा बाद की क्रियाएँ अपेक्षाकृत अधिक जटिल (complex) होती जाती है ।
- इसे प्रशासित करके बच्चे के द्वारा वर्तमान में कौन सा कौशल व्यवहार किया जाता है या नहीं किया जाता है , इसके बारे में सूचना एकत्र करते है । यह सूचनाएँ छात्र , अभिभावक ६ संरक्षक के साथ अथवा मूल्यांकन के दौरान , सीधे अवलोकन से प्राप्त की जाती है ।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

<u>एम.डी.पी.एस के कौशल क्षेत्र</u>

- गामकः स्थूल गामक , सूक्ष्म गामक ।
- स्वयंसेवी कौशलः भोजन करना , कपड़े पहनना ,श्रृंगार करना ,शौच क्रिया ।
- संप्रेषण कौशलःसंग्रहणात्मक भाषा (receptive language) , अभिव्यक्तात्मक भाषा (expressive language)।
- सामाजिक अंतःक्रिया ।
- कार्यात्मक पठन – पाठनः पठन , लेखन , संख्या , समय , मुद्रा ।
- घरेलु क्रियाकलाप ।
- सामुदायिक अंतःक्रिया ।
- मनोरंजनात्मक कौशल तथा फुर्सत के क्षणों के कार्य ।
- व्यवसायिक कौशल ।

प्रारूप एम . डी . पी . एस मे बच्चे के निष्पादन स्तर का अंकन प्रथम , द्वितीय तथा तृतीय तिमाही में किया जाता है । परीक्षण में अगर विद्यार्थी क्रिया का निष्पादन करता तो इसे ' A ' अंकित करते है और अगर नहीं करता है तो इसे ' B '

अंकित करते है । परीक्षण में रंगीन कोड भरने की व्यवस्था भी है जिसमें ' I ' को नीला और ' B ' को लाल रंग से भरते है । प्रत्येक तिमाही में प्रगति के आधार पर लाल रंग को रेखाओं से ढका जा सकता है ।

<u>एम.डी.पी.एस. के घटक</u>

- व्यवहारात्मक पैमाना
- व्यवहारात्मक प्रौफाइल
- वैयक्तिक शैक्षणिक कार्यक्रम, प्राथमिक लक्ष्य, त्रैमासिक प्रगति प्रपत्र,समस्या व्यवहार आकलन प्रपत्र
- अनुकूल व्यवहार आकलन किट

भारतीय मंदबुद्धि बच्चों के लिए व्यवहार मूल्यांकन मापदण्ड बेसिक एम . आर . (Behavioral Assessment Scale for Indian Children with Mental Retardation – BASIC MR) –बेसिक एम . आर . का विकास एन . आई . एम . एच . सिकंदराबाद की मैडम रीता पेशावरिया और एस . वेंकटेश ने बौद्धिक अक्षम बच्चों के प्रशिक्षण हेतु शिक्षकों के लिए व्यवहारिक तकनीकि के उपयोग पर सामग्री तैयार करने के लिए बनी परियोजना के भाग के रूप में किया था । बेसिक एम.आर. का निर्माण 3–16 वर्ष (या 18 वर्ष) की आयु के विद्यालय जाने वाले बौद्धिक अक्षम बच्चों के व्यवहार के वर्तमान स्तर को दर्शाने तथा उनके लिए कार्यक्रम योजना बनाने के लिए किया गया था । शिक्षक इस उपकरण को पुराने गंभीर विकलांग व्यक्तियों के लिए भी उपयोगी पा सकते है । व्यवहारिक आकलन के लिए यह उपकरण तर्कसंगत है और कार्यक्रम योजना के लिए इसे एक पाठ्यक्रम निर्देशिका के रूप में भी उपयोग किया जा सकता है । इसे प्रत्येक बौद्धिक अक्षम बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर आधारित प्रशिक्षण के लिए भी उपयोग में लाया जा सकता है । इस उपकरण का परीक्षण एक चुने गए प्रतिदर्श समूह (sample population) पर किया जा चुका है । इस उपकरण द्वारा समस्यात्मक व्यवहारों का आकलन भी किया जा सकता है ।

विषय वस्तु – इस उपकरण को दो भागों में विभाजित किया गया है जो इस प्रकार हैं

- बेसिक एम . आर . भाग ' अ'
- बेसिक एम . आर . भाग ' ब '

<u>बेसिक एम . आर . भाग ' अ '</u> – इसमें कुल 07 कौशल क्षेत्र हैं । प्रत्येक कौशल क्षेत्र में 40 क्रियाएँ हैं जो अवलोकन तथा मापन योग्य हैं तथा जिन्हें सरल से जटिल के क्रम में रखा गया है । इसमें दिए गए कौशल क्षेत्र हैं :

- गामक कौशल
- दैनिक जीवन के क्रियाकलाप
- भाषा
- पठन – लेखन
- संख्या – समय
- घरेलू – सामाजिक
- पूर्व व्यवसायिक – पैसा

बेसिक एम . आर . भाग ' ब ' इसके अन्तर्गत समस्यात्मक व्यवहारों को 10 समूहों में बाँटा गया है जो इस प्रकार हैं

- उग्र व विनाशक व्यवहार
- चिढ़चिढ़ापन
- अन्य के साथ दुर्व्यवहार
- स्वयं घातक व्यवहार
- पुनरावृत्ति व्यवहार
- अनोखा व्यवहार
- विद्रोही व्यवहार

EXAM TRICKY
Notes For Pyssum
SPECIAL EDUCATION

- अतिचंचलता
- असामाजिक व्यवहार
- भय

ऊपर दिए गए समूहों में कुल 75 समस्यात्मक व्यवहार आते हैं । प्रत्येक समूह में समस्यात्मक व्यवहारों की संख्या भिन्न है ।

बेसिक एम . आर . प्रपत्रः–बेसिक एम .आर .भाग ' अ ': – प्रत्येक कौशल क्षेत्र में छात्रों के कार्य निष्पादन के 06 स्तरों के आधार पर अंक दिए जाते हैं जो इस प्रकार हैं –

स्तर एक : स्वावलंबी / आत्मनिर्भर अंक 5– यदि बच्चा बिना किसी शाब्दिक अथवा शारीरिक सहायता के कार्य कर लेता है ।

स्तर दो : संकेत देने पर अंक 4 – यदि बच्चा किसी शाब्दिक अथवा शारीरिक संकेत की सहायता से कार्य कर लेता है ।

स्तर तीन : शाब्दिक सहायता देने पर अंक 3– यदि बच्चा किसी मौखिक निर्देश की सहायता से कार्य कर लेता है ।

स्तर चार : शारीरिक सहायता देने पर अंक 2– यदि बच्चा किसी शारीरिक सहायता से कार्य कर लेता है ।

स्तर पाँच : पूर्णतया निर्भर – अंक 1 यदि बच्चा चयनित व्यवहार को नहीं कर सकता किन्तु उसे उस कार्य में प्रशिक्षित किया जा सकता है ।

स्तर छः : लागू नहीं – अंक 0 – यदि बच्चा चयनित व्यवहार को संवेदी अथवा शारीरिक क्षति के कारण नहीं कर सकता ।

बेसिक एम . आर . भाग ' अ ' में छात्रों द्वारा अधिकतम् 1400 अंक अर्जित किए जा सकते हैं ।

बेसिक एम . आर . भाग ' ब ' : –बेसिक एम . आर . भाग ' ब ' में समस्यात्मक व्यावहार को गंभीरता ६ आवृत्ति के आधार पर 3 स्तरों में बाँटा गया है जो इस प्रकार हैं :

- अगर बच्चे द्वारा समस्या व्यवहार कभी प्रदर्शित नहीं किया जाता तो ' N ' (Never) दर्ज करें तथा 0 अंक दें ।
- अगर बच्चे द्वारा समस्या व्यवहार कभी – कभी प्रदर्शित किया जाता तो ' O ' (Occasionally) दर्ज करें तथा 01 अंक दें ।
- अगर बच्चे द्वारा समस्या व्यवहार अक्सर या जल्दी – जल्दी प्रदर्शित किया जाता तो ' F ' (Frequentally) दर्ज करें तथा 02 अंक दें । अतः बेसिक एम . आर . भाग ' ब ' में आवृत्ति के आधार पर अधिकतम् 150 अंक दिए जा सकते हैं ।

विद्यालयों में अधिगम समस्या वाले बच्चों के लिए स्तर आधारित आकलन उपकरण (Grade Level Assessment Device & GLAD for children having learning problems in primary school)

- इस उपकरण का विकास डा . जयंती नारायण , राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान , सिकंदराबाद द्वारा किया गया है ।
- इस उपकरण के द्वारा कक्षा 1 से 4 तक के अधिगम समस्याग्रस्त बच्चों का आकलन किया जा सकता है ।

इसके दो भाग है– भाग अ और भाग ब

भाग अ

- इसमें कक्षा 1 से 4 तक के विद्यार्थियों के आकलन के लिए शैक्षणिक क्रियाएँ दी गई है ।
- अंग्रेजी , हिन्दी तथा गणित विषय को इसमें शामिल किया गया है ।
- सभी क्रियाएँ सरल से जटिल के क्रम में व्यवस्थित है ।
- प्राप्त निष्कर्षो को अंक प्रदान करने की व्यवस्था की गई है ।

EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION
Notes For Pyssum

भाग ब – यह स्तर आधारित आकलन सूची (Grade Level Assessment Schedule) है । इसमे तीन खण्ड :

खण्ड 1– इसमें सामाजिक पृष्ठभूमि विवरण लिखना है जिसमें बच्चे का नाम , आयु , लिंग , पता , कक्षा , विद्यालय , परिवार , सामाजिक – आर्थिक स्थिति , अभिभावक की शिक्षा , परिवार में किसी अन्य व्यक्ति की समान समस्या का विवरण , कक्षा पुनरावृत्ति तथा विद्यालय की पिछली तीन परीक्षाओं के परिणामों को अभिलेखित करने की व्यवस्था है ।

खण्ड 2 इसमें बच्चे की शारीरिक विकलांगता , दृष्टि अक्षमता , श्रवण क्षमता , लेटरलिटी , वाणी , संतुलन तथा समंवय संबंधी सूचनाएँ लिखने का प्रावधान है ।

खण्ड 3– अमौखिक पठन , मौखिक पठन , लेखन , गणितीय कौशल , तथा अवांछनीय व्यवहार को दर्शाया जाता है ।

अंत में एक सारांश अभिलेख लिखने के लिए प्रपत्र दिया गया है ।

कार्यक्रम के लिए कार्यात्मक आकलन जाँच सूची– एफ.ए.सी.पी (Functional Assessment Checklist for Programming & F.A.C.P)– राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान , सिकंदराबाद के विशेष शिक्षा विभाग ने एक शैक्षणिक आकलन जाँच सूची की श्रृंखला विकसित की है ।

- इसमें पूर्व – प्राथमिक से पूर्व – व्यवसायिक स्तरों के 03 से 18 वर्ष के बौद्धिक अक्षम बच्चों की कार्य योजना बनाने में मदद मिलती है ।
- एफ.ए.सी.पी. एक कार्य आधारित जाँच सूची है जिसे बौद्धिक अक्षम बच्चों के आकलन तथा कार्यक्रम बनाने में सहायता मिलती है ।
- इसमें दी गई क्रियाएँ आसानी से समझी जा सकती है तथा दैनिक जीवन के लिए आवश्यक है ।
- ये क्रियाएँ अवलोकन योग्य तथा आयु के अनुरूप हैं एवं समुदाय में आत्मनिर्भर जीवन यापन करने में सहायक हैं ।

एफ.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आकलनकर्ता को छात्र के वातावरण एवं स्तर के अनुरूप क्रियाओं को सम्मिलित करने का भी प्रावधान है । एफ.ए.सी.पी. में कौशल क्षेत्रों में क्रियाओं की संख्या भिन्न होती है । एफ.ए.सी.पी. में आयु तथा योग्यता के आधार पर विद्यार्थियों को समूहों में बाँटा गया है

विद्यार्थियों का समूहीकरण :– पूर्व प्राथमिक स्तर : इसमें 03 से 06 वर्ष आयु समूह के बच्चे आते हैं ।

प्राथमिक 1 : पूर्व प्राथमिक स्तर पर निर्धारित कौशलों में 80 प्रतिशत या अधिक सफलता प्राप्त करने वाले छात्रों को प्राथमिक 1 के लिए प्रोन्नत किया जाता है । इस कक्षा में प्रवेश पाने की आयु लगभग 7 वर्ष होती है ।

प्राथमिक 2 : 8 वर्ष के बाद भी यदि छात्र पूर्व प्राथमिक स्तर पर निर्धारित कौशलों में 80 प्रतिशत सफलता प्राप्त नहीं करता है तो उसे प्राथमिक 2 में प्रवेश दिया जाता है ।

माध्यमिक : प्राथमिक स्तर पर 80 प्रतिशत या अधिक सफलता प्राप्त करने वाले 11 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को माध्यमिक कक्षा में प्रवेश दिया जाता हैं ।

पूर्व – व्यवसायिक 1 तथा 2 : इन दोनो ही समूहों में 15 से 18 वर्ष आयु के बच्चे आते हैं । सामाजिक तथा शैक्षणिक क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जाता हैं एवं मूलभूत कार्य / कौशलों तथा घरेलू कार्यो पर ध्यान केंन्द्रित किया जाता हैं । 18 वर्ष से अधिक की आयु के बौद्धिक अक्षम व्यक्तियों को मूल्यांकन रिपोर्ट के साथ व्यवसायिक प्रशिक्षण इकाईयों में प्रशिक्षण हेतु भेजा जाता है । एफ.ए.सी.पी. जाँच तालिका में व्यवसायिक क्षेत्र सम्मिलित नहीं है ।

संरक्षित समूह : इस समूह में अति अल्प योग्यता वाले बच्चे आते हैं । इन बच्चों को गंभीर विकलांगता के कारण आजीवन परिचर्या सेवा (nursing care) की आवश्यकता होती है । इन्हें मूलभूत कौशलों जैसे– पानी पीना , खाना खाना , शौच करना तथा गामक क्रियाएँ एवं संप्रेषण कौशल में प्रशिक्षण दिया जाता है ।

Notes For Rysum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

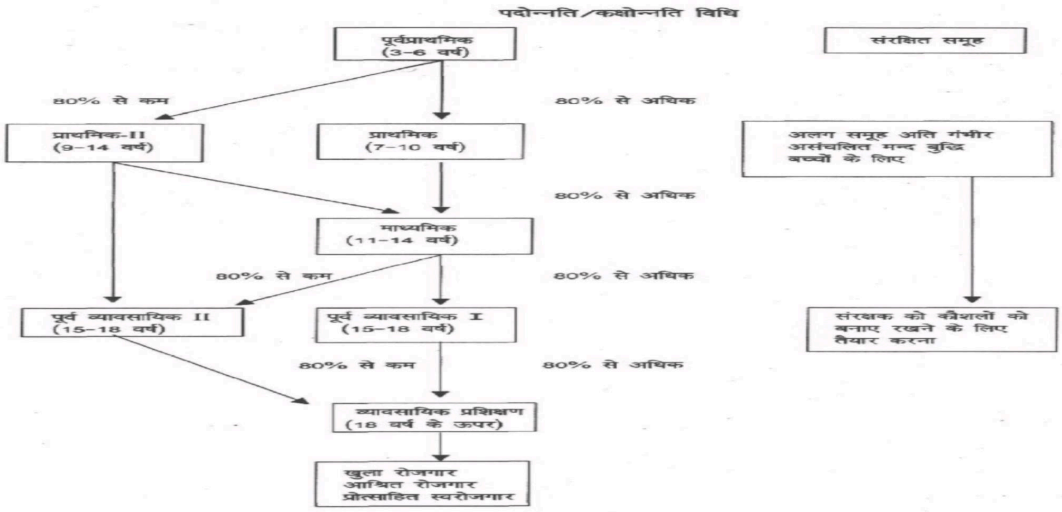

विषयवस्तु संरक्षित समूह के अतिरिक्त अन्य सभी स्तरों पर कौशलों को निम्नलिखित 05 क्षेत्रों में बाँटा गया है :

- व्यक्तिगत
- समाजिक
- शैक्षणिक
- व्यवसायिक
- मनोरंजनात्मक – घर के अंदर की क्रियाएँ घर के बाहर की क्रियाएँ

<u>प्रारूप :–</u>

- जाँच सूची में छात्र के प्रगति के स्तर को अभिलेखित करने का प्रावधान है । यदि छात्र किसी क्रिया का निष्पादन स्वतंत्र रूप से करता है तो उसे ' . ' से और यदि नहीं कर पाता तो उसे ' – ' से दर्शाते हैं ।
- छात्र के वर्तमान स्तर का आकलन करने के लिए शाब्दिक सहायता (Verbal Prompt) , शारीरिक सहायता (Physical Prompt) , सांकेतिक सहायता (Gestural Prompt) , माडलिंग के रूप में सहयोग प्रदान कि जाता है तथा उन्हें GP , PP , VP से दर्शाया जाता है ।
- ' हाँ ' अथवा ' . ' द्वारा दर्शायी गई क्रियाओं की गणना की जाती है तथा GP , PP , VP से दर्शायी गई क्रियाओं की गणना नहीं की जाती है । जिन क्रियाओं को ' लागू नही ' (Not Applicable) में गणना की जाती है उन्हें सफलता प्रतिशत निकालते समय कुल क्रियाओं में से घटा दिया जाता है । इसी प्रकार यदि किसी क्रिया को शामिल किया गया है तो मूल्यांकन करते समय उसे कुल क्रियाओं में में जोड़ दिया जाता है ।
- प्रत्येक स्तर में संरक्षित समूह (ब्तम ळतवनच) को छोड़कर जाँच सूची कौशल के विस्तृत क्षेत्र को समेटता है जैसे व्यक्तिगत , सामाजिक , शैक्षणिक , व्यवसायिक और मनोरंजन द्य जब कोई बच्चा दिए गए स्तर में 80 प्रतिशत सफलता हासिल कर लेता ध लेती है तब उसे अगले उच्च स्तर में प्रोन्नत करना उचित होता है ।

जाँचसूची की प्रत्येक क्रिया को विवरणात्मक पैमाने पर निम्न तरह से अंक दिए जाते है ।

हां = .''बिना मदद के बच्चा क्रिया करता है।

कभी–कभी संकेत देने पर = Clueing ''C''

मौखिक सहायता = Verbal Prompt ''VP''

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION

शारीरिक सहायता = ''PP''

नहीं = ''–'' बच्चा क्रिया को नहीं करता है।

लागू नहीं होता। = NOT Applicable ''N।''

मौका नहीं मिलता। = NO EXPOSURE ''NE''

" मनोरंजन " के अंतर्गत सूचीबद्ध क्रियाओं को प्रोन्नति के लिए गिना नहीं जाता है , क्योंकि यह क्रियाएँ पसंद पर आधारित होती हैं । इसमें निम्न के आधार पर श्रेणी प्रदान की जाती है :

- स्वयं शुरुआत करता है तथा प्रभावी रूप से प्रतिभाग करता है ।
- दूसरों के शुरुआत करने पर प्रतिभाग करता है ।
- प्रतिभाग करता है पर नियमों को नहीं जानता ।
- रुचि के साथ दूसरों को खेलते हुए देखता है ।
- इच्छुक नहीं । NE (No Exposure) अवसर प्राप्त नहीं ।

.

<u>अति गंभीर मानसिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों के कार्यक्रम के लिए कार्यात्मक आकलन जाँच सूची एफ.ए.सी.पी. पी . एम . आर . (Functional Assessment Checklist for Programming of students with Profound Mental Retardation & FACP PMR</u>) :–राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान , सिकंदराबाद के विशेष शिक्षा विभाग द्वारा अति गंभीर बौद्धिक अक्षम बच्चों के लिए आकलन जाँच सूची विकसित की गई है । यह एक कार्य आधारित जाँच सूची है जिससे अति गंभीर बौद्धिक अक्षम बच्चों के आकलन तथा कार्यक्रम निर्माण में सहायता मिलती है । एफ.ए.सी.पी. पी . एम . आर . में चार खण्ड है ।

<u>खण्ड अ यह कौशलों की जाँच सूची है ।</u>

- इसमें स्वयंसेवी कौशल (भोजन करना , पेय पदार्थ पीना , शौच क्रिया , स्नान करना) , गामक , संप्रेषण , तथा दृष्टि कौशल आते है ।
- यह सभी क्रियाएँ अवलोकन तथा मापन करने योग्य है ।
- प्रत्येक क्षेत्र में बच्चे की आवश्यकतानुसार अतिरिक्त क्रियाएँ जोड़ने के लिए स्थान दिया गया है ।

<u>खण्ड ब</u>

- यह समस्यात्मक व्यवहारों की जाँच सूची है । इसमे कुल 47 समस्यात्मक व्यवहार दिए गए है ।
- किसी अन्य समस्यात्म्क व्यवहार को बच्चे द्वारा प्रदर्शित करने पर उसे जाँच सूची के अंत में अभिलेखित करने की व्यवस्था प्रदान की गई है ।

<u>खण्ड ग–</u>यह सामान्य समस्याओं की जाँच सूची है । इसमें बच्चे की स्वास्थ्य संबंधी तथा शारिरिक समस्याएँ दी गई हैं ।

- इसमें कुल 24 समस्याओं के बारे में दिया गया हैं ।
- इसके द्वारा बच्चे की स्वास्थ्य संबंधी तथा शारीरिक समस्याओं का आकलन करके उसे उपचार के लिए उपयुक्त विशेषज्ञ के पास भेजा जा सकता है ।
- इसमें प्रत्येक समस्या के लिए शब्दावली (glossary) भी दी गई है ।
- किसी अन्य समस्या को अभिलेखित करने के लिए स्थान दिया गया है ।

<u>खण्ड घ–</u>

- इसमे बच्चों की त्रैमासिक प्रगति अंकित करने के लिए प्रपत्र दिए गए हैं ।

EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION
Notes For Pyesum

- इसमे बच्चे के प्रारंभिक आकलन के साथ नियमित मूल्यांकन करने का प्रावधान है ।
- इसमे बच्चे की प्रगति का गुणात्मक तथा परिमाणात्मक आकलन करने की व्यवस्था है ।

Unit :– 4.4

Preparation of material for assessment of various skills-विभिन्न कौशलों के मूल्यांकन के लिए सामग्री तैयार करना–

शिक्षकों को चाहिएः

- यह तय करें कि किसी विशेष सत्र में क्या सीखा जा रहा है सीखने के लक्ष्यों को परिभाषित करें।
- शिक्षार्थियों को सीखने के लक्ष्यों को संप्रेषित करें।
- प्रश्नों को संकलित करें और सीखने के लक्ष्यों की शिक्षार्थी की समझ की जांच करने के लिए कार्यों को डिजाइन करें।
- शिक्षार्थियों को उनके काम का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानदंडों की व्याख्या करें ।
- यह तय करें कि फीडबैक कैसे प्रदान किया जाएगा।
- परिभाषित करें कि शिक्षार्थी मूल्यांकन प्रक्रिया में सक्रिय भाग कैसे लेंगे आगे बढ़ने का निर्णय।

डिजाइन के लिए निहितार्थ :–इन्हें निम्नानुसार संक्षेपित किया जा सकता हैः

- प्रश्नों या कार्यों के उदाहरण प्रदान करें जो छात्रों को किसी घटना या विषय के बारे में अपने विचारों को व्यक्त करने और उनका आदान–प्रदान करने में संलग्न कर सकते हैं।
- कक्षा संवाद के नमूने प्रदान करें जिनका विश्लेषण शिक्षक अपनी कक्षा शैली की गहरी समझ विकसित करने के लिए कर सकते हैं।
- विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उदाहरण दें जो छात्रों को उनकी अपनी समझ की समीक्षा करने और उस पर फिर से विचार करने के लिए प्रेरित करने में प्रभावी हो सकते हैं।
- उन उद्देश्यों की व्याख्या करते हुए योगात्मक परीक्षण प्रदान करें जिनके लिए इनके परिणाम मान्य साक्ष्य होंगे, शायद छात्रों द्वारा भविष्यवाणियों औरध्या विश्लेषण को बढ़ावा देने के लिए समकक्ष जोड़े में परीक्षण के साथ।
- छात्रों के बीच सहयोगी समूह कार्य के कौशल को विकसित करने के लिए डिजाइन की गई रूपरेखा निर्दिष्ट करें।

ये केवल उदाहरण हैं, और यह स्पष्ट है कि उनमें से अधिकांश के लिए प्रत्येक पाठ्यचर्या विषय के लिए सामग्री अलग–अलग होनी चाहिए।

Unit :– 4.5

Documentation of Assessment Result, Interpretation, Report Writing मूल्यांकन परिणाम का दस्तावेजीकरण, व्याख्या, रिपोर्ट लेखन–

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION

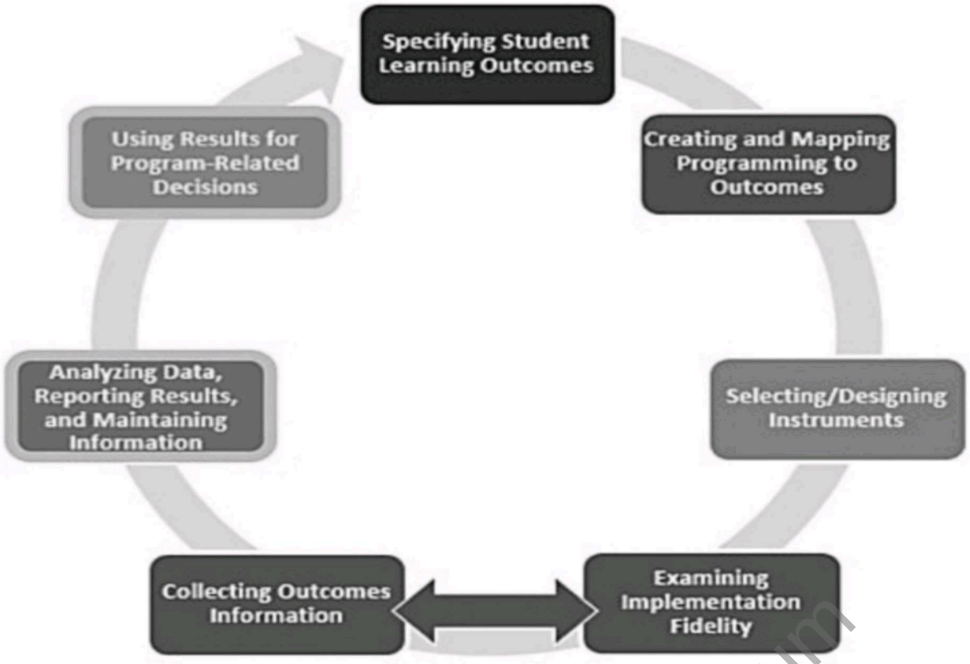

दस्तावेजीकरण का सीधा सा मतलब है कि छात्रों के सीखने के अनुभव में लगे रहने के दौरान क्या देखा गया है, इसका रिकॉर्ड रखना। (खेलते, सीखते और खोजते समय)अभिलेखों में शिक्षक अवलोकन शामिल हो सकते हैं जो पाठ्यक्रम में उल्लिखित विशिष्ट कौशल, अवधारणाओं या विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। दैनिक अवलोकन योजनाबद्ध या स्वतःस्फूर्त दोनों हो सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि किसी विशेष गतिविधि से उभरने वाले सभी सीखने के अनुभव शामिल हैं।विद्यार्थी के अधिगम अनुभवों के दस्तावेजीकरण के विभिन्न रूप हैं।

- फोटोग्राफ, वीडियो टेप और ऑडियो रिकॉर्डिंगः इसमें छात्र की कलाकृति और लेखन, फोटोग्राफ, वीडियो टेप औरध्या टेप–रिकॉर्डिंग का उपयोग शामिल हो सकता है।
- चेकलिस्टः जब वे किसी विषय से संबंधित विशिष्ट पाठ्यक्रम परिणामों का आकलन करते हैं तो चेकलिस्ट एक मूल्यांकन उपकरण के रूप में सबसे प्रभावी और कुशल होते हैं।
- काम के नमूने और पोर्टफोलियोः पोर्टफोलियो छात्र के काम के नमूनों के संग्रह के माध्यम से समय की अवधि के दौरान बच्चे के विकास में वृद्धि की प्रगति दिखाते हैं।
- प्रलेखन दीवार पर बच्चों के काम के आकर्षक प्रदर्शन के रूप में सरल हो सकता है या यह एक अधिक विस्तृत रूप से तैयार किया गया डिस्प्ले बोर्ड हो सकता है जो किसी बच्चे या बच्चों के समूह के अनुभव की कहानी बताता है।

सभी प्रकार के दस्तावेजीकरण में बच्चों के काम का शीर्षक, फोटो या रेखाचित्र लिखित कैप्शन के साथ, अनुभव के बच्चों के चित्र और सीखने के अतिरिक्त लिखित विवरण शामिल होने चाहिए।

- दस्तावेजीकरण छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए सभी को एक साथ मदद करता है।
- यह छात्रों को उनके काम पर फिर से विचार करने का अवसर प्रदान करता है, जो बदले में, शिक्षकों को उनके साथ उनकी रुचियों, उनके विचारों और उनकी योजनाओं पर चर्चा करने का अवसर प्रदान करता है।
- अपने स्वयं के सीखने के अनुभवों के दस्तावेजीकरण में शामिल होने से, छात्र अधिक चिंतनशील हो जाते हैं और अपने चारों ओर हो रहे सीखने में अधिक व्यस्त हो जाते हैं।
- परिणाम व्याख्या और रिपोर्ट लेखन व्याख्या(RESULT INTERPRETATION AND REPORT WRITING)
- एक आकलन के बाद एकत्रित तथ्यों से निष्कर्ष निकालने के कार्य को संदर्भित करता है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION

- मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या में व्यवसायी को विश्लेषण की एक श्रृंखला में शामिल किया जाता है जो छात्र के प्रदर्शन और व्यवहार के एक या अधिक स्पष्टीकरण की ओर ले जाता है।
- जानकारी के विश्लेषण और व्याख्या में टेक्स्ट या ग्राफिक डिस्प्ले में जानकारी को संश्लेषित करना शामिल है।
- विशेष शिक्षकों को यह जानने की जरूरत है कि परिवार के सदस्यों और छात्रों सहित अन्य लोगों के साथ परिणामों को साझा करने के लिए जानकारी का विश्लेषण और व्याख्या कैसे करें।
- परिणाम की व्याख्या विभिन्न तरीकों से की जा सकती हैः जैसे स्कोर, मानक विचलन, प्रतिशत, माप की मानक त्रुटि।
- छात्रों के साथ लक्ष्य निर्धारित करते समय, छात्र वृद्धि की निगरानी और समय के साथ सीखने के पैटर्न में ये मददगार होते हैं ।
- छात्र सीखने की ताकत और कमजोरियों में एक नजर में अंतर्दृष्टि प्रदान करें।

यह समझने के लिए उपयोगी है कि कक्षा में छात्र अपने साथियों के सापेक्ष कैसा प्रदर्शन कर रहे हैं, खासकर जब छात्रों के साथ लक्ष्य निर्धारित करना, लचीला समूह बनाना, या कार्यक्रम प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।

मूल्यांकन रिपोर्ट के अलावा, विभिन्न दर्शकों के साथ मूल्यांकन जानकारी साझा करने के कई अन्य तरीके हैं, जिसमें वेबसाइट, ब्रोशर, प्रस्तुतियां और सोशल मीडिया शामिल हैं। विशेष रूप से, छात्रों के साथ मूल्यांकन परिणामों को साझा करने के तरीके खोजने से उनकी समझ में वृद्धि होती है कि उन्हें मूल्यांकन में भाग लेने के लिए क्यों कहा जाता है और वे इससे कैसे लाभान्वित होते हैं।

Unit :– 5.1

Assessment of perceptual] memory skills and cognitive skills and readiness skills अवधारणात्मक, स्मृति कौशल और संज्ञानात्मक कौशल और तत्परता कौशल का आकलन

अवधारणात्मक कौशल का आकलन (Assessment of perceptual skill) :–

1. **दृश्य भेदभाव (Visual Discrimination)**:– व्यक्ति को एक चित्र या डिजाइन दिखाया जाता है और पृष्ठ के निचले भाग में मेल खाने वाले डिजाइन की पहचान करने के लिए कहा जाता है।
2. **विजुअल मेमोरी (Visual Memory)**:–व्यक्ति को 5 सेकंड के लिए एक चित्र या डिजाइन दिखाया जाता है, पेज को घुमाया जाता है, और बच्चे को नए पेज पर मैचिंग डिजाइन की पहचान करने के लिए कहा जाता है।
3. **स्थानिक संबंध (Spatial Relationships)**:– व्यक्ति को चित्रों या डिजाइनों की एक श्रृंखला दिखाई जाती है और जो अलग है उसे पहचानने के लिए कहा जाता है, उन्हें सलाह दी जाती है कि यह ''विस्तार से या डिजाइन के सभी या हिस्से के रोटेशन में भिन्न हो सकता है।
4. **फॉर्म कॉन्स्टेंसी (Form Constancy)**:–व्यक्ति को पृष्ठ पर एक चित्र या डिजाइन की पहचान करने के लिए कहा जाता है, यह बड़ा, छोटा या घुमाया जा सकता है।
5. **अनुक्रमिक मेमोरी (Sequential Memory)**:–व्यक्ति को 5 के लिए चित्रों या डिजाइनों की व्यवस्था दिखाई जाती है और फिर अगले पृष्ठ पर मिलान करने वाले डिजाइन की पहचान करने के लिए कहा जाता है। पूरे परीक्षण के दौरान व्यवस्था में मदों की संख्या बढ़ जाती है।
6. **फिगर–ग्राउंड (Figure&Ground)**:–व्यक्ति को अधिक जटिल आकार के भीतर एक छवि या डिजाइन की पहचान करने के लिए कहा जाता है।

स्मृति कौशल का आकलन (Assessment of memory skill)– मनोवैज्ञानिक अनुसंधान ने दिखाया है कि स्मृति एकात्मक निर्माण नहीं है। इसके बजाय, स्मृति में प्रक्रियाओं और क्षमताओं का एक समन्वित संग्रह होता है जो व्यक्तियों के दिन–प्रतिदिन के कामकाज को सक्षम करने के लिए एक साथ काम करते हैं। इसके अलावा, स्मृति का एक पहलू खराब हो सकता है जबकि दूसरा बरकरार रहता है। इस कारण से, मनोवैज्ञानिक स्मृति के आकलन के लिए किसी एक प्रक्रिया पर भरोसा नहीं करते हैं। कई मूल्यांकन उपाय मौजूद हैं, और आमतौर पर उपयोग की जाने वाली मूल्यांकन प्रक्रियाओं में कई उप–घटक होते हैं, जिनमें से प्रत्येक का उद्देश्य एक

Notes For Pyssum

विशेष प्रकार की स्मृति का आकलन करना होता है। विकासात्मक देरी के लक्षण प्रदर्शित करने वाले बच्चों को निम्नलिखित में से कुछ या सभी क्षेत्रों में पेशेवर, व्यापक मूल्यांकन से लाभ होगाः

• परिवार, प्रारंभिक विकास, स्वास्थ्य, भाषा, साक्षरता और शैक्षिक अनुभवों के बारे में पृष्ठभूमि की जानकारी। प्रारंभिक विकासात्मक मील के पत्थर का एक रिकॉर्ड सीखने की दर के बारे में जानकारी प्रदान करेगा, और उस उम्र पर ध्यान दिया जाना चाहिए जिस पर माता–पिता या शिक्षकों ने पहली बार ''समस्याएं'' देखीं।

• श्रवण और दृष्टि। कुछ शारीरिक कारण विकासात्मक देरी को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, एक श्रवण दोष भाषा अधिग्रहण में हस्तक्षेप कर सकता हैय एक दृष्टिबाधित बच्चा अपने पर्यावरण की उचित रूप से व्याख्या करने और उसके साथ बातचीत करने में असमर्थ हो सकता है।

• धारणा, स्मृति, भाषा, सोच कौशल और समस्या समाधान। इन कौशलों और योग्यताओं का आकलन विकास के सभी पहलुओं में विलंबित बच्चों और कुछ क्षेत्रों में धीमे प्रदर्शन करने वाले बच्चों के बीच अंतर करने में सहायता कर सकता है, जो अन्यथा अपने साथियों की तुलना में अच्छा या बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

•सुनने की समझ और अभिव्यंजक भाषा। माता–पिता, शिक्षकों और साथियों के साथ संवाद करते हुए बच्चे का अवलोकन एकल शब्दों, वाक्यों, प्रश्नों और लघु कथाओं को समझने की उसकी क्षमता को प्रदर्शित करता है। एक बच्चे को पहले सीखे गए शब्दों का उपयोग करने, संगठित तरीके से विचारों को व्यक्त करने, शब्दों को बनाने वाली ध्वनियों में हेरफेर करने और उपयुक्त के रूप में तुकबंदी वाले खेल खेलने में सक्षम होना चाहिए। औपचारिक परीक्षण से जुड़ी बाधाएं अवलोकन के दौरान कम स्पष्ट हो सकती हैं, जो एक बच्चा जो जानता है या जो व्यक्त कर सकता है, उसका अधिक खुलासा कर सकता है। यह अवलोकन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है क्योंकि अन्य प्रतीकात्मक139 प्रणालियाँ, जैसे पढ़ना, लिखना और गणित मुख्य रूप से मौखिक भाषा पर आधारित हैं।

• शब्दों, अक्षरों के नामों और चित्र नामों में ध्वनियों की जागरूकता और हेरफेर। ये जल्दी पढ़ने के अच्छे भविष्यवक्ता हैं।

• यांत्रिकी और प्रारंभिक सामग्री लेखन। लेखन प्रक्रिया के दौरान एक बच्चे की पेंसिल ग्रैस्प, ड्रॉइंग के नमूने, आविष्कृत वर्तनी, और ढोंग संदेश अधिक विवश औपचारिक परीक्षण के परिणामों को प्रभावी ढंग से पूरक कर सकते हैं।

• गणित। परीक्षण उपकरण एक बच्चे के मौखिक, दृश्य और संज्ञानात्मक कौशल का आकलन अंकों को पहचानने और मात्रात्मक और गुणात्मक विशेषताओं (अधिक, कम, बड़ा, समान, भिन्न) को समझने की उसकी क्षमता से करते हैं। अतिरिक्त अनौपचारिक अवलोकन भी मूल्यवान है।

• विचार(Reasoning)– एक बच्चे की वस्तुओं और विशेषताओं को छांटने, समूहबद्ध करने, वर्गीकृत करने, समस्याओं को हल करने और कारण और प्रभाव को समझने की क्षमता को विभिन्न कार्यों के प्रदर्शन और सावधानीपूर्वक अवलोकन द्वारा निर्धारित किया जा सकता है।

• सामाजिक और स्वयं सहायता कौशल और गैर–मौखिक संचार का उपयोग। बच्चों को कपड़ों के लेखों को सही क्रम में डालने, जूते बांधने, बटन बटन, विभिन्न गतिविधियों और मौसम की स्थिति के लिए उपयुक्त कपड़े चुनने और खुद को खिलाने की क्षमता प्रदर्शित करनी चाहिए। जैसे–जैसे खेल संवेदी अन्वेषण से अन्वेषण और प्रतिनिधित्वात्मक खेल के संयोजन की ओर बढ़ता है, एक बच्चे को बारी–बारी से सीखना चाहिए। बच्चे को ऐसे कार्यों को करते हुए देखना जिनके लिए सावधानीपूर्वक अवलोकन की आवश्यकता होती है और अन्य दृश्य–स्थानिक कौशल फायदेमंद हो सकते हैं।

• ध्यान(Attention)–छोटे बच्चों से निरंतर ध्यान की कमी और अति सक्रिय होने की उम्मीद की जा सकती है,

• परिपक्वता(Maturation) –माता–पिता बच्चे की खुद की और दूसरों की देखभाल करने की क्षमता के बारे में जानकारी प्रदान कर सकते हैं। इस जानकारी से, अवलोकन के साथ, एक बच्चे की सामान्य स्वतंत्रता का स्तर निर्धारित किया जा सकता है।

Notes For Pyssum

अंत में, नैदानिक परीक्षण की अवधि में बच्चे के सीखने की दर और शैली और समय के साथ और संदर्भों में उसके प्रदर्शन पर मूल्यवान डेटा प्रदान करके शिक्षा के लाभकारी रूपों में अंतर्दृष्टि प्रकट करनी चाहिए।

Unit :– 5 .2

Assessment of attention, listening and speaking skill ध्यान, सुनने और बोलने के कौशल का आकलन–किसी की ध्यान देने की क्षमता का परीक्षण करना जितना लगता है उससे कहीं अधिक जटिल है। **ध्यान चार प्रमुख घटकों से बना है:**

1. चयनात्मक ध्यानः विकर्षणों को अनदेखा करते हुए उत्तेजनाओं में भाग लेने की क्षमता

2. निरंतर ध्यानः समय की विस्तारित अवधि में ध्यान बनाए रखने की क्षमता

3. विभाजित ध्यान(divided attention) : एक साथ एक से अधिक कार्यों में भाग लेने की क्षमता

4. बारी–बारी से ध्यान (alternating attention) :– ध्यान खोए बिना एक कार्य से दूसरे कार्य पर ध्यान स्थानांतरित करने की क्षमता।

ध्यान के प्रत्येक पहलू को मापना सापेक्ष शक्तियों और कमजोरियों को इंगित करने में अत्यंत सहायक हो सकता है। परीक्षण पहचान की गई ध्यान समस्या से निपटने के तरीकों को भी इंगित कर सकते हैं। ध्यान, एकाग्रता और अति सक्रियता के संबंध में आवश्यकता के क्षेत्रों की सही पहचान करने के लाभों को व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों में देखा जा सकता है। लाभों में शामिल हैं:

- आत्मविश्वास में वृद्धि
- कम चिंता
- शिक्षा के क्षेत्र में अधिक प्रगति
- लक्षित समर्थन रणनीतियाँ

सीखने के माहौल में अनुकूलन के अलावा जरूरतों की व्यापक समझ के माध्यम से लाभों को देखा जा सकता है। भले ही कई छात्रों ने बुनियादी सुनने और बोलने के कौशल में महारत हासिल कर ली हो, लेकिन कुछ छात्र अपने मौखिक संचार में दूसरों की तुलना में बहुत अधिक प्रभावी होते हैं। और जो अधिक प्रभावी संचारक हैं वे स्कूल में और अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों में अधिक सफलता का अनुभव करते हैं। कौशल जो न्यूनतम और प्रभावी संचार के बीच अंतर कर सकते हैं उन्हें सिखाया, अभ्यास और सुधार किया जा सकता है।

बोलने के कौशल का आकलन करने के लिए दो विधियों का उपयोग किया जाता है। अवलोकनात्मक दृष्टिकोण में, छात्र के व्यवहार का अवलोकन किया जाता है और विनीत रूप से मूल्यांकन किया जाता है। संरचित दृष्टिकोण में, छात्र को एक या अधिक विशिष्ट मौखिक संचार कार्यों को करने के लिए कहा जाता है। उसके बाद कार्य पर उसके प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाता है। कार्य को एक–पर–एक सेटिंग में – परीक्षण व्यवस्थापक और एक छात्र के साथ – या समूह या कक्षा सेटिंग में प्रशासित किया जा सकता है। किसी भी सेटिंग में, छात्रों को यह महसूस करना चाहिए कि वे वास्तविक दर्शकों के लिए सार्थक सामग्री का संचार कर रहे हैं। कार्य उन विषयों पर केंद्रित होना चाहिए जिनके बारे में सभी छात्र आसानी से बात कर सकते हैं, या, यदि वे इस तरह के फोकस को शामिल नहीं करते हैं, तो छात्रों को विषय पर जानकारी एकत्र करने का अवसर दिया जाना चाहिए।

अवलोकन और संरचित दोनों दृष्टिकोण विभिन्न प्रकार की रेटिंग प्रणालियों का उपयोग करते हैं। एक समग्र रेटिंग छात्र के प्रदर्शन के सामान्य प्रभाव को पकड़ती है। एक प्राथमिक विशेषता स्कोर एक विशिष्ट संचार उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए छात्र की क्षमता का आकलन करता है – उदाहरण के लिए, श्रोता को एक निश्चित दृष्टिकोण अपनाने के लिए राजी करना। विश्लेषणात्मक पैमाने संचार के विभिन्न पहलुओं, जैसे वितरण, संगठन, सामग्री और भाषा पर छात्र के प्रदर्शन को पकड़ते हैं। रेटिंग सिस्टम एक पैमाने के साथ क्षमता की अलग–अलग डिग्री का वर्णन कर सकते हैं या किसी विशेषता की उपस्थिति या अनुपस्थिति का संकेत दे सकते हैं।

EXAM TRICKY
Notes For Pyssum
SPECIAL EDUCATION

किसी भी रेटिंग प्रणाली का एक प्रमुख पहलू मूल्यांकनकर्ता वस्तुनिष्ठता हैः क्या मूल्यांकनकर्ता समय–समय पर सभी छात्रों के लिए सही और लगातार स्कोरिंग मानदंड लागू कर रहा है? मूल्यांकनकर्ताओं की विश्वसनीयता उनके प्रशिक्षण के दौरान स्थापित की जानी चाहिए और मूल्यांकन के प्रशासन या स्कोरिंग के दौरान जाँच की जानी चाहिए। यदि रेटिंग मौके पर ही बनाई जाती है, तो कुछ व्यवस्थापनों के लिए दो रेटरों की आवश्यकता होगी। यदि बाद में स्कोरिंग के लिए रेटिंग दर्ज की जाती है, तो डबल स्कोरिंग की आवश्यकता होगी। सुनने के परीक्षण आम तौर पर पढ़ने की समझ के परीक्षण के समान होते हैं, सिवाय इसके कि छात्र इसे पढ़ने के बजाय एक पैसेज को सुनता है। छात्र तब बहुविकल्पीय प्रश्नों का उत्तर देता है जो शाब्दिक और अनुमानित समझ के विभिन्न स्तरों को संबोधित करते हैं। सभी श्रवण परीक्षणों में महत्वपूर्ण तत्व हैं (1) सुनने की उत्तेजना, (2) प्रश्न, और (3) परीक्षण का वातावरण।

सुनने की उत्तेजनाओं को विशिष्ट मौखिक भाषा का प्रतिनिधित्व करना चाहिए, और इसमें लिखित सामग्री के लिए डिजाइन किए गए अंशों का मौखिक वाचन शामिल नहीं होना चाहिए। सामग्री को उस भाषा का मॉडल बनाना चाहिए जिससे छात्रों से आमतौर पर कक्षा में, विभिन्न मीडिया में, या बातचीत में सुनने की उम्मीद की जा सकती है। चूंकि सुनने का प्रदर्शन प्रेरणा और स्मृति से काफी प्रभावित होता है, इसलिए मार्ग दिलचस्प और अपेक्षाकृत छोटे होने चाहिए। निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए, विषयों को सभी छात्रों के लिए समान अनुभव पर आधारित होना चाहिए, भले ही लिंग और भौगोलिक, सामाजिक आर्थिक, या नस्लीयध्जातीय पृष्ठभूमि कुछ भी हो।

प्रश्नों के संबंध में, बहुविकल्पीय मदों को मार्ग के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए – तुच्छ विवरण नहीं – और किसी विशेष डोमेन से कौशल को मापना चाहिए। सही के रूप में निर्दिष्ट उत्तर छात्र के पूर्व ज्ञान या अनुभव पर निर्भर किए बिना, पैसेज से लिए जाने चाहिए। प्रश्न और प्रतिक्रिया विकल्प बहुविकल्पीय प्रश्नों के लिए स्वीकृत साइकोमेट्रिक मानकों को पूरा करना चाहिए।

मूल्यांकन सुनने के लिए परीक्षण वातावरण बाहरी विकर्षणों से मुक्त होना चाहिए। यदि उत्तेजना टेप से प्रस्तुत की जाती है, तो ध्वनि की गुणवत्ता उत्कृष्ट होनी चाहिए। यदि एक परीक्षण प्रशासक द्वारा उत्तेजना प्रस्तुत की जाती है, तो सामग्री को उचित मात्रा और बोलने की दर के साथ स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

आलोचनात्मक रूप से सुनने और अपने आप को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से व्यक्त करने की क्षमता स्कूल में और बाद में जीवन में एक छात्र की सफलता में योगदान करती है। अपने छात्रों के बोलने और सुनने के संचार कौशल विकसित करने से संबंधित शिक्षकों को अपने छात्रों की प्रगति का आकलन करने के लिए विधियों की आवश्यकता होती है। इन तकनीकों में अवलोकन और पूछताछ से लेकर मानकीकृत परीक्षण तक शामिल हैं। हालांकि, यहां तक कि सबसे अनौपचारिक तरीकों को विश्वसनीयता, वैधता और निष्पक्षता के माप सिद्धांतों को अपनाना चाहिए। उपयोग की जाने वाली विधियाँ मूल्यांकन के उद्देश्य के लिए उपयुक्त होनी चाहिए और उपलब्ध सर्वोत्तम उपकरणों और प्रक्रियाओं का उपयोग करना चाहिए।

Notes For Byssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

Unit :– 5.3

Assessment of reading and writing skills पढ़ने और लिखने के कौशल का आकलन

Reading skills- पठन कौशल वे हैं जो पाठ को पढ़ने, सूचनाओं को संसाधित करने और अर्थ इकट्ठा करने के लिए आवश्यक हैं। अन्य सभी विषय क्षेत्रों के लिए पढ़ना वास्तव में आवश्यक है। कल्पना कीजिए कि आप आठवीं कक्षा के विज्ञान शिक्षक हैं। यदि आपके छात्र पाठ्यपुस्तक नहीं पढ़ पाते तो आप क्या करते? या पढ़ सकता था, लेकिन इसका कोई मतलब नहीं निकला? पढ़ना एक ऐसा कौशल है जो न केवल सभी विषय क्षेत्रों में, बल्कि लगभग सभी कार्यस्थलों में सार्वभौमिक रूप से उपयोग किया जाता है।

चूंकि पढ़ना विकसित करने के लिए एक बहुत ही आंतरिक कौशल है, इसलिए इसका आकलन करना मुश्किल हो सकता है। पठन कौशल के आकलन का समग्र उद्देश्य यह सत्यापित करना है कि छात्र विभिन्न प्रकार के पाठों को वैयक्तिकृत और व्याख्या करना सीख रहे हैं। आइए पठन कौशल का आकलन करने के लिए विचारों पर चर्चा करने के लिए एक नमूना सीखने के मानक, या उद्देश्य का उपयोग करें। एक लेखक या कवि के विचारों, दृष्टिकोण और विषयों के विकास को एक पाठ के माध्यम से ट्रेस करें और इन्हें पढ़े गए अन्य ग्रंथों से संबंधित करें।

यह मानक विषय पर केंद्रित है, जो कहानी का नैतिक या संदेश है। आप अवलोकन, समूह कार्य, रचनात्मक लेखन और बहुत कुछ सहित कई तरीकों का उपयोग करके विषय का आकलन कर सकते हैं। आप इन चरणों का पालन कर सकते हैंः

1. विषय को परिभाषित करने और साहित्य में उदाहरण खोजने के लिए कुछ निर्देशात्मक समय व्यतीत करें।

2. प्रत्येक छात्र का आकलन करें, जिसमें एक विषय से ज्यादा सीखा जा सकता है छात्रों को सीखने के लिए अलग–अलग विषय दें, जैसे चिरस्थायी सीखने में मदद करें।

3. छात्रों को उस विषय को साझा करने वाले साहित्य के अन्य टुकड़ों को खोजने के लिए पाठ्यपुस्तक, या अन्य संकलनों की खोज करनी चाहिए।

इस प्रकार के मूल्यांकन को किसी भी संख्या में पढ़ने के उद्देश्यों और मानकों के लिए संशोधित किया जा सकता है। मूल रूप से, आपके आकलनों को यह दिखाने की आवश्यकता है कि प्रत्येक छात्र विभिन्न पाठों को संसाधित कर रहा है और अर्थ प्राप्त कर रहा है।

लेखन (Writing) :–भाषा कला का दूसरा प्रमुख क्षेत्र लेखन है, जिसमें लिखित शब्द का उपयोग करके विचारों को व्यक्त करने के लिए आवश्यक कौशल शामिल हैं। इनमें व्याकरण, विराम चिह्न, वर्तनी और वाक्य संरचना शामिल हैं। पढ़ना, लिखना की तरह पाठ्यचर्या और कार्यस्थल में भी आवश्यक है। लेखन के लिए मूल्यांकन गुणवत्ता लेखन नमूने तैयार करने वाले छात्रों पर केंद्रित होना चाहिए। यहाँ एक नमूना लेखन मानक हैः उद्देश्य को प्राप्त करने और समग्र प्रभाव में योगदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के सरल और जटिल वाक्यों के नियंत्रित उपयोग का प्रदर्शन करें।

इस उद्देश्य से आप अपने विद्यार्थियों का आकलन करने के लिए कई तरह की गतिविधियाँ कर सकते हैं। मान लें कि आपके छात्रों ने सरल और जटिल वाक्यों की मूल बातें सीख ली हैं। अब आपको यह आकलन करना है कि क्या आपके छात्र अपने लेखन में दोनों प्रकारों का उपयोग कर सकते हैं। एक गतिविधि एक प्रसिद्ध भाषण का विश्लेषण हो सकती है। क्या छात्र सरल और जटिल वाक्यों की पहचान करते हैं और समझाते हैं कि लेखक ने उनका उपयोग क्यों किया। इस चरण का आकलन करने के लिए आप अवलोकन या समूह कार्य का उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा, विश्लेषण के बाद, छात्रों को एक अलग विषय पर अपने भाषण लिखने के लिए कहें, लेकिन मूल भाषण की संरचना की नकल करें। यह आपको यह आकलन करने की अनुमति देगा कि क्या छात्र अपने लेखन में सरल और जटिल वाक्यों का उपयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा बनाए गए सभी आकलनों में छात्रों को अपने लेखन में एक विशिष्ट लेखन अवधारणा का उपयोग करना शामिल होना चाहिए।

एक शिक्षक की पहली जिम्मेदारी लिखने का प्रयास करने वाले छात्रों के लिए लेखन और प्रोत्साहन के अवसर प्रदान करना है। एक शिक्षक की दूसरी जिम्मेदारी छात्रों की लेखन में सफलता को बढ़ावा देना है। शिक्षक यह ताकत और कमजोरियों का आकलन करने के लिए छात्रों के लेखन की सावधानीपूर्वक निगरानी करके, छात्र की जरूरतों के जवाब में विशिष्ट कौशल और रणनीतियों को पढ़ाने और सावधानीपूर्वक प्रतिक्रिया देने से करता है जो नए सीखे गए कौशल को मजबूत करेगा और आवर्ती समस्याओं को ठीक करेगा। निरीक्षण के बाद इन जिम्मेदारियों से पता चलता है कि मूल्यांकन स्पष्ट रूप से अच्छे निर्देश का एक अभिन्न अंग है। प्रभावी निर्देश पर मौजूदा शोध की अपनी समीक्षा में क्रिस्टेंसन, यसेलडाइके, और थुरलो (1989) ने पाया कि, अन्य कारकों के अलावा, निम्नलिखित स्थितियों का विद्यार्थियों की उपलब्धि से सकारात्मक संबंध था ।

शिक्षकों को छात्र के पूर्व ज्ञान और कौशल के वर्तमान स्तर का आकलन करना चाहिए ताकि उन्हें एक ऐसे कार्य के लिए मिलान किया जा सके जो उनकी योग्यता के लिए प्रासंगिक और उपयुक्त हो।जिस डिग्री तक शिक्षक सक्रिय रूप से छात्रों की समझ और प्रगति की निगरानी करता है वह डिग्री जिसके लिए छात्र के प्रदर्शन का मूल्यांकन अक्सर और उचित रूप से किया जाता है ।

इसलिए, आकलन प्रभावी निर्देश का एक अनिवार्य घटक है। ऐरेशियन (1996) ने तीन प्रकार के कक्षा निर्धारणों की पहचान की। पहले उन्होंने ''साइजिंग–अप'' आकलन कहा, जो आमतौर पर स्कूल के पहले सप्ताह के दौरान शिक्षक को छात्रों के बारे में त्वरित जानकारी प्रदान करने के लिए किया जाता था, जब उनका निर्देश शुरू होता था। दूसरे प्रकार, निर्देशात्मक आकलन, का उपयोग निर्देश की योजना बनाने, प्रतिक्रिया देने और छात्र की प्रगति की निगरानी के दैनिक कार्यों के लिए किया जाता है।

तीसरे प्रकार को उन्होंने आधिकारिक आकलन के रूप में संदर्भित किया, जो समूहीकरण, ग्रेडिंग और रिपोर्टिंग के लिए मूल्यांकन के आवधिक औपचारिक कार्य हैं। दूसरे शब्दों में, शिक्षक मूल्यांकन का उपयोग ताकत और कमजोरियों की पहचान करने, निदान की जरूरतों को पूरा करने के लिए योजना निर्देश, निर्देशात्मक गतिविधियों का मूल्यांकन करने, प्रतिक्रिया देने, प्रदर्शन की निगरानी करने और प्रगति की रिपोर्ट करने के लिए करते हैं। लिखित अभिव्यक्ति के आकलन की सरल पाठ्यचर्या आधारित पद्धति इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति कर सकती है।

Unit :–5.4

Assessment of math skills – computation and application गणित कौशल का आकलन – गणना और अनुप्रयोग

Computation skills :–गणितीय समस्याओं के समाधान की गणना करने के लिए अंकगणितीय संचालन का चयन और अनुप्रयोग है।अंकगणित में गणितीय प्रक्रियाओं का एक सेट शामिल है जिसमें संख्या की समझ, गणितीय सिद्धांतों की समझ जैसे कि सहयोगी और कम्यूटेटिव गुण और कम्प्यूटेशनल कौशल शामिल हैं। विशेष रूप से, कम्प्यूटेशनल कौशल को मानसिक विधियों, कागज और पेंसिल, और कैलकुलेटर जैसे अन्य उपकरणों का उपयोग करके बुनियादी जोड़, घटाव, गुणा और विभाजन की समस्याओं की गणना करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है। इसके लिए उपयुक्त अंकगणितीय संक्रिया के चयन की आवश्यकता होती है। साथ ही, कम्प्यूटेशनल कौशल के लिए समाधान की गणना करने के लिए चरणों के निष्पादन की आवश्यकता होती है।गणितीय समझ का आकलन किंडरगार्टन और प्रथम श्रेणी के छात्रों के लिए गणित के आकलन का एक सेट है जो समय के साथ छात्रों की प्रगति और गहन नैदानिक जानकारी दोनों के बारे में संचयी डेटा प्रदान करता है।

गणित के लिए कॉमन कोर स्टेट स्टैंडर्ड्स के साथ संरेखित :–इसका उद्देश्य शिक्षकों को छात्र प्रगति को ट्रैक करने, विशेष कठिनाइयों की पहचान करने और आमतौर पर निर्देशात्मक योजना को सूचित करने में मदद करने के लिए एक उपकरण के रूप में है।

गणितीय समझ का आकलन करने के लक्ष्य(Goals of Assessing Mathematical Understanding)

- व्यक्तिगत छात्र जरूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने के लिए
- छात्र सीखने के आसपास शिक्षक सहयोग की सुविधा के लिए।
- गणित में छात्रों के सीखने को बढ़ावा देने के लिए

विशेषताएँ (Feature)

- व्यक्तिगत मूल्यांकन साक्षात्कार शिक्षक या अन्य योग्य स्टाफ सदस्य द्वारा स्कूल वर्ष के दौरान दो से तीन बार आयोजित किए जाते हैं। छात्र रिकॉर्ड उस अवधि के दौरान गणितीय प्रगति की एक संचयी रिपोर्ट प्रदान करता है।
- एक–पर–एक साक्षात्कार संरचना शिक्षक को छात्र ज्ञान के बारे में समृद्ध डेटा एकत्र करने की अनुमति देती है जो छात्र द्वारा दिए गए उत्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें छात्र द्वारा उपयोग की जाने वाली रणनीतियों और स्पष्टीकरणों का अवलोकन भी शामिल है।
- नैदानिक मूल्यांकन शिक्षक को एक विशेष अवधारणा क्षेत्र में एक छात्र की ताकत, कमजोरियों, ज्ञान और कौशल का पता लगाने की अनुमति देता है।
- प्रत्येक ग्रेड–स्तरीय मूल्यांकन की सामग्री गणित के लिए सामान्य कोर राज्य मानकों के अनुरूप है।

मूल्यांकन उपकरण और तकनीकों का उपयोग करना जो छात्र की सोच को दर्शाता है, की आवश्यकता हैः

- यह समझना कि विभिन्न छात्र प्रतिक्रियाओं का क्या अर्थ हो सकता है ।
- पहचान की गई सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यावहारिक विचार।

Notes For Byssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

- विद्यालय आधारित आकलन भी शिक्षार्थी की स्पष्ट तस्वीर बनाने में योगदान दे सकता है। गणित और संख्यात्मकता में मूल्यांकन के उदाहरणों में शामिल हैं:
- प्रतिक्रिया और प्रतिबिंब (feedback and reflection)
- छात्र स्व–मूल्यांकन (student self & assessment)
- छात्र पोर्टफोलियो (student portfolio)
- मान्य उपकरण (validated tools)
- उपाख्यानात्मक सबूत (anecdotal evidence)
- शिक्षक द्वारा संचालित छात्र मूल्यांकन कार्य (teacher moderated student assessment tasks)
- छात्र आत्मचिंतन, रुचियां और सर्वेक्षण।(student self&reflections, interests and surveys)

Unit-5.5

Assessment using various tools (e-g-, First Screen, Behaviour Checklist for Screening students with SLD (BCSLD), Grade Level Assessment Device for Children with Learning Problems in Schools (GLAD), Diagnostic Test of Reading Disorders (DTRD),Diagnostic Test of Learning Disability (DTLD). Documentation of assessment,interpretation and report writing, DALI)

Notes For Pyssum

फर्स्ट स्क्रीन(First Screen) :– स्पेसिफिक लर्निंग डिसेबिलिटीज (एसएलडी) के लिए अपनी तरह का पहला स्क्रीनिंग ऐप – 'फर्स्ट स्क्रीन' एक शहर स्थित एनजीओ द्वारा विकसित किया गया है। फाउंडेशन विशेष शिक्षा आवश्यकताओं वाले बच्चों, विशेष रूप से भारत में विशिष्ट सीखने की अक्षमता वाले बच्चों को उपचारात्मक हस्तक्षेप प्रदान करता है और चंडीगढ़, हरियाणा और पंजाब क्षेत्रों में भी संचालित होता है। ऑर्किड्स फाउंडेशन के संस्थापक, डॉ. गीत ओबेरॉय ने कहा, ''ऐप का उद्देश्य उन बच्चों की शुरुआती पहचान करना है जो एसएलडी (विशिष्ट सीखने की अक्षमता) विकसित करने के जोखिम में हो सकते हैं। यह 8 साल में निदान की औपचारिक उम्र से पहले प्रारंभिक हस्तक्षेप की भी अनुमति देता है। . यह एक निःशुल्क एंड्रॉइड ऐप है, जो हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध है।'' 'फर्स्ट स्क्रीन' ऐप में नौ प्रमुख डोमेन शामिल हैंय पढ़ना और वर्तनी, लिखित अभिव्यक्ति, मौखिक भाषा, मोटर कौशल, ध्यान, सामाजिक कौशल, गणित, कार्यकारी कार्य और स्मृति। ऐप में 3–बिंदु उत्तरों के साथ 90 स्कोरिंग आइटम का परीक्षण शामिल है हाँ, शायद, नहीं।

परीक्षण को पूरा करने में 20–25 मिनट लगते हैं जिसके बाद भविष्य के लिए संभावित सिफारिशों के साथ दृश्य प्रतिक्रिया (पाठ के विपरीत) दी जाती है। और सटीकता के उद्देश्यों के लिए, परीक्षण माता–पिता या शिक्षक द्वारा भरा जाना चाहिए, जो बच्चे को कम से कम 6 महीने से जानता हो।

डॉ. गीत ओबेरॉय ने रेखांकित किया, ''विकलांग व्यक्तियों के अधिकार' अधिनियम 2016 के तहत विभिन्न विकलांगताओं के आकलन के लिए दिशानिर्देश, अधिसूचना 'सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय' (एमएसजेई) में 8 साल में बच्चों के लिए स्क्रीनिंग टेस्ट का उल्लेख है। , कक्षा 3 एसएलडी वाले बच्चों की पहचान में सहायता के लिए। हालांकि, अभी तक ऐसा कोई स्क्रीनिंग टेस्ट ऐप उपलब्ध नहीं है। और इस कमी को 'फर्स्ट स्क्रीन' ऐप द्वारा संबोधित किया जा सकता है।''

डॉ. गीत ओबेरॉय ने रेखांकित किया कि 2016 से एसएलडी को विकलांग व्यक्तियों के अधिकार (आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम) में शामिल किया गया है, इसलिए बच्चोंध्व्यक्तियों के लिए सभी प्रावधान समान रूप से उनके लिए भी सुलभ हैं। विशिष्ट शिक्षण विकार (एसएलडी) 3: से 10: बच्चों को प्रभावित करने वाले सबसे आम न्यूरोडेवलपमेंटल विकारों में से एक है।

इसके अतिरिक्त, एसएलडी और संबंधित क्षेत्रों में जागरूकता और पेशेवर प्रशिक्षण का स्तर लगभग नगण्य है, खासकर टियर 2 और टियर 3 शहरों में। आरपीडब्ल्यूडी एक्ट 2016 में ''चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड्स (सीडब्ल्यूएसएन) के लिए दिशा–निर्देश दिए गए हैं कि 8 साल की उम्र से पहले किसी भी बच्चे का निदान नहीं किया जा सकता है। डॉ गीत ने कहा, ''चूंकि बच्चों के लिए स्कूल में प्रवेश करने की आदर्श उम्र 3 साल है, यह एक ऐसा अवसर है जो बच्चों को सीखने में आवश्यक मील के पत्थर तक

समायोजित करने और आने के लिए एक बफर देता है। हालांकि, जोखिम में हो सकने वाले बच्चों के मामले में समय पर हस्तक्षेप की कमी उन्हें खोने के अंत में डाल देती है क्योंकि इन 5 वर्षों में उनके मुद्दों की पहचान नहीं की जाती है। जब तक वे 8 साल के हो जाते हैं, तब तक वे अपने साथियों की तुलना में सीखने के अंतर का सामना करते हैं।'' वह निष्कर्ष निकालती है, ''इसलिए, एक स्क्रीनिंग टूल जो नैदानिक नहीं है और इस प्रकार लेबल नहीं करता है, लेकिन केवल उन बच्चों की पहचान करने के लिए स्क्रीन करता है जो शायद 'जोखिम में' हैं। समय की आवश्यकता है। 'फर्स्ट स्क्रीन' यह सुनिश्चित करेगी कि इन मूल्यवान 5 वर्षों का उपयोग प्रशिक्षण के संदर्भ में अतिरिक्त सहायता प्रदान करके और बच्चों को उनके सीखने की अवस्था में मदद करने के लिए संसाधन प्रदान करके किया जा सकता है।''

एसएलडी (बीसीएसएलडी) वाले छात्रों की स्क्रीनिंग के लिए व्यवहार चेकलिस्ट(Behaviour Checklist for Screening students with SLD (BCSLD)– यह एक स्क्रीनिंग टूल है जो बच्चे में सीखने की अक्षमता के आकलन और निर्धारण के लिए अन्य नैदानिक उपकरणों के उपयोग की वकालत करता है। शिक्षक द्वारा भरे जाने वाले चेकलिस्ट में सकारात्मक और नकारात्मक 30 आइटम शामिल हैं। इसमें आठ क्षेत्रों को शामिल किया गया है, प्रत्येक एक विशेष क्षमता में कमी का प्रतिनिधित्व करता है, और हमें मानसिक बनावट में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, बच्चे की कम उपलब्धि के कारण को समझाने का प्रयास करता है। इसे 8–11 वर्ष की आयु के 1000 बच्चों पर मानकीकृत किया गया है। 300 शिक्षकों ने भी नमूना गठित किया।

विद्यालयों में अधिगम समस्या वाले बच्चों के लिए स्तर आधारित आकलन उपकरण (Grade Level Assessment Device & GLAD for children having learning problems in primary schools)

- इस उपकरण का विकास डा . जयंती नारायण , राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान , सिकंदराबाद द्वारा किया गया है ।
- इस उपकरण के द्वारा कक्षा 1 से 4 तक के अधिगम समस्याग्रस्त बच्चों का आकलन किया जा सकता है ।

इसके दो भाग है– भाग अ और भाग ब ।

भाग अ –

- इसमें कक्षा 1 से 4 तक के विद्यार्थियों के आकलन के लिए शैक्षणिक क्रियाएँ दी गई है ।
- अंग्रेजी , हिन्दी तथा गणित विषय को इसमें शामिल किया गया है ।
- सभी क्रियाएँ सरल से जटिल के क्रम में व्यवस्थित है ।
- प्राप्त निष्कर्षो को अंक प्रदान करने की व्यवस्था की गई है ।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

भाग ब– यह स्तर आधारित आकलन सूची (ळतंकम स्मअमस ेमेउमदज ैबीमकनसम) है । इसमे तीन खण्ड :

खण्ड 1– इसमें सामाजिक पृष्ठभूमि विवरण लिखना है जिसमें बच्चे का नाम , आयु , लिंग , पता , कक्षा , विद्यालय , परिवार , सामाजिक – आर्थिक स्थिति , अभिभावक की शिक्षा , परिवार में किसी अन्य व्यक्ति की समान समस्या का विवरण , कक्षा पुनरावृत्ति तथा विद्यालय की पिछली तीन परीक्षाओं के परिणामों को अभिलेखित करने की व्यवस्था है ।

खण्ड 2– इसमें बच्चे की शारीरिक विकलांगता , दृष्टि अक्षमता , श्रवण क्षमता , लेटरलिटी , वाणी , संतुलन तथा समंवय संबंधी सूचनाएँ लिखने का प्रावधान है ।त्र

खण्ड 3– अमौखिक पठन , मौखिक पठन , लेखन , गणितीय कौशल , तथा अवांछनीय व्यवहार को दर्शाया जाता है ।

अंत में एक सारांश अभिलेख लिखने के लिए प्रपत्र दिया गया है ।

पठन विकारों का निदानात्मक परीक्षण (DTRD) Diagnostic Test of Reading Disorder –अवधारणात्मक और संज्ञानात्मक घाटे, जिन्हें पढ़ने, लिखने की समस्याओं के लिए अंतर्निहित कारण माना जाता है, विकलांग सीखने में, पढ़ने के विकारों के नैदानिक परीक्षण के विकास के लिए आधार प्रदान करता है। परीक्षण प्रक्रिया की कमी की पहचान करता है और उसका निदान करता है जो

पढ़ने की प्रवाह और सटीकता दोनों में विकार पैदा करता है। यह एक व्यक्तिगत रूप से प्रशासित उपकरण है। प्रत्येक बच्चे को स्तर I और स्तर II दोनों परीक्षणों को प्रशासित किया जाना है। इसे 8–11 वर्ष की आयु सीमा में 1100 स्कूल जाने वाले लड़कों और लड़कियों के नमूने पर मानकीकृत किया गया था। यह एक गैर–समय की परीक्षा है।

लर्निंग डिसेबिलिटी का डायग्नोस्टिक टेस्ट Diagnostic Test of Learning Disability(DTLD)– DTLD के लेखक स्मृति स्वरूप और धर्मिष्ठा मेहता हैं। परीक्षण दस क्षेत्रों में सीखने की अक्षमता का निदान करता है–श्रवणध्दृश्य धारणा से संज्ञानात्मक क्षेत्रों तक। इसमें 10 उप–परीक्षण होते हैं। इसे व्यक्तिगत रूप से 8– 11 वर्ष की आयु समूह पर प्रशासित किया जाना है। किसी भी क्षेत्र या क्षेत्र में कमी या किसी के संयोजन से सीखने की समस्या हो सकती है। आई–हैंड को–ऑर्डिनेशन, फिगर ग्राउंड परसेप्शन, फिगर कॉन्स्टेंसी, पोजिशन–इन–स्पेस, स्थानिक संबंध, श्रवण धारणा, मेमोरी, संज्ञानात्मक क्षमताएं, ग्रहणशील भाषा, अभिव्यंजक भाषा। यह सीखने की कठिनाई और अन्य क्षेत्रों जैसे भाषा, स्थानिक संबंध, आँख हाथ समन्वय आदि का निदान करने के लिए परीक्षण है। यह परीक्षण 6 से 14 वर्ष की आयु तक होता है।

भारत की भाषाओं के लिए डिस्लेक्सिया आकलन Dyslexia Assessment for Languages of India (DALI) –DALI दक्षिण एशियाई भाषाओं में राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र, भारत द्वारा बनाया गया एक मूल्यांकन उपकरण है।डिस्लेक्सिक बच्चों की जांच के लिए अधिकांश उपकरण अंग्रेजी में उपलब्ध हैं। जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, यह काफी समस्याग्रस्त और सांस्कृतिक रूप से अनुपयुक्त हो सकता है।DALI दक्षिण एशियाई भाषाओं में राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र, भारत द्वारा बनाया गया एक मूल्यांकन उपकरण है।स्कूली शिक्षकों के लिए उपकरण और डिस्लेक्सिया की पहचान करने के लिए भारतीय भाषाओं में मनोवैज्ञानिकों के लिए मूल्यांकन उपकरण शामिल हैं। पहली बार, भारत में स्वदेशी रूप से विकसित स्क्रीनिंग और मूल्यांकन उपकरण होंगे जिन्हें लगभग 4840 बच्चों की बड़ी आबादी में मानकीकृत और मान्य किया गया है।

उपकरण हिंदी, मराठी, कन्नड़ और अंग्रेजी में उपलब्ध हैं और अन्य भाषाओं में विकास प्रक्रिया में है। व।स्प में डिस्लेक्सिया (स्कूल के शिक्षकों के लिए) के लिए दो स्क्रीनिंग टूल हैं, अर्थात् श्रैज (जूनियर स्क्रीनिंग टूल) कक्षाओं (1–2) के लिए और डैज (मिडिल स्क्रीनिंग टूल) कक्षाओं (3–5) के लिए चार भाषाओं, हिंदी, मराठी में , कन्नड़ और अंग्रेजी। इसमें मनोवैज्ञानिकों द्वारा उपयोग की जाने वाली आठ मानकीकृत और मान्य मूल्यांकन बैटरी भी शामिल हैं। इसे आगे 4 और दक्षिण एशियाई भाषाओं में उपलब्ध कराया जा रहा है।

DALI पहली स्क्रीनिंग और मूल्यांकन डिस्लेक्सिया भाषा है। व।स्प को राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र में विकसित किया गया है और इस अध्ययन को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा समर्थित किया गया था। लगभग 6 में से 1 बच्चे को पढ़ने में समस्या होती है। डिस्लेक्सिया एक छिपी हुई सीखने की अक्षमता है जिसमें बच्चे नियमित कक्षा की सेटिंग में पढ़ने के कौशल को प्राप्त करने में विफल होते हैं। डिस्लेक्सिया का एक जैविक आधार होता है और यह ब्रेन वायरिंग में अंतर के कारण होता है।

भारत में बच्चे स्कूल में कम से कम 2 भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह आवश्यक है कि डिस्लेक्सिया का मूल्यांकन उन सभी भाषाओं में किया जाए जिनसे बच्चा प्रभावित होता है। भारत, डिस्लेक्सिया का निदान क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में मानकीकृत, मान्य मूल्यांकन उपकरणों के अभाव के कारण अधूरा है।

DALI (भारत की भाषाओं के लिए डिस्लेक्सिया आकलन) में डिस्लेक्सिया की पहचान करने के लिए शिक्षकों और मूल्यांकन उपकरण मनोवैज्ञानिकों के लिए स्कूल के लिए स्क्रीनिंग टूल शामिल हैं। उपकरण वर्तमान में नीचे दिए गए विवरण के अनुसार चार भाषाओं में उपलब्ध हैं। अन्य भाषाओं में विस्तार प्रक्रिया में है।

यह टूल कक्षा 1 से 5 तक (पांच से 10 वर्ष) के बच्चों को छह श्रेणियों में प्रदर्शित करता है। ये पढ़ना, लिखना, गणित, संचार, स्मृति और मोटर समन्वय हैं। शोध से पता चलता है कि बच्चों को उन सभी भाषाओं में दिखाया जाना चाहिए जिनमें उन्हें पढ़ाया जाता है, इसलिए उपकरण को एक भाषा शिक्षक और कक्षा शिक्षक द्वारा प्रशासित किया जाना चाहिए।

डॉ सिंह कहते हैं कि एक बच्चे की सकारात्मक जांच के बाद एक विस्तृत मूल्यांकन किया जाता है। ''माता–पिता से कहा जाता है कि वे नियमित रूप से आंख और सुनने की जांच के साथ इसका पालन करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई संवेदी समस्या नहीं है।''

इसके बाद एक औपचारिक मूल्यांकन किया जाता है, जिसके परिणाम के आधार पर बच्चे के लिए एक व्यक्तिगत हस्तक्षेप योजना तैयार की जाती है। फिर एक विशेष शिक्षक को बच्चे को सीखने के अंतराल को पाटने में मदद करने के लिए नियुक्त किया जाता है, और रिपोर्ट में बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं को उजागर किया जाता है। इन आवासों के लिए स्कूल द्वारा प्रदान किए जाने की उम्मीद है।

ओबेरॉय कहते हैं, दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले 30,000 बच्चों के बीच व।स्प का इस्तेमाल किया गया और सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली ''विशेषकर उन शिक्षकों के साथ जो कुछ कम उपलब्धि हासिल करने वालों को समझने में असमर्थ थे।'' ''शुरुआती हस्तक्षेप की सुविधा है और समय पर इनपुट के साथ बच्चों को मुख्य धारा में लाने की संभावना काफी बढ़ गई है।''

ऐप को कई क्षेत्रीय भाषाओं में लॉन्च करके, इसका उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को इसे एक्सेस करने में सक्षम बनाना है। विशेष शिक्षकों का कहना है कि एक स्वागत योग्य कदम।

मुंबई में उम्मीद चाइल्ड डेवलपमेंट सेंटर की सीनियर स्पेशल एजुकेटर और प्रोग्राम मैनेजर–स्कूल आउटरीच, जोयिता दत्ता कहती हैं, ''एक क्षेत्रीय भाषा स्क्रीनिंग ऐप से फर्क पड़ता है''। ''बहुत से बच्चे अपनी मातृभाषा के साथ अधिक सहज होते हैं। कई पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी अंग्रेजी सीख रहे हैं और उनके स्तर का आकलन करना कठिन हो जाता है। मूल भाषा में एक मूल्यांकन उपकरण जल्दी हस्तक्षेप करने में मदद करेगा। एलडी सभी भाषाओं में होता है और यदि कोई बच्चा एक निश्चित भाषा में संघर्ष कर रहा है यह आपको घर पर बोली जाने वाली भाषा में परीक्षण का विकल्प देता है''। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी बच्चे सशक्त हों, व।स्प को पूरे भारत के स्कूलों में ले जाना होगा, डॉ ओबेरॉय बताते हैं। ''सभी स्कूलों में बच्चों की स्क्रीनिंग अनिवार्य करने की आवश्यकता है। इसे स्कूल के अधिकारियों पर छोड़ देने से अधिक परिणाम नहीं होता है।''

मूल्यांकन, व्याख्या और रिपोर्ट लेखन का दस्तावेजीकरण (Documentation of assessment, interpretation and report writing) – विभाग के लिए एक मूल्यांकन योजना का मूल्य उस साक्ष्य में निहित है जो यह समग्र विभाग या कार्यक्रम की ताकत और कमजोरियों के बारे में प्रस्तुत करता है, और साक्ष्य में यह परिवर्तन के लिए प्रदान करता है (राइट, 1991)। आपके सभी कार्यों से वास्तविक मूल्य प्राप्त करने में महत्वपूर्ण कारक प्रभावी विश्लेषण और व्याख्या प्रथाओं का उपयोग करके आपके द्वारा एकत्र की गई जानकारी का अधिकतम लाभ उठाना है।

<u>आकलन जानकारी का विश्लेषण और व्याख्या करने के सर्वोत्तम तरीके</u>

- कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों के संबंध में डेटा प्रस्तुत करें।
- मूल्यांकन लक्ष्यों और ड्राइविंग प्रश्नों की एक अच्छी तरह से संतुलित तस्वीर पेश करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक तरीकों का प्रयोग करें।
- पहचान किए गए दर्शकों (प्रत्यायकर्ताओं, परिसर रिपोर्ट आदि) के अनुसार अपने विश्लेषण और रिपोर्टिंग प्रक्रियाओं में बदलाव करें ।
- डेटा के विश्लेषण के आधार पर सिफारिशें विकसित करें और एक रूपरेखा के रूप में पहचाने गए लक्ष्यों का उपयोग करें जिसके भीतर सुझाए गए परिवर्तनों को पूरा किया जा सके ।

इस बात पर विचार करें कि आपके निष्कर्ष निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने में आपकी किस हद तक मदद कर सकते हैं:

- डेटा छात्रों की विषय वस्तु, शोध कौशल या लेखन में महारत के बारे में क्या कहता है?
- बेंचमार्क अपेक्षाओं को पूरा करने के बारे में यह क्या कहता है?
- डेटा आपके छात्रों के करियर में अगला कदम उठाने की तैयारी के बारे में क्या कहता है?
- क्या आपके कार्यक्रम के स्नातकों को अच्छी नौकरी मिल रही है, जिन्हें प्रतिष्ठित स्नातक स्कूलों में स्वीकार किया जाता है?
- क्या ऐसे क्षेत्र हैं जहां आपके छात्र उत्कृष्ट हैं?
- क्या आप किसी विशेष कौशल, जैसे अनुसंधान या आलोचनात्मक सोच कौशल में कमजोरी देखते हैं?

ये संकाय, प्रशासकों, छात्रों और बाहरी दर्शकों के लिए समान रूप से सम्मोहक प्रश्न हैं। यदि आपकी मूल्यांकन जानकारी इन मुद्दों पर प्रकाश डाल सकती है, तो आपके प्रयासों का मूल्य और अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

याद रखें कि मूल रूप से इच्छित और सहमत होने के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाने पर डेटा अक्सर भ्रामक और यहां तक कि धमकी भरा हो सकता है। उदाहरण के लिए, कैपस्टोन पाठ्यक्रम में छात्र के प्रदर्शन के आकलन से एकत्र किए गए डेटा का उपयोग ''छात्रों के पूरे अनुभव में प्रमुख'' छात्र सीखने में ताकत और कमजोरियों के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए किया जाना चाहिए। इस तरह, डेटा पाठ्यचर्या संशोधनों और विभागीय शैक्षणिक रणनीतियों का मार्गदर्शन कर सकता है। कैपस्टोन पाठ्यक्रम प्रशिक्षक के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए डेटा का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

प्रभावी मूल्यांकन योजनाएँ और रिपोर्ट तैयार करना सबसे बुनियादी रूप में, आपकी रिपोर्ट में पाँच बुनियादी सवालों के जवाब देने के लिए पर्याप्त जानकारी होनी चाहिएः

- आपने क्या किया?
- तुमने ऐसा क्यों किया?
- आपको क्या मिला?
- आप इसका उपयोग कैसे करेंगे?
- आकलन का आपका मूल्यांकन क्या है?

मूल्यांकन योजनाओं और रिपोर्टों का प्रारूप (Format of the Assessment Plans and Report)–एक व्यापक कार्यक्रम मूल्यांकन योजना और रिपोर्ट प्रमुख परिणामों पर विभागों के लिए एक प्रस्तुति के रूप में सरल हो सकती है या यह कार्यक्रम में सीखने के परिणामों के आकलन पर प्रोवोस्ट को एक विस्तृत रिपोर्ट हो सकती है। वास्तविकता यह है कि मूल्यांकन में संलग्न होने के लिए किसी कार्यक्रम का केवल एक ही उद्देश्य होता है। इसलिए, आप ऐसी रिपोर्ट विकसित करना चाह सकते हैं जो विशेष रूप से उन दर्शकों के लिए तैयार की गई हैं जिन्हें आपको संबोधित करने की आवश्यकता है।

औपचारिक रिपोर्ट (Formal Report) – यदि आपने औपचारिक मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने का निर्णय लिया है, तो आपकी रिपोर्ट को प्रत्येक पहचाने गए श्रोता को संबोधित करना चाहिए और इसमें निम्नलिखित में से कुछ या सभी शामिल हो सकते हैंः

- मूल्यांकन गतिविधि क्यों की गई, इसका संक्षिप्त विवरण
- प्रमुख, लक्ष्यों, उद्देश्यों और इच्छित शिक्षण परिणामों का संक्षिप्त विवरण
- विश्लेषण कैसे किया गया और किस पद्धति का उपयोग किया गया, इसकी व्याख्या
- प्रमुख निष्कर्षों की एक प्रस्तुति
- कार्यक्रम में सुधार के लिए परिणामों का उपयोग कैसे किया जा रहा है, इसकी चर्चा
- अगले चरणों की रूपरेखा (प्रोग्रामेटिक, पाठ्यचर्या और मूल्यांकन–संबंधी)

एक परिशिष्ट जिसमें एक पाठ्यक्रम विश्लेषण मैट्रिक्स, प्रासंगिक असाइनमेंट और परिणाम, डेटा संग्रह विधियां, और अन्य जानकारी या सामग्री उपयुक्त के रूप में शामिल हैं

आकलन रिपोर्ट के प्रभावी होने के लिए जरूरी नहीं कि टेक्स्ट और ग्राफ के पेज और पेज हों। आप एक रिपोर्ट तैयार करना चुन सकते हैं जो आपके मूल्यांकन कार्यक्रम के परिणामों को संक्षेप में और संक्षिप्त रूप से रेखांकित करती है। मुख्य बिंदुओं और महत्वपूर्ण परिणामों को हाइलाइट करके, आप एक संक्षिप्त तरीके से बता सकते हैं कि आप क्या हासिल करने की कोशिश कर रहे थे, आपने क्या किया और क्या नहीं किया, और परिणामस्वरूप आप कौन से परिवर्तन लागू करेंगे।

Notes For Physium
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION